

# नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिको तुलनात्मक अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत  
नेपाली केन्द्रीय विभागको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौँ  
पत्रको प्रयोजनका निम्ति  
प्रस्तुत

## शोधपत्र

शोधार्थी  
डिल्लीराज खतिवडा  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
कीर्तिपुर, काठमाडौँ  
२०६५

# नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिको तुलनात्मक अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत  
नेपाली केन्द्रीय विभागको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौँ  
पत्रको प्रयोजनका निम्ति  
प्रस्तुत

## शोधपत्र

शोधार्थी  
डिल्लीराज खतिवडा  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
कीर्तिपुर, काठमाडौँ  
२०६५

**त्रिभुवन विश्वविद्यालय,  
नेपाली केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुर**

**स्वीकृतिपत्र**

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत विश्वविद्यालय क्याम्पसका छात्र **श्री डिल्लीराज खतिवडा**ले त्रि.वि. नेपाली केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुरको स्नातकोत्तर तह एम.ए. नेपाली विषयको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि प्रस्तुत गर्नुभएको **नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिको तुलनात्मक अध्ययन** शीर्षकको शोधपत्र सोही प्रयोजनका लागि स्वीकृत गरिएको छ ।

**मूल्याङ्कन समिति**

**हस्ताक्षर**

१. प्रा. राजेन्द्र सुवेदी  
(विभागीय प्रमुख)

.....

२. प्रा.डा. देवीप्रसाद गौतम  
(शोधनिर्देशक)

.....

३. प्रा.डा. योगेन्द्रप्रसाद यादव  
(बाह्य परीक्षक)

.....

मिति : २०६५/०२/१२

## शोध-निर्देशकको मन्तव्य

‘नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिको तुलनात्मक अध्ययन’ शीर्षकको प्रस्तुत शोधपत्र एम.ए. दोस्रो वर्षका छात्र डिल्लीराज खतिवडाले मेरा निर्देशनमा तयार पार्नु भएको हो । परिश्रमपूर्वक तयार पारिएको यस शोधकार्यबाट म सन्तुष्ट छु र यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि सिफारिस गर्दछु ।

मिति: २०६५/०२/१२ गते

.....  
डा. देवीप्रसाद गौतम  
प्राध्यापक  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर  
काठमाडौं, नेपाल

## कृतज्ञताज्ञापन

प्रस्तुत शोधपत्र मैले आदरणीय गुरु प्रा.डा. देवीप्रसाद गौतमज्यूको कुशल निर्देशनमा तयार पारेको हुँ । शोधपत्र लेखनका सिलसिलामा विविध व्यस्तताका बीच पनि आफ्नो अमूल्य समय निकाली आवश्यक सहयोगका साथै प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्रदान गर्नु भएकोमा उहाँप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु ।

यसैगरी शोधप्रस्ताव स्वीकृत गरी शोधकार्यमा अग्रसर हुने अवसर दिनुभएकोमा पूर्व विभागाध्यक्ष गुरुद्वय प्रा.डा. दयाराम श्रेष्ठ र प्रा. डा. घनश्याम कँडेलज्यू प्रति तथा शोधपत्र चाँडै तयार पार्नका लागि सल्लाह तथा प्रेरणा प्रदान गर्नुहुने विभागाध्यक्ष गुरु प्रा. राजेन्द्र सुवेदी प्रति पनि हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

यस्तै शोधपत्र लेखनका क्रममा विविध सहयोग एवम् सल्लाह दिनुहुने गुरुहरू प्रा. मोहनराज शर्मा, सह-प्रा.डा. बालकृष्ण भ्मा, सह-प्रा. भुवनहरि कोइराला, उप-प्रा. विनोदप्रसाद सुवेदीज्यूप्रति पनि हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्नु मैले आफ्नो कर्तव्य ठानेको छु ।

यसैगरी उच्च शिक्षा प्राप्तिका लागि सुअवसर प्रदान गरी सधैं अध्ययनका लागि प्रेरणा र प्रोत्साहन दिँदै यहाँसम्म ल्याइपुऱ्याउनुहुने ममतामयी आमा, बुबा र परिवारका अन्य सदस्यहरूप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु । साथै मैथिली साहित्य परिषद्, सप्तरीका सचिव तथा प्रस्तुत शोधपत्रका मैथिली खण्डका वक्ता (स्पिकर) श्री देवेन्द्र मिश्रज्यू, यथासम्भव शुद्ध एवम् स्तरीय टङ्कन गरिदिने श्री तुलसीप्रसाद पराजुली र दिलीप मगरज्यूका साथै क्रिएटिभ कम्प्युटर सेन्टर, कीर्तिपुरकी अस्बी के.सी. लाई धन्यवाद नदिइरहन सकिदैन । आवश्यक शोधपत्र, पुस्तक, पत्रपत्रिकाहरू उपलब्ध गराई अध्ययन र सामग्री सङ्कलनमा सुविधा मिलाईदिने त्रि.वि.पुस्तकालय, कीर्तिपुर तथा मैथिली सन्दर्भ पुस्तकालय, राजविराज परिवारप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु ।

अन्तमा, यो शोधपत्र समुचित मूल्याङ्कनका लागि त्रिभुवन विश्वविद्यालय , नेपाली केन्द्रीय विभागसमक्ष प्रस्तुत गर्दछु ।

मिति: २०६५/०२/१२

.....  
**डिल्लीराज खतिवड़ा**

एम. ए. (दोस्रो वर्ष)

नेपाली केन्द्रीय विभाग

त्रि.वि.कीर्तिपुर, काठमाडौं

## सङ्क्षेपीकरणसूची

|                |   |                                 |
|----------------|---|---------------------------------|
| क्र.सं.        | — | क्रमसङ्ख्या                     |
| ई.             | — | ईस्वी संवत्                     |
| त्रि.वि.       | — | त्रिभुवन विश्वविद्यालय          |
| वि.सं.         | — | विक्रम संवत्                    |
| डा.            | — | डाक्टर                          |
| पं.            | — | पण्डित                          |
| प्रा.          | — | प्राध्यापक                      |
| ने.रा.प्र.प्र. | — | नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान |
| पृ.            | — | पृष्ठ                           |
| पु.            | — | पुलिङ्ग                         |
| स्त्री.        | — | स्त्रीलिङ्ग                     |
| ए.व            | — | एकवचन                           |
| ब.व            | — | बहुवचन                          |
| दो.सं.         | — | दोस्रो संस्करण                  |
| ते.सं.         | — | तेस्रो संस्करण                  |
| का.            | — | काठमाडौं                        |
| सा.प्र.        | — | साभा प्रकाशन                    |
| उ.पु.          | — | उत्तम पुरुष                     |
| म.पु.          | — | मध्यम पुरुष                     |
| अ.पु.          | — | अन्य पुरुष                      |

## चिह्नप्रयोग

|     |   |             |
|-----|---|-------------|
| /   | — | वा, र, अथवा |
| Ø   | — | शुन्य रूप   |
| +   | — | जोड         |
| ... | — | खाली        |

| विषयसूची                  | पृष्ठ |
|---------------------------|-------|
| पहिलो परिच्छेद<br>परिचय   |       |
| १.१ विषयप्रवेश            | १     |
| १.२ शोधशीर्षक             | ४     |
| १.३ शोधप्रयोजन            | ४     |
| १.४ समस्याकथन             | ५     |
| १.५ शोधकार्यको उद्देश्य   | ५     |
| १.६. पूर्वकार्यको समीक्षा | ५     |
| १.६.१ सर्वेक्षण           | ५     |
| १.६.२. समीक्षा            | ७     |
| १.७ शोधकार्यको औचित्य     | ९     |
| १.८ शोधविधि               | १०    |
| १.९ शोधपत्रको रूपरेखा     | १०    |

## दोस्रो परिच्छेद

### नेपाली र मैथिली भाषामा व्याकरणिक कोटिको अध्ययनपरम्परा

|                                                                               |    |
|-------------------------------------------------------------------------------|----|
| २.१ व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी सैद्धान्तिक आधार                                   | ११ |
| २.२ नेपालीको व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी अध्ययनपरम्परा                             | १२ |
| २.२.१. विदेशी विद्वान्द्वारा गरिएको अध्ययन                                    | १३ |
| २.२.१.१ 'ए ग्रामर अफ द नेपाली ल्हाङ्गवेज' (१८७७ वि.सं.)                       | १३ |
| २.२.१.२. कम्परेटिभ ग्रामर अफ द मोडर्न आर्यन ल्याङ्गवेजेज अफ इन्डिया (१८७२-७९) | १६ |

|                                                                                    |    |
|------------------------------------------------------------------------------------|----|
| २.२.१.३ नेपाली ग्रामर एण्ड इङ्गलिश नेपाली, नेपाली इङ्गलिश<br>भोकाबुलरी (१८८७)      | १८ |
| २.२.१.४ अ कम्परेटिभ एण्ड इटिमोलजिकल डिक्सनरी अफ नेपाली<br>ल्याङ्गवेज (१९८८ वि.सं.) | २१ |
| २.२.२ स्वदेशी विद्वानद्वारा गरिएको अध्ययन                                          | २३ |
| २.२.२.१ चन्द्रिका (१९६९)                                                           | २३ |
| २.२.२.२ मध्यचन्द्रिका (२०२१)                                                       | २६ |
| २.२.२.३ राम्रो रचना मीठो नेपाली (२०२३)                                             | २७ |
| २.२.२.४ भाषाविज्ञान (२०४८)                                                         | ३० |
| २.२.२.५ समसामयिक नेपाली व्याकरण (२०४९, ते.सं. २०६२)                                | ३४ |
| २.२.२.६ भाषाविज्ञानको रूपरेखा (२०५१)                                               | ४० |
| २.२.२.७ नेपाली वाक्य व्याकरण (२०५४)                                                | ४६ |
| २.३ मैथिलीको व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी अध्ययनपरम्परा                                  | ५३ |
| २.३.१ आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना (१९७६ ई.)                                       | ५४ |
| २.३.२ मैथिली व्याकरण आओर रचना (१०७९ ई.)                                            | ६० |
| २.३.३ उच्चतर मैथिली व्याकरण (१९७९ ई.)                                              | ६२ |
| २.४ सारांश                                                                         | ६५ |

### तेस्रो परिच्छेद

#### नेपाली र मैथिली भाषाका लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदरसम्बन्धी व्याकरणिक कोटिको तुलना

|              |    |
|--------------|----|
| ३.१ परिचय    | ६९ |
| ३.२ लिङ्ग    | ६९ |
| ३.२.१ शब्दगत | ६९ |

|                      |    |
|----------------------|----|
| ३.२.२ वाक्यगत        | ७३ |
| ३.३ वचन              | ७५ |
| ३.३.१ शब्दगत         | ७५ |
| ३.३.२ वाक्यगत        | ७७ |
| ३.४ पुरुष            | ७८ |
| ३.४.१ प्रथम पुरुष    | ७९ |
| ३.४.२ द्वितीय पुरुष  | ८० |
| ३.४.३ तृतीय पुरुष    | ८१ |
| ३.४.४ पुरुषका आदर    | ८६ |
| ३.४.५ पुरुष र क्रिया | ८८ |
| ३.५ आदर              | ९१ |
| ३.६ सारांश           | ९३ |

### चौथो परिच्छेद

#### नेपाली र मैथिली भाषाका काल, पक्ष, भाव, वाच्य र कारकसम्बन्धी कोटिको तुलना

|                      |     |
|----------------------|-----|
| ४.१ परिचय            | ९७  |
| ४.२ काल              | ९७  |
| ४.२.१ भूतकाल         | ९७  |
| ४.२.२ अभूतकाल        | १०० |
| ४.२.२.१ वर्तमान काल  | १०१ |
| ४.२.२.२ भविष्यत् काल | १०४ |
| ४.३ पक्ष             | १०७ |
| ४.३.१ अपूर्ण पक्ष    | १०७ |

|                      |     |
|----------------------|-----|
| ४.३.२ पूर्ण पक्ष     | १०९ |
| ४.३.३ अभ्यस्त पक्ष   | ११० |
| ४.३.४ अज्ञात पक्ष    | १११ |
| ४.४ भाव              | ११२ |
| ४.४.१ सामान्यार्थ    | ११२ |
| ४.४.२ विध्यर्थ       | ११४ |
| ४.४.२.१ इच्छार्थ     | ११४ |
| ४.४.२.२ आज्ञार्थ     | ११६ |
| ४.४.३. अनिश्चयार्थ   | ११७ |
| ४.४.३.१. सम्भावनार्थ | ११७ |
| ४.४.३.२. सङ्केतार्थ  | ११८ |
| ४.५ वाच्य            | ११९ |
| ४.५.१ कर्तृवाच्य     | १२० |
| ४.५.२ कर्मवाच्य      | १२२ |
| ४.५.३ भाववाच्य       | १२४ |
| ४.६ कारक             | १२७ |
| ४.६.१ कर्ता कारक     | १२८ |
| ४.६.२ कर्म कारक      | १२८ |
| ४.६.३ करण कारक       | १३० |
| ४.६.४ सम्प्रदान कारक | १३० |
| ४.६.५ अपादान कारक    | १३१ |
| ४.६.६ सम्बन्ध कारक   | १३२ |

|                       |     |
|-----------------------|-----|
| ४.६.७ अधिकरण कारक     | १३३ |
| ४.७ सारांश            | १३४ |
| <b>पाँचौ परिच्छेद</b> |     |
| <b>उपसंहार</b>        |     |
| ५.१ उपसंहार           | १४२ |
| ५.२ निष्कर्ष          | १४५ |
| सन्दर्भग्रन्थसूची     | १४६ |

# पहिलो परिच्छेद

## परिचय

### १.१ विषयप्रवेश

भाषा विचारविनिमयको साधन हो । यो परिवर्तनशील र व्यवस्थित हुन्छ । परिवर्तनशील भएर पनि निश्चित व्यवस्था र नियमको सीमामा आवद्ध हुनु यसको निजी वैशिष्ट्य हो भन्न सकिन्छ । भाषालाई व्यवस्थित र नियमित बनाउनका लागि संसारका प्रत्येक भाषामा नियम र उपनियमहरूको व्यवस्था भएको पाइन्छ । यस्ता नियमहरूमध्ये कतिपय संसारका सबै भाषामा पाइने साझा नियम हुन्छन् भने केही भाषा विशेषमा मात्र पाइने हुन्छन् । संसारका सबै भाषामा पाइने नियमलाई सार्वभौम नियम भनिन्छ भने भाषा विशेषमा मात्र लागू हुने नियमलाई भाषा विशिष्ट नियम भनिन्छ ।

नेपालको क्षेत्रफल झन्डै ५६ हजार वर्गमाइल छ । क्षेत्रफलका दृष्टिले नेपाल विश्व मानचित्रमा सानो राष्ट्रको रूपमा चिनिए तापनि भाषाका दृष्टिले भने ठूलो छ, किनभने संसारमा बोलिने मुख्य चार भाषा परिवारभित्र यो सानो मुलुकमा बोल्ने गरिन्छ जहाँ ८० भन्दा बढी भाषा र भाषिकाहरू छन् भन्ने विद्वान्हरूको भनाइ रहेको छ । प्रमुख रूपमा बोलिने भाषाहरू भारोपेली भाषा, भोट-चिनिया (भोट-बर्मेली, चीनी-तिब्बती) भाषा, आग्नेली भाषा र द्रविड भाषा परिवारका भाषाभाषिकाहरू छन् । त्यसैले भाषाका दृष्टिले नेपाल संसारमा धनी मानिन्छ । नेपाल बहुभाषिक राष्ट्र हो । बहुभाषिक राष्ट्र नेपालको राष्ट्रभाषा नेपाली हो । अन्य भाषा तथा भाषिकाहरू नेपालका राष्ट्रियभाषा हुन् । नेपाल प्राचीन कालदेखि नै विभिन्न जातिका भाषिक, धार्मिक, सामाजिक र सांस्कृतिक विविधता बोकेको र यी विविधताभित्र एकताको संगमस्थल बन्न पुगेको छ । विविध जातिबाट निर्माण भएको नेपाल एकमात्र नेपाली जातिको रूपमा विश्वमा परिचित हुन पुगेको छ । यिनै नेपाली जातिका विविध जाति वा बहुजाति, बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक, बहुधार्मिकता हुर्कन र विकसित हुन खोजेको

पाइन्छ । यिनै विभिन्न जातिका समान आकांक्षा र एकतामा नै नेपालको राष्ट्रियता अडेको र बलियो हुन पुगेको छ । तत्कालीन नेपाल अधिराज्यको संविधान २०४७ ले पनि सबै नेपाली जातिका भाषा राष्ट्रियभाषाको मान्यता दिएर ती भाषाभाषीहरूका साथै सामाजिक मूल्य, मान्यता, धर्म, संस्कृतिको संरक्षण र सम्बर्द्धन गर्दै उपभोग गर्ने सुअवसर प्रदान गरेको छ । नेपालजस्तो सानो राष्ट्रमा पनि विविध भाषाभाषीको अस्तित्व हुनु ज्यादै ठूलो गौरवको कुरा हो । आ-आफ्नो जातीय र भाषिक मान्यता बोकेर अघि बढेका यी भाषाहरू नेपालका अमूल्य निधि हुन् ।

मैथिली भारत तथा नेपालमा प्रचलित एउटा स्वतन्त्र संभ्रान्त भाषा हो । यस भाषाका लागि तिरहुतिया, देहाती आदि पर्यायवाची नामको प्रयोग पनि भएको पाइन्छ । यसको नामकरणबाटै स्पष्ट हुन्छ कि मैथिली यथार्थमा मिथिलाको भाषा हो । प्राचीनकालमा मिथिला एउटा प्रसिद्ध बौद्धिक केन्द्रको रूपमा स्थापित थियो । यही केन्द्रमा भारतवर्षको सबैभागबाट विद्वान्हरू तर्कशास्त्र तथा दर्शनशास्त्रको प्रशिक्षण प्राप्त गर्नका लागि आउँथे । आधुनिक मिथिला दुईवटा पृथक् स्वतन्त्र राष्ट्र भारत तथा नेपालको बीच राजनीतिक रूपमा विभाजित छ तथापि यी दुवै राष्ट्रका मैथिली भाषी समुदायको बीचमा भौगोलिक समकक्षता तथा नियमित सम्पर्कको एउटा अविभाज्य सांस्कृतिक अस्तित्वको रूपमा विद्यमान छ ।

मैथिली भाषा मुख्यतः भारतको विहार प्रान्तको उत्तर-पूर्वी तथा नेपालको पूर्वी तराईक्षेत्रमा करिब पाँच करोड जनसंख्याद्वारा मातृभाषाको रूपमा बोलिरहेको अनुमान गरिएको छ । यही भाषाको प्रयोग केही अंशमा पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि निकटवर्ती क्षेत्रमा पनि पाइएको छ । नेपालमा मैथिली भाषाभाषीको संख्या देशको कुल जनसंख्याको करीब १२ प्रतिशत छ । जनसङ्ख्या तथ्याङ्क (ई.१९९१) तथा भाषाभाषीको सङ्ख्याको आधारमा यो नेपालको दोस्रो प्रमुख भाषा हो ।

नेपाल तथा भारत दुवै राष्ट्रमा शिक्षाक्षेत्रमा प्राथमिक विद्यालयदेखि विश्वविद्यालयसम्म मैथिलीको पठनपाठन हुँदै छ । नेपालको संविधान तथा स्थानीय स्वायत्त शासन ऐनअन्तर्गत पनि विभिन्न स्थानीय भाषाको संरक्षण, सम्बर्द्धन तथा

प्रयोगको अभिभारा स्थानीय निकायलाई दिइएको छ । भाषाहरूको सम्बर्द्धनको दृष्टिले यो एउटा प्रशंसनीय प्रयास हो, कारण सरकारी तत्परता, पठन-पाठन सामग्री तथा प्रशिक्षित जनशक्तिको अभावमा यही प्रयासमा आशातीत सफलता प्राप्त हुन सकेको छैन । भारतीय संविधानको आठौँ अनुसूचीमा मैथिली भाषा अद्यावधि सम्मिलित हुन सकेको छैन, तर साहित्य एकेडेमीद्वारा यसलाई सोहीँ भारतीय भाषाको रूपमा मान्यता प्रदान गरेको छ ।

मैथिली एउटा पृथक् इण्डो-आर्यन भाषा हो । यो भाषा इण्डो-आर्यन भाषा परिवारको पूर्वी समूहमा पर्दछ । यही दृष्टिकोणबाट यो पश्चिमी समूहको हिन्दी भाषाबाट स्वतः भिन्न देखिएको छ । भोजपुरी तथा मगहीसँग मैथिली एउटा उपसमूह बनाउँदै छ । भाषिक दृष्टिकोणबाट यो हिन्दी तथा नेपाली भाषाबाट बढी भिन्न तथा अतंमी, बंगाली तथा उड़िया भाषाको अति निकट भएको पाइन्छ । हर्नले (१८८०ई.) जस्तै अन्य विदेशी भाषाशास्त्री तथा हिन्दीका अन्धप्रेमीहरूद्वारा मैथिलीलाई हिन्दीको बिहारी अथवा पूर्वी भाषिकाको रूपमा प्रचार-प्रसार गर्नु सर्वथा भ्रामक देखिन्छ ।

कुनै पनि भाषा आफ्ना नजिकका अन्य भाषाहरूको प्रभावमा परेको हुन्छ । त्यस भाषाबाट केही शब्द वा भाषिक विशेषता ग्रहण गरेको हुन्छ । यो भाषिक आवश्यकता र स्वाभाविक प्रक्रिया पनि हो । यो नै भाषिक वा भाषाको विशेषता हो । अझ विशेष रूपमा भन्ने हो भने समवर्गी वा निकट सम्बन्ध भएका भाषाहरूमा यो प्रक्रिया टड्कारो रूपमा देखा पर्दछ । यति हुदाँहुँदै पनि एउटै भाषा परिवारका प्रत्येक भाषामा आ-आफ्नै भाषिक विशेषता विद्यमान रहेको हुन्छ । यसका साथै व्याकरणिक व्यवस्था मूल रूपमा रहेको हुन्छ । अझ भन्ने हो भने भाषा आफैँमा व्यवस्थित हुन्छ । सामान्यतः सबै भाषाका वर्ण, व्याकरण, शब्द र अर्थका तहमा बेग्ला-बेग्लै व्यवस्था हुन्छ । बेग्ला-बेग्लै व्यवस्था भए तापनि संसारका विभिन्न भाषाका व्याकरणमा केही समानता हुन्छन् भने धेरै मात्रामा असमानता वा भिन्नता पाइन्छन् । त्यसैले भाषा आफैँमा व्यवस्थित हुने हुनाले भाषिक व्यवस्था खोज्न सम्बन्धित भाषाका वक्ताको अभिव्यक्तिलाई लिनु पर्ने हुन्छ । मूल रूपमा भाषालाई शुद्ध, स्तरीय, मानक रूप स्थापित गरी व्यवस्थित गराउने साधन नै त्यस भाषाको व्याकरण हो । व्याकरण

भाषाविज्ञानको एउटा अङ्ग हो । व्याकरणभित्र थुप्रै पक्षहरू अन्तरनिहित हुन्छन् । व्याकरणभित्र अन्तर्निहित थुप्रै पक्षहरूमध्ये व्याकरणिक कोटिहरूको महत्त्वपूर्ण स्थान रहेको हुन्छ । व्याकरणिक कोटिहरू भाषिक प्रयोगमा रूपतात्त्विक प्रक्रियाबाट निर्देशित भई व्यवस्थित हुन्छन् , जसले भाषिक व्यवस्थाको अन्तर्सम्बन्धलाई देखाएको हुन्छ । व्याकरणिक कोटिहरूभित्र लिङ्ग, वचन, पुरुष, काल, पक्ष, भाव, वाच्य, आदर र कारक हुन्छन् । यसै प्रसङ्गमा भाषिक दृष्टिकोणले मैथिली भाषाको विकासको विस्तारलाई अगाडि बढाउने कममा मैथिली भाषाको शब्दकोश, व्याकरण समेत प्रकाशित भएको पाइन्छ । तर भाषिक रूपमा भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोणले भने व्याकरणिक विश्लेषण गरेको तथ्य फेला परेको पाइएता पनि अन्योलता र अस्पष्टता रहेको देखिन्छ । बिना शोधखोज यस्ता अन्योलपूर्ण र अस्पष्ट कुराको यथार्थ परिचय प्रस्तुत गर्नु असम्भव नै हुन्छ । वास्तवमा कुनै पनि वस्तुलाई पटक पटक शोधखोज गरी सत्य पत्ता लगाउने वा निष्कर्ष निकाल्ने कार्यमा शोधकार्यले नै महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गर्दछ । भाषिक विश्लेषण बृहत् क्षेत्र भएका कारणले व्याकरणिक तहमा बृहत् रूपमा विश्लेषण गर्न नसके तापनि व्याकरणिक क्षेत्रको सानो अंश मात्र भए पनि विश्लेषण गर्ने हेतुले यस भाषाको व्याकरणिक पक्षभित्रको सानो तह व्याकरणिक कोटिअन्तर्गत सीमित रहेर व्यवस्थित, स्पष्ट र समग्र रूपमा अध्ययन गर्ने कार्यतर्फ प्रस्तुत शोधकार्य अभिमुख छ ।

## १.२ शोधशीर्षक

प्रस्तुत शोधपत्रको शीर्षक 'नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिको तुलनात्मक अध्ययन' रहेको छ ।

## १.३ शोधप्रयोजन

प्रस्तुत शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि प्रस्तुत गरिएको हो ।

## १.४ समस्याकथन

यस मैथिली भाषाको व्याकरण व्यवस्थाभित्र व्याकरणिक कोटिहरूको के-कस्तो अवस्था छ ? व्याकरणिक कोटिको संरचनाका विशेषता के कस्ता छन् ? नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिहरू बीच के-कस्ता समानता र व्यतिरेक पाइन्छन् ? आदि समस्याहरूको समाधानतर्फ प्रस्तुत शोधकार्य केन्द्रित छ ।

## १.५ शोधकार्यको उद्देश्य

उद्देश्य विहीन काम 'चालक बिनाको सवारी साधन' जस्तै अस्थिर हुनुका साथै लक्ष्यमा पुग्न कठिन हुने भएकाले प्रस्तुत शोधकार्यको उद्देश्य-

१. मैथिली भाषाको सामान्य परिचय दिनु,
२. मानक मैथिली भाषाको विशेषता औल्याउनु,
३. नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिहरूको रूपतात्त्विक दृष्टिकोणले तुलना गर्नु,
४. मैथिलीका व्याकरणात्मक कोटिको विशेषता देखाउनु,
५. दुवै भाषाका व्याकरणात्मक कोटिहरूबीच रहेका समान तथा व्यतिरेकी पक्षदेखाउनु रहेका छन् ।

## १.६. पूर्वकार्यको समीक्षा

### १.६.१ सर्वेक्षण

सबैभन्दै पहिलो नेपाली व्याकरण लेख्ने विद्वान् जे.ए.एटन 'ए ग्रामर अफ् द नेपाली ल्याङ्ग्वेज' (१८७७) हुन् भने नेपालीद्वारा नेपाली भाषामा लेखिएर नेपालमै छापिएको पहिलो व्याकरण चाहिँ जय पृथ्वीबहादुर सिंहको 'प्राकृत व्याकरण' (१९६९) मानिन्छ ।<sup>१</sup> यद्यपि नेपाली व्याकरण लेख्ने स्वदेशी विद्वान् वीरेन्द्र केसरी अर्याल हुन्

---

<sup>१</sup> श्रेष्ठ, दयाराम र शर्मा, मोहनराज, नेपाली साहित्यको सङ्क्षिप्त इतिहास, पाँचौँ संस्करण (का.) साभा प्रकाशन, २०५६, पृ. १९४।

भन्ने उल्लेख पाइन्छ ।<sup>२</sup> तर यिनको व्याकरण अप्राप्य भएकाले स्वदेशी प्रथम व्याकरण-लेखक जय पृथ्वीबहादुर सिंहलाई नै मान्नुपर्ने हुन्छ । यसरी व्याकरण-लेखनका दृष्टिले उपर्युक्त विद्वान् प्रथम मानिए तापनि नेपाली भाषाका सन्दर्भमा व्याकरणिक कोटिको चर्चाका दृष्टिले प्रथम विद्वान् गुरुराज हेमराज पण्डित (१९६९) हुन् ।

नेपाली व्याकरण पछि सोमनाथ शर्माले 'मध्यचन्द्रिका' (२०२१), कृष्णप्रसाद पराजुलीले 'राम्रो रचना मीठो नेपाली' (२०२३) र 'नेपाली व्यावहारिक व्याकरण' (२०२४), रोहिणीप्रसाद भट्टराइले 'बृहद् नेपाली व्याकरण' (२०३३), माधवप्रसाद पोखरेलले 'नेपाली भाषामा लिङ्ग व्यवस्था' (२०४२), 'क्याम्पसस्तरीय नेपाली वाक्य व्याकरण' (२०५३), जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठीले 'आधुनिक नेपाली व्याकरण' (२०४५), हेमाङ्गराज अधिकारीले 'समसामयिक नेपाली व्याकरण' (२०४९), नरेन्द्र चापागाइँले 'शब्द, वाक्य र अभिव्यक्ति' (२०५१), टङ्कप्रसाद न्यौपानेले 'नेपाली व्याकरण र साहित्य' (२०५३), माधवप्रसाद पोखरेलले 'नेपाली वाक्य व्याकरण' (२०५४), महादेव अवस्थी र ऋषिराम शर्माले 'नेपाली व्यावहारिक व्याकरण र अभिव्यक्ति' (२०५५), मा व्याकरणिक कोटिहरूको बारेमा चर्चा गरेका छन् ।

त्यसैगरी मैथिली व्याकरण परम्पराको प्रवर्तक हर्नलेलाई मानिन्छ । व्याकरणीय रूपहरूको केही दृष्टान्तको आधारमा हर्नलेले मैथिलीलाई हिन्दीबाट फरक रूपमा स्थापित गरेका हुन् । यद्यपि मैथिली व्याकरणको गहन अध्ययनको श्रेय ग्रिएर्सन (१८८१ ई.) लाई जान्छ । यसै समयमा मैथिली व्याकरणका अन्य प्रमुख कृतिहरू ग्रिएर्सन (१८८३ ई., १९०३ ई.) तथा केलौग (१८९३ ई.) द्वारा लेखिएको छ ।

तर मैथिलीभाषी विद्वान्द्वारा लिखित सबैभन्दा पुरानो व्याकरण दीनबन्धु भाको 'मिथिलाभाषा विद्योतन' (सम्भवतः १९४६ ई.) लाई मानिन्छ । यसै कृतिमा व्याकरणका नियमहरू संस्कृत व्याकरण पाणिनीय शैलीमा सूत्रको रूपमा लेखिएको छ । यसपछि पं. श्री गोविन्द भाले 'उच्चतर मैथिली व्याकरण' (१९७९ ई.) लेखेका छन्, जसमा

---

<sup>२</sup> पूर्ववत्

मैथिली भाषाको आधुनिक भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोणले विश्लेषण गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

आधुनिक भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोणको आधारमा डेभिस (१९७३ ई.) तथा विलियम्स (१९७३ ई.) को अध्ययनलाई महत्त्वपूर्ण मानिएको छ । यिनीहरूले नेपालको तराई क्षेत्रबाट स्थलगत निरीक्षणद्वारा मैथिली वाक्यहरूको सङ्कलन गरेका छन् साथै भाषाविज्ञानको 'टैग्मेक सिद्धान्त' को आधारमा त्यसको विश्लेषण गरेका छन् । यता आएर मैथिली व्याकरणहरूको 'रूपान्तरण व्याकरण' (ट्रान्स्फोरमेशनल-जेनेरेटिभ ग्रामर) को ढाँचाअन्तर्गत विश्लेषण गर्ने प्रयास पनि भएको देखिन्छ । यसै सन्दर्भमा पहिलो काम उदयनारायण सिंह (१९७९ ई.)द्वारा भएको देखिन्छ । उनले रूपान्तरण व्याकरणको सम्बन्धपरक व्याकरण ( रिलेशनल ग्रामर ) को ढाँचा अनुसार मैथिली वाक्यहरूको वर्णन प्रस्तुत गरेका छन् । यसका अतिरिक्त योगेन्द्रप्रसाद यादव (१९८३ ई., १९९८ ई.) ले मैथिलीको वाक्यात्मक पक्षहरूको अन्वेषण गरेर भाषावैज्ञानिक नोम चौम्स्कीद्वारा प्रतिपादित रूपान्तरण व्याकरणको नवीनतम सिद्धान्त अधिशासन र आवद्धता (गभन्मेन्ट बाइण्डिंग थ्योरी) माथि यसको प्रभावको खोज गर्ने प्रयास गरेका छन् । मैथिली व्याकरणको सन्दर्भमा वर्गहार्ट (१९९२ ई.) को योगदान महत्त्वपूर्ण छ । आफ्नो अद्यावधि अप्रकाशित कृतिमा उनले विभिन्न सामाजिक परिवेशमा प्रयुक्त मौखिक मैथिली भाषाको वृहत् वर्णन प्रस्तुत गरेका छन् । यो कृति भाषावैज्ञानिक उपयोगसँगै विदेशीलाई मैथिली सिकाउने उद्देश्यले लेखिएको देखिन्छ । रामावतार यादवको 'मैथिलीको सन्दर्भ व्याकरण' (ई.१९६६) मा मैथिली भाषाको वर्णव्यवस्था, रूपव्यवस्था तथा वाक्य-संरचनासहित अन्य सम्बन्धित विषयहरूको विस्तृत वर्णन प्रस्तुत गरेका छन् । मैथिली भाषाव्याकरण अन्तर्गत पं.श्री गोविन्द भाले 'उच्चतर मैथिली व्याकरण' (१९७९ ई.), रामावतार यादवले 'मैथिलीक सन्दर्भ व्याकरण' (१९९६ ई.), डा. बालगोविन्द भा 'व्यथित' ले 'आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना' (१९७६ ई.), युगेश्वर भाले 'मैथिली व्याकरण आओर रचना' मा व्याकरणिक कोटिहरूको बारेमा चर्चा गरेका छन् ।

## १.६.२. समीक्षा

सोमनाथ शर्माले 'मध्यचन्द्रिका' (२०२१) मा 'रूपभेद' शीर्षकअन्तर्गत लिङ्ग, वचनको चर्चा गरेको देखिन्छ भने पुरुषको चर्चा 'सर्वनाम' शीर्षक अन्तर्गत गरेको देखिन्छ । 'अनिवार्य नेपाली शिक्षण निर्देशिका' (२०३९) मा 'पदसङ्गति' शीर्षकमा व्याकरणिक कोटिहरू लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदरार्थीको चर्चा गरेको देखिन्छ । माधवप्रसाद पोखरेलले (२०४२, २०४७) 'नेपाली भाषाको सिंहावलोकन' कार्यपत्रमा लिङ्गका आधारमा पदसङ्गतिको अध्ययन गरेको देखिन्छ । यस लेखमा नाम र विशेषण, नाम र सम्बन्धपद र नाम र सर्वनामपदका बीचमा भएको सङ्गति एकातिर उल्लेख गरिएको छ भने नामपद र क्रियापदको बिचमा देखिने लिङ्ग, वचन, पुरुष, काल, वाच्य र आदरार्थी आदिका आधारमा पदसङ्गतिको निष्कर्ष (सूत्रबद्धरूपमा) निकालिएको छ । त्यसैगरी, डा. हेमाङ्गराज अधिकारीले 'समसामयिक नेपाली व्याकरण' (२०४९) मा 'सङ्गति' शीर्षकमा लिङ्ग, वचन, पुरुष, आदरको विस्तृत चर्चा-परिचर्चा गर्ने काम गरेका छन् भने 'क्रिया, काल, पक्ष र भाव/वृत्ति' शीर्षकमा काल, पक्ष, भाव आदिको विस्तृत व्याख्या गर्ने काम गरेको देखिन्छ । त्यसरी नै 'वाच्य' शीर्षकमा वाच्यको बारेमा तथा 'वाक्यका घटक, कार्य र कारकहरू' शीर्षकअन्तर्गत कारकको बारेमा चर्चा परिचर्चा गरेको देखिन्छ । मोहनराज शर्माले 'शब्दरचना र वर्णविन्यास, वाक्यतत्त्व, अभिव्यक्ति र पाठहरू' (२०५६) मा 'रूपायनः शब्दरूपको रचना' शीर्षकअन्तर्गत 'व्याकरणात्मक कोटिहरू' उपशीर्षकमा व्याकरणात्मक कोटि भनेको रूपको व्याकरणिक वैशिष्ट्य वा पहिचान हो, जसलाई रूपसँग सम्बद्ध लिङ्ग, वचन आदिले वहन गर्छन् भन्दै लिङ्ग, वचन, पुरुष, कारक, काल, पक्ष, वाच्य, भाव आदिको वर्णन गरेको देखिन्छ । तर यसमा सूत्रबद्ध रूपमा चर्चा नगरिएकोले सूत्रात्मक रूपमा अध्ययन गर्नु आवश्यक देखिन्छ ।

मैथिली भाषामा पं. श्री गोविन्द भाले 'उच्चतर मैथिली व्याकरण' (१९७९) मा 'नाम-विचार' शीर्षकअन्तर्गत लिङ्ग, वचन र पुरुषको चर्चा गरेको देखिन्छ । मैथिलीमा व्याकरणात्मक कोटिमाथिको कामको सुरुवात पं. श्री गोविन्द भाले (१९७९) ले स्पष्ट रूपमा गरेका छन् भने त्यसलाई निरन्तरता दिने काम रामअवतार यादव (१९९६) ले गरेको देखिन्छ । उनले लिङ्ग, पुरुष र काललाई सरलवाक्यमा देखाएका छन् ।

योगेन्द्रप्रसाद यादव (सन् १९९६, १९९७) ले सरलवाक्यमा लिङ्ग, पुरुष, आदारार्थी, काल र कारक-विभक्ति आदिको चर्चा गरेको देखिन्छ ।

यिनले 'टाइम, टेन्स एण्ड आस्पेक्ट इन इङ्गलिस एण्ड मैथिली (१९८०)' मा 'पूर्ण, अपूर्ण, सामान्य र तात्कालिक' गरी चारवटा पक्ष भएको उल्लेख गरेका छन् । यिनले सामान्य पक्ष अचिह्नित हुन्छ; यो कालसँग मात्र जोडिएर आउने उल्लेख ( पृ. २७) गरेका छन् । यिनले अपूर्ण पक्षमा मुख्य क्रियासँग 'ऐत' (lit) (लिखैत) प्रत्यय जोडिने कुरा उल्लेख गरेका छन् (पृ. २८) । त्यसैगरी तात्कालिकमा मुख्य क्रियामा 'रहल' (लिख रहल) जोडिने उल्लेख गर्दै पूर्ण पक्ष जनाउन मुख्य क्रियामा 'ने' प्रत्यय जोडिने उल्लेख (पृ. २८) गरेका छन् । यिनले मैथिलीमा पक्ष 'चिह्नित र अचिह्नित' गरी दुई प्रकारका हुन्छन् भन्दै सामान्य पक्ष अचिह्नित हुने उल्लेख गरेका छन् (पृ. २८) ।

यिनले कालको सन्दर्भमा मैथिलीमा अंग्रेजीमाभै 'भूत र अभूत' गरी दुई प्रकारको काल हुने उल्लेख गरेका छन् । यिनले वर्तमान र भविष्यतलाई अभूतअन्तर्गत राखेर अध्ययन विश्लेषण गरेको देखिन्छ (पृ. ५३) । यिनले भूतकाल बुझाउन मुख्य क्रियामा 'अल', भविष्यत् जनाउन 'अत', वर्तमान जनाउन 'अछि' (शून्य प्रत्यय) जोडिने उल्लेख (पृ. ५८) गरेका छन् ।

पुरुषको सन्दर्भमा यिनले मैथिलीमा प्रथम (हम), द्वितीय (तुँ, अहाँ) र तृतीय पुरुष (ओ) हुने उल्लेख गरेका छन् । त्यसैगरी आदरको सन्दर्भमा आदर 'आदरार्थी, मध्यमआदर र अनादर' रहेको उल्लेख (पृ. ६०) गरेका छन् (जस्तै : तुँ चिठी लिखैत छि (अनादर), अहाँ चिठी लिखैत छि (मध्यम आदर), तुँ चिठी लिखैत छह (मध्यम आदर) आदि) । यिनले विभिन्न कालमा आदरको तहलाई देखाउने काम गरेका छन् । यिनको विश्लेषण बढी वैज्ञानिक देखिन्छ ।

यसैगरी सत्यनारायण गडेरीले 'नेपाली र मैथिली भाषाका पदसङ्गतिको तुलना' शीर्षकमा एम. ए. को शोधपत्र तयार गरेको थाहा पाइन्छ।<sup>३</sup> तर यस शोधपत्रमा पनि मैथिली भाषाका विषयमा विविध पक्षीय अध्ययन नभई केवल पदसङ्गतिका दृष्टिले तुलनात्मक अध्ययन मात्र भएको छ। फलस्वरूप विविध पक्षीय अध्ययन हुनु आवश्यक छ। जसका लागि परम्परागत व्याकरणात्मक पद्धतिका साथै आवश्यकता अनुरूप रूपतात्विक (संरचनावादी) भाषावैज्ञानिक पद्धति र भाषिक सर्वेक्षण पद्धति बढी उपयोगी हुने देखिन्छ।

### १.७ शोधकार्यको औचित्य

कुनै पनि भाषाको व्याकरणिक पक्षको अध्ययन गर्नु भनेको त्यस भाषाको लागि औचित्य र महत्त्वपूर्ण नै मानिन जान्छ। त्यसमा पनि भाषाको लागि व्याकरण महत्त्वपूर्ण नै मानिन्छ। व्याकरणका पनि विभिन्न अङ्गहरूमध्ये महत्त्वपूर्ण र प्रमुख अङ्गको रूपमा रहेको व्याकरणिक कोटिहरूको अध्ययन भनै महत्त्वपूर्ण हुन्छ।

नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिहरूको तुलनात्मक अध्ययन र अनुसन्धान कसैद्वारा नगरिएकाले यो शोधकार्य औचित्यपूर्ण देखिन्छ।

नेपाली राष्ट्रभाषा भएकाले नेपाली सिक्न चाहने मैथिली भाषाभाषीलाई यो शोधकार्यले बाटो पहिल्याउनुका साथै इतिहासमा मैथिली भाषा नेपालको ठूलो क्षेत्रको राजकाजको भाषा भएको र पुराना नाटक, उपन्यास लगायत दरबारमा (मल्लकालदेखि) धेरै किसिमका क्रियाकलापमा मैथिली प्रभाव देखिने हुनाले नेपाली भाषाको आजको विकसित रूपसँग वैज्ञानिक रूपमा तुलनात्मक अध्ययन हुनु आवश्यक देखिएको तथा मातृभाषा नेपाली भएका वक्ताहरूलाई यो शोधकार्यले मैथिली भाषा सिक्न सघाउने अपेक्षाका साथै प्रस्तुत शोधपत्रको समस्याकथनमा उठाइएका समस्याहरू समाधानयोग्य भएबाट यस शोधकार्यको औचित्य स्वतः स्पष्ट हुन्छ।

---

<sup>३</sup> गडेरी, सत्यनारायण, 'नेपाली र मैथिलीभाषाका पदसङ्गतिको तुलना' (अप्रकाशित शोधपत्र, नेपाली केन्द्रीय विभाग, त्रि. वि., कीर्तिपुर, वि.स. २०५४)

## १.८ शोधविधि

### (क) सामग्री सङ्कलन

यस शोधकार्यमा समावेश गरिएका सामग्रीहरूको सङ्कलन लेख्य नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणहरूबाट गरिएको छ । यसका साथै आवश्यक स्थलमा 'नेपाली बृहत् शब्दकोश', 'मैथिली-अङ्ग्रेजी शब्दकोश' र सम्बन्धित विषय विशेषज्ञहरूबाट पनि सामग्री सङ्कलन गरिएको छ । यसरी यस शोधकार्यमा क्षेत्रीय र पुस्तकालयीय दुवै विधिको उपयोग गरिएको छ ।

### (ख) सैद्धान्तिक आधार

यस शोधकार्यमा नेपाली भाषाको व्याकरणिक कोटिको सैद्धान्तिक आधार डा. हेमाङ्गराज अधिकारीको 'समसामयिक नेपाली व्याकरण' र मोहनराज शर्माको 'शब्दरचना र वर्णविन्यास' व्याकरणलाई र मैथिली भाषाको व्याकरणात्मक कोटिको सैद्धान्तिक आधार पं. श्री गोविन्द झाको 'उच्चतर मैथिली व्याकरण' लाई मानिएको छ । साथै आवश्यक स्थलमा विभिन्न विद्वान्का लेखलाई पनि आधार मानिएको छ र नपुग भएका तथ्याङ्क मैथिली वक्ताहरूद्वारा सङ्कलन गरी विश्लेषण गरिएको छ ।

## १.९ शोधपत्रको रूपरेखा

अनुसन्धानको विषयवस्तुलाई सहज, सरल र वैज्ञानिक रूपमा प्रस्तुत गर्नका लागि यो शोधपत्रमा निम्नलिखित परिच्छेदहरू रहेका छन्-

पहिलो परिच्छेद- परिचय

दोस्रो परिच्छेद- नेपाली र मैथिली भाषामा व्याकरणिक कोटिको

अध्ययनपरम्परा

तेस्रो परिच्छेद- नेपाली र मैथिली भाषाका लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर

सम्बन्धी व्याकरणिक कोटिको तुलना

चौथो परिच्छेद- नेपाली र मैथिली भाषाका काल, पक्ष, भाव, वाच्य र

कारकसम्बन्धी कोटिको तुलना

पाँचौँ परिच्छेद- उपसंहार

## दोस्रो परिच्छेद

### नेपाली र मैथिली भाषामा व्याकरणिक कोटिको अध्ययनपरम्परा

#### २.१ व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी सैद्धान्तिक आधार

विभिन्न भाषामा वस्तु, विचार र भावलाई जनाउने शब्दहरूका अतिरिक्त केही यस्ता शब्द वा रूप पनि हुन्छन् जो व्याकरणात्मक कार्य सम्पन्न गर्नका लागि आउँछन् । जोन लाईन्सले पदवर्गको परम्परागत सिद्धान्त पुरुष, काल, भाव, लिङ्ग, वचन र कारकजस्ता व्याकरणिक कोटिसँग सम्बन्धित रहेको उल्लेख गरेका छन् । यिनले व्याकरणिक कोटिहरू पदवर्गको पूरक रहेको उल्लेख गरेका छन् ।<sup>४</sup> कुनै खास भाषामा व्याकरणात्मक कार्य सम्पन्न गर्नका लागि आउने शब्द वा शब्दसमूहलाई व्याकरणिक कोटि भनिन्छ । केही भाषाशास्त्रीले नाम, क्रिया र विशेषणजस्ता शब्दलाई पनि व्याकरणिक कोटिमा दर्द छन् तर यी शब्दहरू परम्परागत व्याकरणमा पदवर्ग अन्तर्गत पहिलादेखि नै समावेश भएका देखिन्छन् ।<sup>५</sup>

नामको वचन, लिङ्ग, कारक तथा क्रियाको काल, पक्ष, वाच्य आदि सामान्य एकाइहरू अभिव्यक्त गर्नेलाई व्याकरणिक कोटि भनिन्छ ।<sup>६</sup> त्यसैगरी शब्द साहचर्य वा पदसङ्गतिका आधारमा छुट्याइने लिङ्ग, वचन, पुरुष, कारक, वाच्य, काल, भाव, पक्ष आदि व्याकरणिक कोटि हुन् ।<sup>७</sup>

व्याकरणात्मक कार्य सम्पन्न गर्न प्रत्ययहरूद्वारा सङ्केत गरिएका लिङ्ग, वचन, पुरुष, काल, भाव, पक्ष, वाच्य, कारक आदि आउँदछन् । नेपाली भाषामा शब्द र क्रियासँग सम्बद्ध हुन आउने विभिन्न किसिमका प्रत्ययहरूद्वारा यी कोटिहरूको बोध

---

<sup>४</sup> लाईन्स, जोन, इन्ट्रोडक्सन टु थियोरिटिकल लिङ्ग्विस्टिक्स, कयाम्ब्रिज युनिभर्सिटि प्रेस, १९६८, पृ. २६० ।

<sup>५</sup> ज्याक एट अल, रिचर्ड्स, डिक्सनरी अफ एप्लाइड लिङ्ग्विस्टिक्स, ग्रेट ब्रिटेन, लङ्गम्यान, (१९८५: १२६)

<sup>६</sup> क्रिस्टल, डेभिड, अ डिक्सनरी अफ लिङ्ग्विस्टिक्स एण्ड फोनेटिक्स, पाँचौ संस्करण, ब्याकवेल पब्लिकेशन, पृ. ६५ ।

<sup>७</sup> हकेट, चार्ल्स एफ, अ कोर्स इन मोडर्न लिङ्ग्विस्टिक्स, अक्सफोर्ड एण्ड आइ. वि.एच., प्रा.लि., न्यू दिल्ली, पृ. २३९ ।

हुन्छ । व्याकरणात्मक कोटिहरू वक्तव्यसँग सम्बन्धित विशेष अर्थका लागि भाषा विशेषमा विभिन्न किसिमले प्रयुक्त हुन्छन् ।<sup>८</sup> यसैगरी कुनै अर्थतत्त्वलाई कायमै राखी त्यसका अन्य पदसँगका सम्बन्ध जनाउन, वाक्यगत प्रयोगमा ल्याउन, पदका रूपमा परिणत गर्न रूपमहरूद्वारा अभिव्यक्त सम्बन्धलाई नै रूपायन भनिन्छ र त्यसबाट बुझिने व्याकरणिक अभिव्यक्तिलाई व्याकरणिक कोटि भनिन्छ । यस्ता व्याकरणिक कोटिहरू सबै भाषामा उही, उस्तै र उति नै हुँदैनन् । सामान्यतया नेपाली भाषाका सन्दर्भमा निम्नलिखित व्याकरणिक कोटिहरू देखिन्छन्-लिङ्ग, वचन, पुरुष, कारक, काल, वाच्य, अर्थ (वृत्ति) ।<sup>९</sup>

यसरी विभिन्न भाषामा वस्तु, विचार तथा भाव जनाउने (कोशीय अर्थ दिने) शब्दका अतिरिक्त केही यस्ता रूप वा शब्द पनि हुन्छन्, जसको कोशीय अर्थ हुँदैन तर व्याकरणिक अर्थ हुन्छ । यस्ता रूप वा शब्द अन्य शब्दसँग प्रत्यय, मध्यसर्ग र उपसर्गका रूपमा आवद्ध भई वाक्यतत्त्वसँग सम्बन्धित हुन्छन् । रूपहरू व्याकरणात्मक कार्य सम्पादन गर्न भाषामा प्रयुक्त हुन्छन् । रूप परिवर्तनबाट पदसङ्गतिको विचलन हुनसक्छ । व्याकरणिक कार्यअन्तर्गत रूपतात्त्विक सङ्केतद्वारा निर्दिष्ट गरिएका लिङ्ग, वचन, कारक, काल, पक्ष, भाव, वाच्य आदि आउँछन् । यिनैलाई व्याकरणिक कोटि वा धारा भनिन्छ । कोटिहरूले शब्दहरूबीचको अन्तर्सम्बन्ध र शब्दका वाक्यात्मक कार्यको बोध गराउँछ ।

अन्तमा, व्याकरणात्मक कोटि भनेको रूपको व्याकरणिक वैशिष्ट्य वा पहिचान हो, जसलाई रूपसँग सम्बद्ध लिङ्ग, वचन आदिले वहन गर्छन् ।

## २.२ नेपालीको व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी अध्ययनपरम्परा

आज भाषा-व्याकरणमा विशेष चर्चाको शिखर बन्न पुगेको व्याकरणिक कोटिको अवधारणा कुनै नौलो कुरो नभएर धेरै पहिलेदेखि स्वदेशी तथा विदेशी विद्वान्को व्याकरणिक ग्रन्थमा उल्लेख गरिएको पाइन्छ । उक्त ग्रन्थहरूमा व्याकरणिक

<sup>८</sup> बन्धु, चूडामणि, भाषाविज्ञान, (२०४८), पृ. ८३ ।

<sup>९</sup> न्यौपाने, टङ्कप्रसाद, भाषाविज्ञानको रूपरेखा, २०५१, पृ. २६४ ।

कोटिसम्बन्धी शब्दको स्पष्ट किटान नभए पनि त्यसका विविध पक्षहरूको अध्ययन - विश्लेषण गरिएको पाइन्छ । नेपाली भाषा-व्याकरणका सन्दर्भमा स्वदेशी तथा विदेशी विद्वान्हरूद्वारा व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी गरिएको अध्ययनलाई समीक्षात्मक रूपमा तल प्रस्तुत गरिन्छ:-

## २.२.१. विदेशी विद्वान्द्वारा गरिएको अध्ययन

### २.२.१.१ 'ए ग्रामर अफ द नेपाली ल्याङ्ग्वेज' (१८७७ वि.सं.)

'ए ग्रामर अफ द नेपाली ल्याङ्ग्वेज (१८७७)' का लेखक जे.ए. एटनले अरू भाषामा जस्तै नेपाली भाषामा पनि पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग र नपुंसकलिङ्ग गरी नामलाई विभाजन गरेर अध्ययन गर्न सकिने मत अधि सारेका छन् (पृ.८) । संस्कृतमा पारिभाषिक शब्दका रूपमा रहेका 'पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग र ल्कीवलिङ्ग' (पृ.९) लाई उनले नेपालीमा प्रयोग गरेका छन् । प्रत्येक नाममा प्रत्ययहरू जोडिने आफ्नै नियमहरू रहेका छन् भन्दै उनले नामलाई बहुवचनमा लैजाँदा 'हेरु' (Heroo) जेडिने उल्लेख गरेका छन् (पृ.८) । नेपालीका कारकको नाम र सङ्ख्या संस्कृतसँग मिल्छ भन्ने उनको धारणा छ । संस्कृतका कारक नै नेपालीमा प्रयोग गरिएको उनले जनाएका छन् । (पृ. ८-९) ।

प्रत्येक नाममा 'कन, ले, लाई, देषि-बाटो, को, विषे - मा, हे' लगाएर फरक-फरक कारकमा प्रयोग हुने स्थितिको उनले चर्चा गर्दै उदाहरणसहित देखाएका छन् । (पृ.९-१०) । प्रत्ययहरू (Terminations) लागेपछिका नामको उदाहरणलाई 'मानिस' शब्दको रूपायन गरी देखाइएको छ जस्तै:

| क्र.सं. | कारक             |           | एकवचन           | बहुवचन            |
|---------|------------------|-----------|-----------------|-------------------|
| १       | कर्ता (Nom)      |           | मानिस           | मानिसहेरु         |
| २       | कर्म (Acc)       | कन        | मानिस्कन        | मानिस्हेरुकन      |
| ३       | करण ( Imp)       | ले        | मानिस्ले        | मानिस्हेरुले      |
| ४       | सम्प्रदान ( Dat) | लाई       | मानिस्लाई       | मानिस्हेरुलाई     |
| ५       | अपादान ( Abl)    | देषि-बाटो | मानिस्देषि/बाटो | मानिस्देषि/बाटो   |
| ६       | सम्बन्ध (Gen)    | को        | मानिस्को        | मानिस्हेरुको      |
| ७       | अधिकरण (Loc)     | विषे-मा   | मानिस्विषे/मा   | मानिस्हेरुविषे/मा |
| ८       | सम्बोधन (Voc)    | हे        | हे मानिस्       | हे मानिस्हेरु     |

यस प्रकार ‘कर्ता, कर्म, करण’ आदिमा ‘कन, ले, देषि, बाटो’ आदि प्रत्यय लाग्ने गर्दछ र यसलाई वचनले फरक पार्ने एटनले जनाएका छन् । एटनले कारकका नामलाई वचन भनिने बताएका छन् (पृ. १०) । तिनीहरूको विशिष्ट नाम रहेको जनाउँदै कर्ता (Nominative) लाई ‘प्रथम’ (प्रथमा ?) र कर्मलाई ‘द्वित्य’ (द्वितीया ?) र त्यस अनुरूपको संख्यात्मक क्रम हुने बताएका छन् (पृ.१०) । यस किसिमको रूपायन संस्कृत भाषाको अनुसार हुन्छ भन्ने उनको भनाइ छ । यसपछि ‘घर, स्वास्नी, ब्रिछ, मुख, पोथि (A book)’ लाई अभ्यासका रूपमा दिएर नामसम्बन्धी चर्चालाई टुङ्ग्याएका छन् (पृ.१०) ।

माथि चर्चा भएका नामसम्बन्धी प्रसङ्ग तथा देवनागरी लिपिमा आएका उदाहरणहरूलाई तल बुँदागत रूपमा टिपिएको छ ।

- क) नामलाई लिङ्गानुसार तीन भागमा बाँड्नु ,
- ख) ‘हेरु’ लगाएर बहुवचन बनाइनु,
- ग) (विभक्ति) प्रत्यय (Terminations) कर्म- कन, करण-ले, सम्प्रदान- लाई, अपादान- देषि/बाटो, सम्बन्ध-को, अधिकरण-विषे/मा, र सम्बोधन-हे जोडेर बनाइनु ,
- घ) नामको कारकलाई कर्ता, कर्म, कारण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, सम्बन्ध, सम्बोधनमा बाँडेर विभक्तिका रूपमा ‘प्रथम, द्वित्य’ भनिने र ‘मानिस’ शब्दको एकवचन र बहुवचनमा रूप चलाउनु ,
- ङ) कारक र वचनलाई एउटै मान्नु,
- च) विभक्ति र वचन नछुट्याउनु,
- छ) कारक, विभक्ति र वचनलाई स्पष्ट नपार्नु ,
- ज) यस खण्डमा नेपाली भाषाका उदाहरणहरू ( हेरु, पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, कन, ले, लाई, देषि-बाटो, को, विषे-मा, हे, मानिस, वचन, प्रथम, द्वित्य, घर, स्वास्नी, ब्रिछ, मुख, पोथि) देवनागरी लिपिमा लेखिनु ।

नामअन्तर्गत यी सबै पक्ष समेटिएका भए पनि व्याकरणकार एटनले ‘नाम’ आदि पारिभाषिक शब्दको परिचय दिएका छैनन् । लिङ्गका आधारमा नाम छुट्टिने तथा कारक र वचनका आधारमा रूपायन गरिएको भए पनि नामका प्रकार छुट्याएका छैनन् । यसका साथै वचन, कारक र विभक्तिलाई परिभाषित गरेका छैनन् बरु कारकलाई ‘वचन’ भन्ने भूल गरेका छन् ( पृ.१०) । लिङ्गमा प्रयुक्त शब्द ‘ पुलिङ्ग’ र ‘त्कीवलिङ्ग’ हाल पुलिङ्गर नपुंसकलिङ्गका रूपमा प्रयोग भएको पाइन्छ । ‘ प्रथम, द्वित्य’

शब्दको लेखनमा त्रुटि रहेको छ । रुखलाई 'त्रिछ' र किताबलाई 'पोथि' लेखेका छन् । यी शब्दको प्रयोग आज पाइँदैन । यसरी एटनले नामका बारेमा विश्लेषण गर्दै व्याकरणिक नियम बनाएको पाइन्छ । यसैगरी एटनले 'क्रिया' शीर्षकअन्तर्गत क्रियाका काल, भाव (अर्थ), पुरुष, धातु, निपात आदिका बारेमा चर्चा गरेका छन् । यस व्याकरणको सवैभन्दै विस्तृत खण्ड पनि यही देखिन्छ । 'क्रिया' शीर्षकअन्तर्गत अन्य उपशीर्षक दिएर त्यसका बारेमा स्पष्ट पारिएको छ ।

एटनले सवैभन्दै पहिले क्रियाका आठवटा भाव/अर्थ (Mood) लाई बताएका छन् । ती हुन् : (१) सामान्यार्थ (Indicative), (२) हेत्वर्थ (Subjunctive), (३) सामर्थ्यबोधक (Potential), (४) विध्यर्थक (Imperative), (५) आरम्भार्थक (Inchoative) (६) इच्छार्थक (Optative), (७) तीव्रताबोधक (Intensive), (८) प्रेरणार्थक (Causal ) (पृ. २०) ।

यिनले देखाएका भावलाई दुई किसिमले हेर्न सकिन्छ । प्रत्ययका आधार (रूपतात्त्विक) मा ' सामान्यार्थक, हेत्वर्थ, विध्यर्थक र प्रेरणार्थक' रहेका छन् । यसरी नै छुट्टा-छुट्टै शब्द (क्रिया) का आधार (वाक्यतात्त्विक) मा सामर्थ्यबोधक, आरम्भार्थक, इच्छार्थक र तीव्रताबोधक रहेका छन् ।

क्रियाका भावका बारेमा संक्षिप्त टिप्पणी गरेपछि एटन कालमा केन्द्रित भएका छन् । एटनले काल छ किसिमका हुने जनाएका छन् । उनले ती काललाई यसरी चिनाएका छन् : (१) सामान्य भूत (First Aorist), (२) अभ्यास पक्ष (Second Aorist), (३) वर्तमान काल ( Present tense ), (४) अपूर्णकाल (Imperfect Tense), (५) पूर्ण भूत (Pluperfect Tense), (६) भविष्यत् काल ( Future Tense ) ।

कालका विभाजनमा पनि एटनले काल र पक्षलाई छुट्ट्याएका छैनन् । वर्तमान, भविष्यत् तथा भूतकालको चर्चा भए पनि पक्ष र काललाई छुट्ट्याएर वर्गीकरण गरेको पाइँदैन ।

क्रियाका भाव र कालपछि एटनले पुरुषका बारेमा बताएका छन् । उनले नेपाली भाषामा ६ प्रकारका पुरुष हुने बताएका छन् । एकवचन र बहुवचनमा बाँडिएका यी पुरुषहरूमा म, तँ, उ, हामी, तिमी र उन् (पृ.२०) रहेका छन् । उनले पुरुषलाई ६ किसिमको हुने भनेका छन् जब कि नेपालीमा पुरुष जम्मा तीन किसिमका रहेका छन् । उनले एकवचन र बहुवचनमा सबै सर्वनामलाई एकमुष्ट छुट्याएको सङ्केत वर्गीकरण (म-हामी, तँ-तिमी, उ-उन) बाट देखिन्छ । यसले गर्दा उनी पुरुषका बारेमा अल्मलिए भै लाग्दछ । यस किसिमको चर्चापछि उनले छुट्याउन खोजेका पुरुषलाई यस प्रकार देखाउन सकिन्छ ।

| एटन   |               | प्रचलित |         | पुरुष         |
|-------|---------------|---------|---------|---------------|
| एकवचन | बहुवचन        | एकवचन   | बहुवचन  |               |
| मँ    | हामि/हामिहेरु | म       | हामी    | प्रथम/उत्तम   |
| त     | तिमि/तिमिहेरु | तँ      | तिमीहरू | द्वितीय/मध्यम |
| उ     | उन्/उनिहेरु   | ऊ       | उनीहरू  | तृतीय/अन्य    |

एटनले भावलाई वचन र कालका आधारमा देखाएका छन् । उनले दिएका भाव, काल, पक्षमा आज धेरै परिवर्तन र व्यवस्थित भएको पाइन्छ । उनले काल र पक्षलाई एकै ठाउँमा उल्लेख गरेका छन् ,तर वाच्य तथा भावलाई पनि स्पष्ट विश्लेषण गरेको पाइँदैन ।

#### २.२.१.२. कम्परेटिभ ग्रामर अफ द मोडर्न आर्यन ल्याङ्गवेजेज अफ इन्डिया (१८७२-७९)

‘कम्परेटिभ ग्रामर अफ द मोडर्न आर्यन ल्याङ्गवेजेज अफ इन्डिया (१८७२-७९)’ का लेखक जोन बिम्सले पनि यी कोटिहरूको विभिन्न पक्षको चर्चा गरेको देखिन्छ । बिम्सले कारकबाट नेपाली भाषाको बारेमा चर्चा सुरु गरेका छन् । अपादान कारकमा ‘सित’ को प्रयोग भएकोमा यिनले चर्चालाई केन्द्रित गरेका छन् तर ‘सित’ अपादान कारकको चिह्न नभएर सहार्थक (Comitative) कारक जनाउने विभक्ति हो

(पृ. २३५) भनेका छन् । 'सित' को व्युत्पत्ति हिन्तो (Hinto) हुन्तो (Hunto) बाट र सुन्तो (Sunto) सिन्तो (Sinto) मा बदलिएभैं 'सित्' (Sit) बनेको यिनको विश्लेषण रोचक देखिन्छ (पृ. २३५) । उनले नेपाली भाषामा ध्वनि तथा वर्णको वैज्ञानिक अध्ययन भइनसकेको पनि जनाएका छन् ।

'तिमि' शब्दको प्रयोगमा पनि नेपालीको आफ्नो विशेषता देखिने यिनले बताएका छन् (पृ. २३५) । हिन्दीको 'तुम' शब्द नेपालीमा प्रयोग हुँदा तालव्य स्वर (Palatal Sound) मा बदलिएर 'तिमी' बनेको यिनको मान्यता छ (पृ. २३५) । यसरी नै 'सित' लाई संस्कृतको 'सहित' शब्दबाट व्युत्पन्न भएको भन्ने यिनको धारणा पाइन्छ । 'सित' संस्कृत 'सहित' बाट व्युत्पन्न भएको हो भन्ने उनको मान्यता (पृ. २३५) पत्यारिलो छ ।

यिनले नेपालीमा 'ले' (le) (पृ. २६२) विभक्तिले करणकारक जनाउने उल्लेख गरका छन् । नेपाली भाषा र अन्य केही भाषामा प्रयोग भएको 'ल' छुट्टै विशेषताको भेटिन्छ । संस्कृतको 'लग्' धातुबाट 'ले र लाई' विकसित भएका हुन् भन्ने यिनको मान्यता वैज्ञानिक छ (पृ. २६०) । बिम्सले संस्कृत भाषाको 'मदीय' (meus), 'त्वदीय', (Tues) बाट 'मेरो , तेरो' शब्दको विकास भएको बताएका छन् । यसमा 'द', 'ड' मा बदलिएर 'र' भएको देखिन्छ । स्वरमध्यगत अवस्था 'एकादश-एघार' भएजस्तै 'मदीय' 'मेरो' र 'त्वदीय' 'तेरो' भएको यिनको विश्लेषण उपयुक्त नै देखिन्छ (पृ. ३१२-१३) ।

बिम्सले नेपाली, कुमाउनी र गढवालीमा 'ल' आउँदा र 'मराठी' , 'मारवाडी' मा 'व' को प्रयोग हुँदा भविष्यत्काल बुझिने बताएका छन् (पृ. १६१) ।

जस्तै : हूँला , होलास्, होला (एकवचन)

हौँला, हौला, हुनन् (बहुवचन)

यसरी बिम्सले काल र कारकसम्बन्धी धेरै-थोर चर्चा गरेको पाइन्छ , जुन केही हदसम्म ठीक देखिन्छ । अर्का विद्वान् एस्.एच्. केलग (१८७५) ले कर्तामा 'हेरु' प्रयोग गरेर बहुवचन बनाउने प्रक्रिया देखाउनु एटनको भन्दै पृथक् छैन । नेपालीमा पुलिङ्गी तद्भव बाहेक 'ओ' आउँछन् र यसबाट नेपालीको कर्ता कारकलाई छुट्याउन सकिने

यिनको विचार छ (पृ. १२०) । अन्य पक्षहरूको बारेमा केलगले खासै चर्चा गरेको पाइँदैन ।

### २.२.१.३ नेपाली ग्रामर एण्ड इङ्गलिश नेपाली, नेपाली इङ्गलिश भोकाबुलरी (१८८७)

अर्का विद्वान् टर्नबुलले क्रिश्चियन मिसनरी र चियाबगानका कर्मचारीलाई नेपाली भाषा सिकाउने उद्देश्यले लेखेको 'नेपाली ग्रामर एण्ड इङ्गलिश नेपाली, नेपाली इङ्गलिश भोकाबुलरी (१८८७)' भन्ने व्याकरणमा 'नाम' शीर्षकअन्तर्गत लिङ्ग, वचन, कारकको चर्चा गरेका छन् । उनले लिङ्गलाई पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग गरी बाँडेका छन् ( पृ.१२) । यसरी नै वचनलाई पनि एकवचन र बहुवचन गरी विभाजन गरेका छन् ( पृ.१२) उनले बहुवचन बनाउँदा एकवचनको अवस्थानसित मिल्ने गरी 'हरू' जोडिने देखाएका छन् । यसलाई कहिलेकाहीँ 'हेरू' लेखिने पनि उनले उल्लेख गरेका छन् ।

यसैगरी टर्नबुलले नेपालीमा कारक सात किसिमका हुने देखाएका छन् । उनकाअनुसार कारकहरू यसप्रकार छन्-(१) कर्ताकारक (२) कर्मकारक (३) सम्प्रदानकारक (४) अभिकर्ता, करणकारक (५) सम्बन्धकारक (६) अधिकरणकारक (७) सम्बोधनकारक (पृ.१२) । उनले कारकको रूपायनलाई यसरी देखाएका छन् -

|   | कारक      | एकवचन           | बहुवचन                  |
|---|-----------|-----------------|-------------------------|
| १ | कर्ता     | छोरोलाई         | छोराहरू                 |
| २ | कर्म      | छोरोलाई         | छोराहरूलाई              |
| ३ | सम्प्रदान | छोरोलाई         | छोराहरूलाई              |
| ४ | अभिकर्ता  | छोरोले          | छोराहरूले               |
| ५ | सम्बन्ध   | छोरोको (की, का) | छोराहरूको (की, का)      |
| ६ | अधिकरण    | छोरोमा          | छोराहरूमा               |
| ७ | सम्बोधन   | ए छोरा          | ए छोराहरू हो ! (पृ. १३) |

माथिका नामहरूमा अन्तको 'ओ' (o) 'आ' मा बदलिएर 'व' को प्रतिनिधित्व गर्ने जनाइएको छ । एकवचनबाट बहुवचनमा लैजाँदा अन्तको 'ओ' तिर्यक् रूपमा 'आ' मा बदलिने गर्छन् भन्दै कुनै नाम 'औँ' मा टुङ्गिएको भए पनि नबदलिने हुन्छन् भनेका छन् ; जस्तै

डालो - डालो - डालोहरूको

छोरा- छोरा- छोराहरूको

छोरी- छोरी - छोरीहरूको (पृ. १३) ।

केही पुलिङ्गी व्यञ्जनान्त नामलाई स्त्रीलिङ्गी बनाउँदा व्यञ्जनान्तमा 'ई' तथा 'इनी' जोडिने जनाइएको छ । यसका साथै 'इ' मा टुङ्गिएका नाम 'इनी' तथा 'नी' मात्र हुनसक्ने यिनले जानकारी दिएका छन् (पृ.१३) ; जस्तै: दास-दासी, पापी-पापिनी, मित्र-मित्रनी, शिक्षे-शिक्षेनी, क्षिमेकि- क्षिमेकिनी (पृ.१४) ।

यिनले नेपालीका सर्वनाममा लिङ्गभेद हुँदैन भनेका छन् । यसमा पाइने मानवीय र मानवेत्तर भनेर छुट्याएका छैनन् । यसैगरी कारकलाई तीनवटा 'कर्ता, कर्म, सम्बन्ध' मा विभाजन गरेर अध्ययन गर्न सकिने बताएका छन् (पृ.१३ ) । यसबाहेकका अरू कारकलाई कर्ताका पछाडि विभक्ति जोडेर बनाउन सकिने बताएका छन् । यसलाई 'कोहिहरू', 'कोहिहरूले' (पृ. १६) का रूपमा उल्लेख गरेका छन् ।

टर्नबुलले सम्बन्ध कारकमा तीनवटा प्रत्यय (Termination) रहेको उल्लेख गरेका छन् । यी मध्ये 'को' एकवचन पुलिङ्गी नाममा, 'की' एकवचन स्त्रीलिङ्गीमा र 'का' एकवचन तथा बहुवचन पुलिङ्गीमा आउने उनले जनाएका छन् (पृ. १५); जस्तै: (क) राजाका छोराहरू, (ख) राजीकी छोरीलाई (ग) राजाकी छोरीहरू (घ) राजाको छोरोलाई ।

'को' प्रयोग गर्दा ख्याल राख्नुपर्ने यिनको टिप्पणी छ । यसको प्रयोग सम्बन्धकारकमा र प्रश्नवाचक सर्वनाममा पनि उनले विश्लेषण गरेका छन् ।

प्रश्नवाचक सर्वनाममा 'कोनि' को प्रयोग पनि हुने जनाइएको छ । विशेषणका अर्थमा पनि यो कारक प्रयोग हुने उनले बताएका छन् ; जस्तै :

(क) छोरोको हो । (विभक्ति सम्बन्धकारकं)

(ख) छोरो को हो ? (प्रश्नवाचक सर्वनाम), (पृ. १५) ।

अधिकरणमा 'मा, माथि' आदि जोडिने यिनको विश्लेषण छ । सम्बोधनमा 'हे ईश्वर', 'ए केटा' हुने देखाइएको छ । बहुवचनमा 'हरू' का सङ्ग्रहमा 'लोग' को प्रयोग तथा दोहोर्‍याएर पनि प्रयोग गर्न सकिने उल्लेख छ ; जस्तै : केटा लोग, घरघर (पृ. १६) ।

टर्नबुलले नामका बारेमा चर्चा गर्दा लिङ्ग, वचन तथा कारकलाई आधार लिएका छन् । यिनले नाममा कारकले प्रत्यक्ष असर पार्ने जनाएका छन् । यसका साथै कारकको प्रयोगले नाममा हुने रूपायनलाई पनि देखाइएको छ । एटन र टर्नबुलका बीचमा नामलाई विश्लेषण गर्ने आधारमा कुनै अन्तर छैन । यिनले कारकको वर्गीकरणमा अपादान कारकलाई छुटाएका छन् । अपादानकारक र अभिकर्ताकारकमा अन्तर नभएको यिनको विश्लेषण छ, जुन उपयुक्त लाग्दैन ।

वाच्यको सन्दर्भमा टर्नबुलले सकर्मक क्रियाका कर्तृवाच्य र कर्मवाच्य गरी दुईवटा वाच्य हुने देखाएका छन् । धातुभन्दै पछाडि 'इ' जोडेर कर्तृवाच्यबाट कर्मवाच्यमा बदलिने देखाइएको छ । धातु 'आउ' (au) मा टुङ्गिएको अवस्थामा 'इ' 'उ' मा बदलिने उल्लेख छ ; जस्तै गर-गरी, गरी-गरिई, गरून-गरिउन, गय्यो -गरिँदा, गर्दा-गरिनु, गराउनु -गरिनु । नेपालीमा प्रयुक्त 'इ' (i) तथा 'इन' (in) ब्रजको 'इ' (I) तथा 'इज' (I) र मारवाडीको 'ij' को समानार्थी भएको उल्लेख गरिएको छ । यसको उच्चारणमा केही फरक भएको पनि टिप्पणी गरिएको छ (पृ. ६१) यिनले क्रियाका पाँचवटा भाव/अर्थ हुने देखाएका छन् - (क) सामान्यार्थ, (ख) हेत्वर्थ (ग) सङ्केतार्थ (घ) क्रियार्थ (ङ) धात्वर्थक विध्यर्थक (पृ. ६२) ।

कालको सन्दर्भमा यिनले क्रियाका पन्ध्रवटा काल हुने जनाएका छन् । यी काललाई मुख्यतः तीनवटा कालमा बाँड्न सकिने पनि उल्लेख गरेका छन् (पृ. ६२) । उनले पक्ष र काललाई छुट्याएका छैनन्; जस्तै :

१. वर्तमान - सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण , पूर्णापूर्ण

२. भूत - सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण , पूर्णापूर्ण

३. भविष्यत् - सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण , पूर्णापूर्ण , contingent, perfect contingent (पृ. ६२) ।

यसरी टर्नबुलको विश्लेषण परम्परागत नेपाली अनुसार देखिन्छ ।

#### **२.२.१.४ अ कम्पेरेटिभ एन्ड इटिमोलजिकल डिक्सनरी अफ नेपाली ल्याङ्ग्वेज ( १९८८ वि.स.)**

‘अ कम्पेरेटिभ एन्ड इटिमोलजिकल डिक्सनरी अफ नेपाली ल्याङ्ग्वेज (१९८८ वि.स.)’ का लेखक सर राल्फ लिले टर्नरले कोश सम्पादनका क्रममा व्याकरणको सङ्केत, चर्चा र टिप्पणी गरेका छन् । यसबाट यस कोशको उद्देश्य व्यापक रहेको भेटिन्छ । टर्नरले व्याकरणात्मक पक्षको चर्चा गर्ने क्रममा कारकको सङ्केत गरेका छन् । यिनले सरल र तिर्यक् कारकमा भेद देखाएका छन् । यसका अतिरिक्त अन्य कारक रूपलाई पनि सङ्केत गरेका छन्; जस्तै: को ‘Ko’ (पृ. १०५), कस् ‘kas’ (पृ. ८०), मा ‘ma’ (पृ. ४९९) लाई ‘lāi’ (पृ. ५५१) ।

त्यसैगरी यिनले वचन (एकवचन र बहुवचन)को सङ्केत पनि गरेका छन् । यिनले एकवचन (sg.) र बहुवचन (pl.) को सङ्केत दिएका छन्; जस्तै: नाता-गोता ‘nātāgotā’ (पृ. ३३९), तँ ‘Tā’ (पृ. २७०), तिमी ‘timi’ (पृ. २८३) जसमध्ये ‘तँ, तिमी’ द्वितीय पुरुषको एकवचनमा प्रयोग हुने कुरा उल्लेख गरेका छन् । टर्नरले लिङ्गको सङ्केत पनि गरेको देखिन्छ । यिनले पुलिङ्गको सङ्केत ‘m’, स्त्रीलिङ्गको सङ्केत ‘f.’ र

नपुंसक लिङ्गको सङ्केत 'n.' दिएका छन् जस्तै- अन्तरे 'antare' (f-i) (पृ. १५), कान्त 'Kānta'; Beloved [f-ā] (पृ. ८७), कान्छी Kānchi (f. of Kāncho) (पृ. ८७) ।

पुरुषको बारेमा पनि सङ्केत गरेर टर्नरले नेपाली भाषाका व्याकरणिक व्यवस्थालाई बुझ्न सघाएका छन् । जस्तै: ठूलाले सानालाई बोलाउँदा 'तँ' Tā द्वितीय पुरुषको सर्वनाम प्रयोग गरिन्छ (पृ. २७०), द्वितीय पुरुषको अति आदरसूचक एकवचनमा तपाईं Tapāi र बहुवचनमा तपाईंहरू Tapāiharu प्रयोग हुने कुरा उल्लेख गरेका छन् (पृ. २७२) । यहाँ (तँ+पाई) संयुक्त शब्द हुन् भन्ने टर्नरको विश्लेषण विचारणीय देखिन्छ । त्यसैगरी, 'तँ' 'Tā' भन्दा कम प्रसिद्ध तथा 'तपाईं' 'tapai' भन्दा कम औपचारिक रूपमा तिमि timi द्वितीय पुरुष एकवचनमा र 'तिमीहरू' timiheru बहुवचनमा साथीका लागि प्रयोग हुने उल्लेख गरेका छन् (पृ. २८४) । टर्नरले काल, पक्ष, वाच्य आदि व्याकरणिक पक्षको पनि चर्चा गरेका छन्, जस्तै : 'गयो' 'gayo' लाई 'जानु'को भूतकाल (पृ. १३६) बताएका छन्, 'गरि' 'gari' (अबसोल्युटिभ अफ 'गर्नु') (पृ. १३६), 'आउनु'- भविष्यत् - āune id. (पृ. ३०), भनेर बताएका छन् । त्यसैगरी - 'छनु' - Chanu - vb.intr. भनेर पनि उल्लेख गरेका छन् तर यसलाई 'हुनु' को ठाउँमा प्रयोग हुने कुरा उल्लेख गरेका छन् । यिनले

Present - chu, chas f. ches, cha f. che, chāuf. cheu, chan, f. chin

present continuous – chādachu, etc

past continuous -. chāda thie etc.

negative present - chuina, chainas, chaina, chainau, chainan

present part. - chādo, the infinitive. chanu is not used (पृ. १९१) भनेर उल्लेख गरेका छन् । यसरी नै 'हुनु' hunu vb. intr. लाई पनि देखाउने क्रममा

present - hu, hos, ho, hau or hwau, hau.

present negative - hoi-na, hos-na, hau-haunau.

imperative - hou, ho, hawas, hou, hawa, hau,

future - houla.

3rd pl. - hunan f. hunin

present particle - hūdo (पृ. ७४१) भनेर उल्लेख गरेका छन् ।

यसप्रकार टर्नरको कोशभित्र व्याकरणिक सङ्केतको चर्चा गरिएको भेटिन्छ । टर्नरले 'छनु' क्रियामूलको अनुकल्पना गर्दै त्यसैबाट 'छ' को विकास भएको र संस्कृतको 'भू' धातुबाट 'हुन्छ' र 'हो' उत्पत्ति भएको देखाएका छन् । 'छँदा, छँदो र छँदै' जस्ता रूपहरू आधुनिक नेपालीमा देखिनाले 'छनु' को अनुकल्पनालाई स-सानो टेवा मिले तापनि 'छन्छ, छने, छएको' जस्ता रूप नहुने हुँदा यस अनुकल्पनालाई स्वीकार गर्न नसकिने देखिन्छ ।

## २.२.२ स्वदेशी विद्वान्द्वारा गरिएको अध्ययन

### २.२.२.१ चन्द्रिका (१९६९)

'चन्द्रिका (१९६९)' व्याकरणका लेखक गुरुराज हेमराज पण्डितले 'लिङ्गविचार' शीर्षकमा मनुष्य र अरू प्राणीको नामबाट 'स्त्री, पुरुष, निर्जीव भन्ने बुझिएमा लिङ्ग कहलिन्छ (पृ. २८); जस्तै : छोरो, छोरी, काले, काली, पुस्तक, कलम आदि भन्दै लिङ्ग- पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग र नपुंसकलिङ्ग गरी तीन प्रकारका हुन्छन् भन्ने उल्लेख गरेका छन् । रूपबाट फरक नहुने हुनाले कुनै मानिस भाषामा पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग यी दुई लिङ्ग मात्र मान्दछन् , तर निर्जीवलाई पुरुषमा गणना गर्न ठीक नदेखिने, कहीं जो, को इत्यादि सर्वनामको पुलिङ्ग नपुंसकलिङ्गमा रूप पनि फरक पर्ने, जड र चेतनको व्यवहारलाई चाहिने विवेक पनि हुन सक्ने, संस्कृतसँग पनि मिल्ने देखिनाले हाम्रो भाषामा पनि नपुंसकलिङ्ग बेग्लै मान्नु उचित देखिन्छ भन्ने यिनको राय छ । यिनले पुरुष जाति बुझाउने नाम 'पुलिङ्ग' (राजा, बाबु), स्त्रीजाति बुझाउने 'स्त्रीलिङ्ग' (रानी, आमा) र निर्जीव जाति बुझाउने नपुंसकलिङ्ग (फलफूल, घर, खेत, आदि) हुन् भन्दै यिनले पुलिङ्गी र नपुंसकलिङ्गी शब्दमा प्रायः केही फरक हुँदैन, केवल सजीव र निर्जीवलाई भन्ने हुनाले मात्र फरक गरिन्छ , स्त्रीलिङ्गी शब्द त रूपवाटै प्रायः फरक देखिन्छन् , ती धेरै प्रकारका हुन्छन् भनेका छन् । यिनले 'नी, ई, इनी' लाई स्त्री प्रत्ययका रूपमा उल्लेख गर्दै 'ओ', को सट्टा 'ई' (छोरो-छोरी), 'अ' को बदलामा 'इनी' (मिश्र-मिश्रिनी),

‘अ’ को सट्टा ‘नी’ (नेपाल -नेपालनी) हुने देखाएका छन् (पृ. २९) । यिनले व्यक्तिवाचक पुलिङ्गी शब्दको स्त्री प्रत्यय भई स्त्रीलिङ्गी (रामनाथकी स्त्री-‘रामनाथनी’ भन्न सकिँदैन ) रूप नहुने उल्लेख गरेका छन् (पृ.३२) ।

यिनले ‘वचन-विचार’ शीर्षकअन्तर्गत नामको रूपबाट कुनै पदार्थको यति उति भन्ने सङ्ख्या बुझाउने शब्दलाई ‘वचन’ भन्दैछन् भन्दै यो दुइ प्रकारको ‘एकवचन र बहुवचन’ हुने उल्लेख गरेका छन् (पृ.३५) । यिनले कतिवटा? भन्ने प्रश्न गर्दा ‘एकवटा’ भन्ने बुझाएमा एकवचन र कतिवटा? ‘धेरै’ बुझाएमा बहुवचन हुने उल्लेख गरेका छन् ; जस्तै: छोरो-छोराहरू, चरो-चरा, आदि । यिनले ओकारान्त पुलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग नाम शब्दको बहुवचनमा ओकारको बदलामा ‘आ’ भई आकारान्त सामान्यरूप हुन्छ त्यस्तो शब्द स्त्रीलिङ्गी भएमा त स्त्री प्रत्यय भई दुवै वचनमा हुन्छ , ओकारान्त बाहेक पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग र नपुंसकलिङ्ग सबै नाम शब्दको एक, अनेक दुवै वचनमा सामान्यरूप एकै हुन्छ ; जस्तै : पु.(ए.व) → छोरो, केटो, नपुं. (एकवचन) → लाठो, जाँतो, पु. (अनेक वचन) → छोरा, केटा, र लाठा, जाँता आदि देखाएका छन् । यिनले प्रायः सबै नाम शब्दको अनेक वचनमा सामान्यरूपको पछाडि ‘हरू’ प्रत्यय जोडिन्छ ; सो प्रत्यय प्रायः विकल्पले लोप पनि हुन्छ अर्थात् जोडे पनि हुन्छ (छोरा-छोराहरू, केटा-केटाहरू, आमा -आमाहरू आदि; छोरोहरू, लाटोहरू नहुने उल्लेख छ) नजोडे पनि हुन्छ भनेर उल्लेख (पृ.३६) गरेका छन् । एक-अनेक दुवै वचनमा सामान्यरूप एकै हुने शब्दमा बहुवचन बुझाउनु पर्दा त्यस वाक्यमा परेका विशेषण, सम्बन्धबोधक (षष्ठ्यन्त), क्रियापदबाट, अगाडि-पछाडिका वाक्यबाट पनि त्यस वस्तुको अनेक सङ्ख्या बुझिन सक्छ भने त्यहाँ ‘हरू’ नभने पनि हुन्छ ; जस्तै धेरै मानिस (हरू) , पुस्तक (हरू), उनका छोरा (हरू) आदि भन्ने उल्लेख गर्दै ‘फौज, बथान, जमात, राश, थुप्रो, दोबाटो, चौबाटो, पल्टन’ आदि शब्दमा र ‘गण, समूह, जाति, माला’ आदि जोडेका शब्दमा अनेकलाई बुझाउने भए पनि जमातलाई बुझाउने हुनाले एक जमातलाई भन्दै एकवचनै हुन्छ’ बहुवचन हुँदैन, त्यस्ता बेगला-बेगलै रहेका धेरै जमातलाई बुझाउँदा मात्र बहुवचन हुन्छ; जस्तै - मानिसको फौज, भेडाको बथान, धानको राश आदि उल्लेख गरेका छन् । तर ‘जहान, परिवार, पञ्च’ आदि शब्दबाट र ‘दाज्यूभाइ, कमाराकमारी, छोराछोरी’ आदि (द्वन्द्व

समास भएका) शब्दबाट जमात नबुझिने; अनेक व्यक्ति नै बुझिने हुनाले यस्ता शब्दको एकवचनमा प्रयोग नभई बहुवचनमा मात्र प्रयोग हुन्छ, 'हरू' शब्द जोडे पनि नजोडे पनि हुन्छ (मेरा जहान परिवार (हरू), पञ्च (हरू), छोराछोरीहरू, आदि) उल्लेख गरेका छन् । आदरार्थी-अनेकवचनमा पनि अनेकार्थीमाभैँ त्यसमा अन्वय हुने विशेषण, क्रियापद आदि सबै पदमा बहुवचन हुनाले आदरार्थी र अनेकार्थी नछुट्टिने हुँदा 'एकलाई भनेको हो ? अथवा अनेकलाई भनेको हो ?' भन्ने सन्देह हुने ठाउँमा अनेकलाई बुझाउँदा 'हरू' जोड्ने पछि, यसै अर्थले 'तिमी, हामी, उनी, तिनी' इत्यादि शब्द बहुवचनका हुन् तापनि आदरार्थी वा अनेकार्थी भट्ट नछुट्टिने हुनाले धेरैलाई भन्दै प्रायः 'हरू' जोडेर 'तिमीहरू, हामीहरू, तिनीहरू, यिनीहरू' इत्यादि नै प्रयोग गरिन्छन् (पृ.३९) भनेर उल्लेख गरेका छन्, जुन विचारणीय छ । त्यसैगरी यिनले विशेषणबाट र बाबुआमा इत्यादि आफ्नो नाता लिई एकलाई मात्र बुझाउने सामान्य नामबाट प्रायः एकवस्तुमात्र बुझिने हुनाले आदरार्थी अनेकवचन मात्र हुन्छ, अनेकार्थी हुँदैन, यसैले 'हरू' जोडिदैन, तर त्यही नाम भएका र त्यही नाता भएका धेरै भए त्यस्तामा अनेकार्थी हुन सक्छ; 'हरू' पनि जोडिन्छ; जस्तै 'रामहरू' भन्दै दशरथका छोरा आदि, 'बाबुहरू' भन्दै जेठा, कान्छाबाबुहरू आदि, 'आमाहरू' भन्दै जेठी, कान्छी आदिको बोध हुन्छ भनेर देखाएका छन् भने भाववाचक नाममा 'हरू' नलाग्ने उल्लेख गरेका छन् (दुःखहरू, सुखहरू नहुने) (पृ.४०) । यिनले प्रकारार्थी शब्दहरूमा 'हरू' जोडिने उल्लेख गरेका छन् । वाक्यभित्रका नाम आदि शब्दमा 'ले, लाई, देखि, को, मा' इत्यादि प्रत्यय जोडेर रूप बनाउँदा त्यो शब्दको क्रियासँग सम्बन्ध भएमा कारक हुन्छ भनेर उल्लेख गरेका छन् (पृ.४३) कारक अर्थात् क्रियासँग सम्बन्ध राख्ने छ, थरी हुन्छन् कर्ता (गर्ने), कर्म (गरिने), करण (साधन), सम्प्रदान (उद्देश्य) अपादान (अवधि), अधिकरण (आधार) भनेका छन् । सम्बन्धलाई कारक मानेको देखिँदैन ।

पुरुषको सन्दर्भमा क्रियापदबाट आफ्ना आफ्ना वाच्यको प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरुष हुनु जो बुझिन्छ, त्यसलाई पुरुष भन्दैछन् (पृ.१४१) भन्दै यो तीन प्रकारको- प्रथम, द्वितीय, तृतीय हुने कुरा उल्लेख गरेका छन् । क्रियाको वाच्यलाई कहने प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम (म, हामी) भए प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुषवाचक सर्वनाम (तँ,

तिमी) भए द्वितीय पुरुष, तृतीय पुरुषवाचक सर्वनाम वा नाम (म, हामी, तँ, तिमी बाहेक सर्वनाम, जम्मै नाम) भए तृतीय पुरुष भन्दैछन् भनेर उल्लेख गरेका छन् ।

‘क्रियाका अङ्ग’ शीर्षकमा ‘वाच्य’ को चर्चा गर्दै क्रियापदबाट क्रियाको कर्ता, कर्म अथवा व्यापारमात्र, जो मुख्य भई बुझिन्छ त्यसलाई वाच्य भन्दैछन् (पृ. १३८) भन्दै यो तीन प्रकारको-कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य र भाववाच्य हुने उल्लेख गरेका छन् । कर्तृप्रधान क्रियापदको प्रयोग गरेर कर्ता मुख्य भई बुझिएमा कर्तृवाच्य (जान्छ) , कर्मप्रधान क्रियापदको प्रयोग गरेर कर्म मुख्य भई बुझिएमा कर्मवाच्य (गरिन्छ) र भावप्रधान क्रियापदको प्रयोग गरेर भाव मुख्य भई बुझिएमा भाववाच्य (सुतियो) हुन्छ भन्ने उल्लेख गरेका छन् । सकर्मकको कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य र अकर्मकको कर्तृवाच्य भाववाच्य हुने (पृ. १४०) उल्लेख गरेका छन् । यिनले रूपतात्त्विक आधारमा क्रियाका धातुमा लाग्ने मध्यसर्गको बारेमा चर्चा गरेको देखिँदैन ।

‘काल’ को चर्चा गर्दै यिनले क्रियापदबाट सो क्रिया अहिले हुन लागेको वा अघि भएको वा पछि हुने भन्ने जो बखत बुझिन्छ त्यसलाई काल भन्दैछन् भन्दै यो तीन प्रकारको -वर्तमान , भूत, भविष्यत् हुने उल्लेख गरेका छन् । कालभित्रै भावको चर्चा गर्दै समय कोही स्पष्ट नबुझिई सो क्रियाको प्रार्थना , आज्ञा, सम्भव, अनुमान आदि विशेष कुरा जो बुझिन्छ, त्यसलाई अर्थ भन्दैछन् , सो अर्थ-विध्यर्थ (आज्ञा, प्रार्थना बुझाउने), सम्भावनार्थ (अनुमान, संभव बुझाउने) दुई किसिमका हुने उल्लेख गरेका छन् । यिनले अहिले हुने क्रिया (वर्तमान), अघि भएको (भूत) र पछि हुने ( भविष्यत्) बुझिन्छ भन्दै यी तीन प्रकारका काल र दुई प्रकारका अर्थ गरी जम्मा पाँचलाई क्रियाको अवस्था भन्दैछन् (पृ. १४०) भन्ने उल्लेख गरेका छन् । पक्षको बारेमा यिनले चर्चा गरेको देखिँदैन ।

## २.२.२.२ मध्यचन्द्रिका (२०२१)

‘मध्यचन्द्रिका (२०२१)’ का लेखक सोमनाथ शर्माले ‘रूपभेद’ शीर्षकअन्तर्गत ‘लिङ्ग’ को चर्चा गर्दै पुरुष-जाति वा स्त्री-जाति वा निर्जीव-वस्तु बुझाउने शब्दको रूपलाई ‘लिङ्ग’ भन्दैछन् भन्दै ‘चन्द्रिका ’ लाई नै निरन्तरता दिएको देखिन्छ (पृ. २२) ।

वचनको सन्दर्भमा एक वा अनेक पदार्थ बुझाउने शब्दको स्वरूपलाई 'वचन' भन्दैछन् (पृ.२९) भनेका छन् । यिनले वचन दुई प्रकारको हुने उल्लेख गर्दै यो संख्यासँग सम्बन्धित कोटि भएको सङ्केत गरेका छन् भने 'सर्वनाम' शीर्षकअन्तर्गत पुरुषको चर्चा गर्दै यो तीन प्रकारको हुने उल्लेख पाइन्छ । पुरुषको सन्दर्भमा पनि 'चन्द्रिका' भन्दै खासै भिन्न देखिँदैन । क्रियाको समय जनाउने शब्दलाई काल भनिन्छ भन्दै यो-वर्तमान, भूत र भविष्यत् गरी तीन प्रकारको हुने उल्लेख गरेका छन् । 'पक्ष' का सन्दर्भमा नेपालीमा पक्ष जनाउन क्रियापदका अलग्गै रूपहरू हुँदैनन् । कृदन्तीय क्रियासँग कालिक क्रियापदको योगबाट पक्ष जनाइन्छ । परम्परागत व्याकरणमा पक्षको सन्दर्भमा वर्तमानका तीन पक्ष-सामान्य, अपूर्ण र पूर्ण, भूतका सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण र अज्ञात र भविष्यत्का सामान्य र सम्भावना मानिएको छ (पृ.८६-८७) भनेर उल्लेख गर्दै उदाहरणद्वारा पुष्टि गरेका छन् । यिनले कृदन्तीय तै/दै , (तो/दो) प्रत्ययका सहायताले वर्तमान र भूतकालका क्रियाका कार्यको अपूर्णता, निरन्तरता, 'एको' प्रत्ययका सहायताले पूर्णता व्यक्त भएको देखाएका छन् । यिनले भाव, वाच्यको बारेमा पनि चर्चा गरेको देखिन्छ । तर, जे होस् शर्माले 'चन्द्रिका' लाई नै निरन्तरता दिएको प्रतीत हुन्छ ।

### २.२.२.३ राम्रो रचना मीठो नेपाली (२०२३)

'राम्रो रचना मीठो नेपाली (२०२३)' का लेखक कृष्णप्रसाद पराजुलीले 'शब्दका रूप-विस्तार' शीर्षकमा 'लिङ्ग' को चर्चा गर्दै स्त्री-पुरुष र निर्जीव वस्तुका विषयमा ज्ञात गराउने शब्दको रूप लिङ्ग हो भन्दै यो तीन थरिका हुन्छन्- पुलिङ्ग( पुरुष जातिको बोध गराउने) , स्त्रीलिङ्ग (स्त्रीजातिको बोध गराउने) र नपुंसकलिङ्ग ( भाले-पोथी छुट्टिन नसक्ने निर्जीव वस्तुको बोध गराउने) भनेर उल्लेख (पृ.७१) गरेका छन्; जस्तै: बा, भाइ, मामा (पुलिङ्ग), आमा, बहिनी, माइजू (स्त्रीलिङ्ग) , घर, फूल, कलम (नपुंसकलिङ्ग) (पृ. ७१) । यिनले कतिपय पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग शब्द व्यक्तिवाचक नाम भए आफै बुझिन्छन् ; जस्तै महादेव, राम, कृष्ण (पुलिङ्ग) र पार्वती, सीता, राधा (स्त्रीलिङ्ग) । अरू पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्ग जनाउने शब्द कुनै स्वतः सबै रूप फेरिएर (दाजु-भाउजू, बाबु-आमा, भिनाजु -दिदी आदि) , कुनै प्रत्यय लागेर ('आ/ओ' का ठाउँमा 'इ' लागेर;

काका-काकी, केटो-केटी, शब्दको आखिरी हस्व बनाई 'नी' थपेर; थारु-थरुनी, दमाइ-दमिनी आदि, प्रायः 'आ' भिकेर वा अगाडिको 'आ' लाई 'अ' गरी 'इनी' र 'एनी' थपेर ;कामी-कमिनी, माभी-मभिनी, सुब्बा-सुब्बिनी, सुब्बेनी आदि) विभिन्न नियमले वा छ्यासमिस भएर (गुरु-गुरुमा, फुपाजु-फुपु, भदो-भदै, मामा-माइजू, राजा -रानी आदि) बनेका हुन्छन् भन्ने उल्लेख गरेका छन् (पृ.७२) ।

यिनले स्त्रीलिङ्ग जनाउँदा जात, थर, दर्जा आदिमा स्त्रीलिङ्गी रूप व्यवहार हुने वा पुलिङ्गसरह नै रहने दुवै हुन्छन् । खासगरी पुरुषको माध्यमले चिनाउँदा स्त्रीलिङ्गी रूप चल्ने गरेको छ; स्त्री आफैँ चिनिँदा पुलिङ्ग सरहकै रूप प्रयोग भएका पाइन्छन् ( पृ.७३) भन्ने उल्लेख गरेका छन्; जस्तै : बाहुनी बज्यै, दमिनी दिदी (जात र थर) , मास्टर्नी, सुब्बिनी (दर्जा), अनुराधा शर्मा, विमला लामिछाने, प्राध्यापक सरस्वती आदि । यिनले विशेषणका स्त्रीलिङ्गी रूप देखाउँदा ; राम्रो-राम्ररी , सानो-सानी आदि हुन्छन् भन्दै मानवेतर नामका निमित्त आउने विशेषणमा स्त्रीलिङ्गको यस्तो प्रयोग नहुने तर कतिपय यौगिक शब्दमा भने स्त्रीलिङ्ग रूप भएका (काली ढुङ्गो, काली खोलो, कैली गाई आदि) देखिन्छन् भनेर उल्लेख गरेका छन् । तर यी अतितका कुरा हुन् आजको सन्दर्भमा यस्तो प्रयोग देखिँदैन । यिनले नेपाली भाषामा मानवेत्तर नाम भएका स्त्रीलिङ्ग भए तापनि तिनका क्रियापद पुलिङ्ग जस्तैगरी व्यवहार हुन्छन् (गाई आयो, गाईले दूध दियो आदि) भनेका छन् ।

वचनको सन्दर्भमा एक वा अनेक छुट्याउने शब्दको नाम वचन हो भन्दै यो एउटालाई बुझाउने 'एकवचन' र धेरैलाई बुझाउने 'बहुवचन' गरी दुई थरीका हुने उल्लेख गरेका छन् (पृ. ७३) । यिनले बहुवचन बनाउँदा सङ्ख्येय (गन्न सकिने) नाममा प्रायः 'हरू' जोडिने कुरा उल्लेख गरेका छन् । एकारान्त र ओकारान्त शब्द भए आकारान्त गराएर 'हरू' जोड्नुपर्छ वा आकारान्त मात्र पनि हुन्छ (जस्तै : घर-घरहरू, नदी-नदीहरू, दानु-दाना-दानाहरू, मानु-माना-मानाहरू आदि) भनेर देखाएका छन् । यिनले सर्वनामको बहुवचन बनाउँदा धेरैमा रूप नै फेरिएर 'हरू' लाग्ने कुरा उल्लेख गरेका छन् भने एउटालाई बुझाउने आदरार्थीमा भने कहीं पनि 'हरू' लगाउनु हुँदैन (म-हामी, हामीहरू, ऊ -उनीहरू आदि) भनेका छन् । विशेषणको बहुवचन बुझाउँदा

एकारान्त वा ओकारान्तको आकारान्त हुन्छ, 'हरू' लाग्दैन, आकारान्त नहुने शब्दमा भने नामका पछाडि मात्र 'हरू' लगाइन्छ । (मसिनु-मसिना, , राम्रो -राम्रा , असल छात्र- असल छात्ररु आदि) भन्दै 'वटा' लगाउँदा र 'गण', 'वर्ग', 'वृन्द' वा 'जन' जोड्दा 'हरू' लाग्दैन, यी स्वतः बहुवचन हुन्छन् (जस्तै :दुईवटा, लेखकगण, महिलावृन्द, आदि) तर वर्गका प्रमुखको नामबाट नामकरण हुँदा भने बहुवचन नभई एकवचन मात्र पनि हुन्छ (जस्तै :कालवर्ग, स्वरवर्ग आदि) भनेर उल्लेख गरेका छन् ।

कारक र विभक्तिको सन्दर्भमा क्रियामा भनिएको काम गर्ने नाम-सर्वनामका विभिन्न अवस्था र रूप कारक हुन् भन्दै यी आठ प्रकारका छन्-कर्ता (गर्ने), कर्म (गरिने), करण (कारक), सम्प्रदान (दान), अपादान (स्थान), सम्बन्ध (नाता) , अधिकरण (आधार), सम्बोधन (पुकार) भनेर उल्लेख पाइन्छ । अगाडि गएर यिनले स्वरूपका आधारमा नेपालीमा कारक- सरल, तिर्यक् र सम्बोधन गरी तीन किसिमको भएको चर्चा गरेका छन् । यिनले विभक्ति नलागेरै पनि कारक बुझाउने र मूल रूपमा फेरफार नहुने नाम सर्वनामलाई 'सरल कारक' (अर्जुन गीत गाउँछ), विभक्ति लाग्ने र मूल रूपमा फेरफार हुने कारक 'तिर्यक् कारक' (यस ठिटाले मिहिनेत गरेको छ ) र बोलाउँदा सम्बोधन सूचक अव्यय प्रयोग हुने 'सम्बोधन कारक' (ओ भाइ ! तिमी कता जाने ?) हुन् भनेर चिनाएको देखिन्छ । यिनले 'को/का/की, रो/रा/री, नो/ना/नी' लाई अव्यय भनेको देखिन्छ तर यसको 'लिङ्ग, वचन' अनुसार रूप परिवर्तन हुने भएकाले यसप्रति गहिरो अध्ययन हुनु आवश्यक देखिन्छ ।

काल र पक्षको सन्दर्भमा कालले क्रियाका विभिन्न अवस्था र समयलाई जनाउँछ । यी तीन थरीका छन् - वर्तमान (भइरहेको समय जनाउने), भूत (बितेको समय जनाउने) र भविष्यत् (आउने समय जनाउने) भन्ने उल्लेख पाइन्छ (पृ.७७) । यिनै काल वा समय जनाउँदा धातुमा विभिन्न प्रत्यय वा सहायक क्रिया (यिनलाई 'तिङन्त' वा 'आख्यात' प्रत्यय पनि भनिन्छ) जोडिएर क्रियाको रूप चल्दै जान्छ र त्यसै रूपका आधारमा क्रियाका कालमा विभिन्न प्रकारको कार्य हुने उल्लेख गरेका छन् । यिनले वर्तमानको तीन (सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण), भूतका पाँच (सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण, अज्ञात र अभ्यस्त) र भविष्यत्को सम्भावना समेत गरी चारवटा (सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण,

(र सम्भावना) पक्ष हुने जनाएका छन् । सबै काल र पक्षमा पुरुष र वचन मिलाई रूप चलाउनुपर्ने यिनको राय छ ( म हुन्छु, हामी हुन्छौं आदि) (पृ. ८०) ।

वाक्यमा कर्ता, कर्म र भावको काम बुझाउँदा फेरिने क्रियाको रूपलाई ‘वाच्य’ भनिन्छ । वाच्यको अर्थ क्रियाका सम्बन्धले ‘कहिने’ वा ‘भनिने’ हुन्छ (पृ. ८४) भनेका छन् । यिनले वाच्य तीन थरीका हुने बताएका छन् -कर्तृ, कर्म र भाववाच्य । जुन वाक्यमा कर्ता मुख्य हुन्छ, त्यसअनुसार क्रियापद हुने वाच्य ‘कर्तृवाच्य’ हो । यो सकर्मक र अकर्मक दुवै थरी क्रियाद्वारा बन्छ (म किताब हेर्छु, गीता रमाइन् आदि) भनेका छन् भने जुन वाक्यमा कर्म मुख्य हुन्छ, त्यसअनुसार क्रियापद हुने वाच्य ‘कर्मवाच्य’ हो । यो सकर्मक क्रियाद्वारा मात्रै बन्छ (मबाट किताब हेरिन्छु, काम गरियो, लठ्ठीले आँप फारियो आदि) भनेर बताएका छन् । त्यसैगरी जुन वाक्यमा भाव अर्थात् क्रियाको अर्थ नै मुख्य हुन्छ, त्यसअनुसार क्रियापद हुने वाच्य ‘भाववाच्य’ हो । यो अकर्मक क्रियाबाट मात्रै बन्छ र बुझिन्छ (मबाट/द्वारा बसिन्छु, बसियो, बसिएला आदि) भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यिनले भाववाच्य र कर्मवाच्यका क्रिया बनाउँदा सबै धातुमा ‘इ’ कार थपिने उल्लेख गर्दै सकर्मक क्रियामा इकार थपिएपछि कर्मवाच्यको र अकर्मक क्रियामा इकार थपिएपछि भाववाच्यको क्रिया बन्दछन् (पृ. ८५) भनेर देखाएका छन् । यिनले ‘जा-हु’ को वर्तमान र भविष्यत्मा मात्र दुई रूप चल्छ , अन्त एकोहोरो रूप नै चल्ने देखाएका छन् (गइयो , गइएथ्यो, गइएन, भइयो, भइएथ्यो, भइएन आदि) (पृ. ८५) । भावको छुट्टै चर्चा गरिएको देखिँदैन । ‘नू’ प्रत्यय लगाएर आज्ञावाचक क्रिया बन्छ (तँ हुनू, तैले पढनू, तिमीहरू जानू आदि) (पृ. ८९) भनेर उल्लेख गरेको चाहिँ पाइन्छ । यिनले आदरार्थीको छुट्टै विश्लेषण गरेको देखिँदैन । यिनले कोटिको अध्ययनका क्रममा अर्थतत्त्वभन्दै रूपतत्त्वमा बढी जोड दिएको देखिन्छ ।

## २.२.२.४ भाषाविज्ञान (२०४८)

‘भाषाविज्ञान (२०४८)’ का लेखक चूडामणि बन्धुले ‘व्याकरणात्मक कोटिहरू’ शीर्षकअन्तर्गत व्याकरणात्मक कार्य सम्पन्न गर्नका लागि आउने प्रत्ययहरूद्वारा सङ्केत गरिएका लिङ्ग, वचन, पुरुष, काल, भाव, पक्ष, वाच्य, कारक आदिको चर्चा गरेका छन्।

यिनले 'वचन' को सम्बन्ध विशेषतः सङ्ख्यासँग रहन्छ, तापनि यसले सङ्ख्याको अतिरिक्त अरू किसिमको काम पनि गर्छ भन्दै नेपालीमा आदरार्थी प्रयोगमा पनि बहुवचन (राम आए) आउँछ भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यिनले नेपाली, अङ्ग्रेजी, हिन्दी भाषाहरूमा हामी द्विवचन पाउँछौं र संस्कृतमा तीन वचन र केही मेलानेशियन, भाषामा एक, द्वि, त्रि र बहुवचन गरी चार वचन पनि हुन्छन् भन्दै वचन भाषाको प्रकृतिअनुसार बेग्लाबेग्लै किसिमले हुन सक्ने उल्लेख गरेका छन् । केही भाषामा संज्ञामा मात्र, केहीमा क्रियामा मात्र र केहीमा विभिन्न अरू प्रकारका शब्दमा पनि वचनको बोध गराउने प्रत्यय जोडिएका हुन्छन् भन्ने यिनको विश्लेषण रहेको छ । नेपालीमा नाम, सर्वनाम, विशेषण र क्रियापदमा वचनभेद देखाइन्छन् भन्ने यिनको धारणा छ (पृ. ८४) ।

लिङ्गको सम्बन्धमा 'लिङ्ग' नामसँग सम्बद्ध व्यावहारिकताको कोटि हो । यसले सामान्यतः भाले पोथीलाई छुट्याउँछ, तापनि सर्वत्र सर्वदा यस्तो हुँदैन र कुनै भाषाका स्त्रीलिङ्गी शब्दले पोथी जातिलाई नबताउने पनि हुन सक्छ भन्दै यिनले हिन्दीका 'मूँछ, नाक, टाँग' शब्द स्त्रीलिङ्गी हुन् । संस्कृतको 'दारा' पुलिङ्गी, 'कलत्रम्' नपुंसकलिङ्गी र 'स्त्री' स्त्रीलिङ्गी शब्द हुन् भनेर उदाहरणद्वारा पुष्टि गरेर देखाएका छन् । चन्द्रमाको लागि प्रयोग हुने शब्द स्पेनिशमा स्त्रीलिङ्गी छ भने जर्मन भाषामा पुलिङ्गी छ भन्ने यिनको तर्क छ । नेपालीमा पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग गरी दुई लिङ्ग हुन्छन् । यी नाम, विशेषण र क्रियासँग पनि सम्बद्ध छन् भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यिनले संस्कृतमा पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग र नपुंसकलिङ्ग गरी तीन छन् र जर्मन, पोलिश, अरबेली र रुसीमा पनि तीन लिङ्ग छन् । अफ्रिकाको बान्तु भाषामा यस्ता लिङ्गहरूको सङ्ख्या धेरै रहेको उल्लेख गरेका छन् । लिङ्गरात भेद कुनै भाषामा आकारप्रकारका आधारमा हुन्छ र कुनै भाषामा मानवीय र मानवेतर आधारमा पनि हुन्छ भन्ने यिनको तर्क छ । यिनले नेपालीमा मानवीय प्राणीमा मात्र पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्गको भेद पाइने भन्दै 'केटो आयो' को स्त्रीलिङ्गमा 'केटी आई' हुन्छ तर 'गोरु आयो' को 'गाई आयो' नै हुन्छ, किनभने गाई-गोरु मानवेतर प्राणी हुन् भन्ने विश्लेषण गरेका छन् (पृ. ८४) ।

कारकलाई पनि व्याकरणिक कोटिमा लिइन्छ, भन्दै क्रियासँग सम्बन्ध राखी वाक्यमा रहेर विभिन्न किसिमको काम गर्ने संज्ञा पदका रूपमा यी कारकहरूलाई चिन्न सकिने यिनको दृष्टिकोण देखिन्छ । यिनले कतिपय भाषाहरूमा पदहरूमा नै प्रत्यय जोडेर वा पदको रूपावलीमा परिवर्तन गरेर विभिन्न कारकको बोध गराइन्छ, भने कतिपय भाषाहरूमा वाक्यभित्र खास पदले लिएको स्थानबाट नै कारकको बोध हुन्छ, भन्ने धारणा अघि सारेको देखिन्छ । यिनले कारक सबै भाषामा हुन्छन् तापनि तिनको प्रकृति, प्रयोग र सङ्ख्यामा पनि फरक पर्न सक्छ, भन्दै नेपालीमा ‘ले’ ‘लाई’, ‘बाट’, ‘मा’ जस्ता प्रत्ययहरू थपिन्छ, भने संस्कृतमा ‘कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण र सम्बोधनमा एक, द्वि र बहुवचनमा गरी बेग्लाबेग्लै रूप चल्छन् भन्ने देखाएका छन् ।

नेपालीमा कर्ता र करणमा ‘ले’ अनि कर्म र सम्प्रदानमा ‘लाई’ प्रयोग हुन्छन् र अधिकरणमा धेरै ठाउँमा ‘मा’ को प्रयोग गर्न सकिन्छ । यस्तै किसिमको कारक व्यवस्था अरू भाषामा हुँदैन, तैपनि कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान र अधिकरणजस्ता कारक धेरै भाषामा छन् भन्ने बताएका छन् । वास्तवमा अपादान पनि अधिकरणमा स्थानाधिकरण र कालाधिकरणलाई लिन सकिन्छ, भन्दै ‘राम आज घर गयो’ मा ‘आज’ कालाधिकरण र ‘घर’ स्थानाधिकरण हो भनेर यिनले उदाहरणद्वारा पुष्टि गरेका छन् । यसरी हेर्दा यिनको धारणा कारक कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान र अधिकरण गरी ६ प्रकारको हुने देखिन्छ । सम्बन्धलाई कारक नभनेमा स्वामित्व जनाउने प्रक्रिया भन्न सकिन्छ, भन्ने तर्क दिदै ‘रामकी छोरी, श्यामको घोडा, कृष्णको घर’ जस्ता पदावलीमा यसरी स्वामित्व जनाएको पाइन्छ, भनेर उदाहरणद्वारा पुष्टि गरेका छन् । कारकलाई क्रियासँग सम्बन्धित तुल्याउँदा सम्बन्धलाई राख्न मिल्दैन तैपनि विभिन्न व्याकरणग्रन्थहरूमा सम्बन्ध कारक भनेको पाइन्छ (पृ. ८५) भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यिनको विश्लेषण अगाडिका विद्वान्भन्दै केही भिन्न देखिन्छ ।

पुरुष सर्वनाम र क्रियासँग सम्बद्ध व्याकरणिक कोटि हो । भाषामा पुरुष तीन हुन्छन् -उत्तम पुरुष (आफू), मध्यम पुरुष (दोस्रो व्यक्ति) र अन्य पुरुष (अर्कै व्यक्ति) ।

नेपालीमा सर्वनामअनुसार क्रियारूपमा परिवर्तन हुन्छ, अर्थात् पुरुष जनाउने प्रत्यय क्रियामा पनि जोडिन्छ, भनेर उदाहरणद्वारा यिनले देखाएका छन्; जस्तै:

जस्तै उ.पु: म जान्छु (एकवचन )

हामी जान्छौं (बहुवचन)

म. पु : तँ जान्छस् (एकवचन)

तिमीहरू जान्छौ (बहुवचन)

अ.पु : त्यो जान्छ (एकवचन)

तिनीहरू जान्छन् (बहुवचन)

सर्वनामको प्रयोग समाजमा जस्तो किसिमको सामाजिक, आर्थिक स्तर भएका व्यक्तिसँग हुन्छ त्यस आधारमा सामान्य र आदरार्थी सर्वनाम रूपको प्रयोग हुन सक्छ (जस्तै: तँ, तिमी, तपाईं, हजुर) र क्रियाको प्रयोग पनि तदनुसार नै गर्नुपर्छ भन्ने यिनको विश्लेषण छ । यसरी 'तिमी जान्छौ' मा बहुवचनको प्रयोग भए तापनि वस्तुतः एक व्यक्तिका लागि गरिएको आदरार्थी प्रयोग हो भनेर उल्लेख गरेका छन् (पृ. ८६) यिनले प्रथम पुरुष र मध्यम पुरुषको सम्बन्धको आधारमा आदरार्थी रूपको प्रयोग हुने कुरा देखाएका छन् । कुनै भाषामा उत्तम पुरुष बहुवचन 'हामी' दुई प्रकारका हुन्छन् : समावेशी र व्यावर्तक । समावेशीमा वक्ता र श्रोता वा श्रोताहरू पनि समाविष्ट हुन्छन् तर व्यावर्तकमा वक्ता र अरू हुन्छन् तर श्रोता समाविष्ट हुँदैन । लिम्बूमा यसप्रकारको भेद देखिन्छ । केही भाषामा चतुर्थ पुरुषको प्रयोग पनि हुन्छ (पृ. ८६) भनेर उल्लेख गरेका छन् ।

त्यसैगरी 'काल' समयसँग सम्बद्ध व्याकरणात्मक कोटि हो । काल सामान्यतः तीन छन्- भूत, भविष्यत्, वर्तमान भन्दै यिनले केही भाषामा भूत र भविष्यत्का परोक्ष, निकट र सामान्यभेद; कुनै भाषामा भूत र अभूत पनि हुन्छन् भनेका छन् । नेपाली भाषामा क्रियाका रूपद्वारा कालको बोध हुन्छ भनेर उल्लेख गरेका छन् (पृ. ८६) ।

पक्षको सन्दर्भमा 'पक्ष' क्रियासँग सम्बद्ध व्याकरणात्मक कोटि हो र यसले काम कुन कालावधिमा भयो भन्ने कुरा बताउँछ । समयमा काम भएको वा नभएको, अधिदेखि भएको वा भर्खरै सकिएको बारे पनि यसले सङ्केत गर्छ भनेर स्पष्ट पारेका छन् । यो पूर्ण, अपूर्ण, सामान्य विभिन्न प्रकारको हुनसक्छ भन्दै यिनले कुनै कुनै

भाषामा काल र पक्ष नछुट्टिने किसिमले जोडिएका हुन्छन् भन्ने उल्लेख (पृ. ८६) गरेका छन् ।

वाच्यको चर्चा गर्ने क्रममा 'वाच्य' क्रियासँग सम्बद्ध व्याकरणिक कोटि हो । वाच्यले के सङ्केत गर्छ भने वाक्यभित्रको कर्ताका रूपमा रहेको प्राणी अथवा वस्तुद्वारा कुनै काम सम्पादित भएको छ वा त्यो कामबाट प्रभावित भएको छ भनेर उल्लेख गर्दै नेपालीमा वाच्य सामान्यतः तीन छन्- कर्तृवाच्य (मैले हरिलाई कुटें) , कर्मवाच्य (भात खाइयो ) र भाववाच्य (हाँसियो) भनेर देखाएका छन् । विभिन्न भाषामा वाच्य अरू विभिन्न किसिमका (पारस्परिक र स्वकेन्द्रित ) पनि हुन सक्छन् भन्ने उल्लेख गरेका छन् ।

त्यस्तै 'अर्थ वा भाव' को सम्बन्धमा 'अर्थ वा भाव' क्रियाहरूसँग सम्बद्ध व्याकरणिक कोटि हो र यसको सम्बन्ध पूरै वाक्यसँग रहन्छ भन्दै यसले कामको निश्चितता, अनिश्चितता, आज्ञा, सङ्केत , प्रश्न आदि बुझाउँछ भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यी विभिन्न प्रकारका हुन सक्छन् । नेपालीमा यी चार प्रकारका छन्- निश्चयार्थ (तँ खान्छस्) , आज्ञार्थ (तँ खा) , सङ्केतार्थ (तँले खाएस्) , प्रश्नार्थ (के तँ खान्छस् ?) भनेर देखाएका छन् (पृ.८७) । यसरी यिनले भाषावैज्ञानिक पद्धतिको आधारमा व्याकरणिक कोटिहरूको विश्लेषण गरेर अध्ययनलाई सरल बनाएका छन् भने पूर्व वैयाकरणभन्दै केही भिन्न देखिएका छन् ।

## २.२.२.५ समसामयिक नेपाली व्याकरण (२०४९, ते.सं. २०६२)

'समसामयिक नेपाली व्याकरण (२०४९, ते.सं. २०६२)' का लेखक हेमाङ्गराज अधिकारीले 'सङ्गति' शीर्षमा लिङ्ग, वचन, पुरुष तथा आदरको ' चर्चा गरेका छन् । यिनले 'लिङ्ग', मूलतः नामसँग सम्बन्धित व्याकरणात्मक कोटि हो । यसले नामको खास प्रकृतिलाई जनाउँछ भन्दै यसलाई शाब्दिक (लोग्ने-स्वानी, भाइ-बहिनी, गोरु-गाई, भाले-पोथी), व्युत्पादनात्मक (छोरो-छोरी, नाति-नातिनी, बाघ-बघिनी आदि) र वाक्यात्मक (लोग्ने आयो -स्वास्नी आई) आधारमा देखाउन सकिने उल्लेख गरेका छन् । नेपालीमा व्युत्पादनात्मक आधारमा पुलिङ्ग -स्त्रीलिङ्गको स्थिति कोमलता-कठोरता (रातो गेडो-

राती गेडी, सानो नदी-सानी नदी आदि) र बृहत्त्व र लघुत्व (कोठो-कोठी, डालो-डाली आदि) सँग पनि सम्बन्धित रहेको उल्लेख गरेका छन् । यिनले व्याकरणात्मक लिङ्ग प्राकृतिक लिङ्गभन्दै भिन्न हुन सक्ने उल्लेख गर्दै पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्ग शब्दको व्युत्पादन गर्ने प्रक्रिया नेपालीमा निकै उत्पादक रहेको देखाएका छन् । यिनले नेपालीमा स्त्रीलिङ्गी व्यवस्था रूपायनसँग सम्बन्धित रहे पनि यो कतिपय स्थितिमा व्युत्पादनसँग पनि सम्बन्धित रहेको उल्लेख गर्दै सामान्यतः पुलिङ्ग हुनसक्ने आधारतत्त्वमा 'ई/इ/, इनी/इनि/,नी/नि/, एनी/एनि/ प्रत्यय लागी स्त्रीलिङ्गी शब्दहरू व्युत्पन्न हुने (पृ.२९७) देखाएका छन् साथै उक्त प्रत्ययहरू अन्य वर्ग परिवर्तक नभई लिङ्गगत वर्गपरिवर्तक मात्र हुने देखाएका छन्; जस्तै छोरा-छोरी, केटी, चेली आदि । तर, यसले मात्र वाक्यमा पदहरूको बीचको अन्तरसम्बन्ध प्रदर्शित गर्न नसक्ने बताएका छन् (पृ.७६) । नेपालीमा कतिपय लिङ्गभेदक शब्दहरू अलग-अलग देखिन्छन् भने कतिपय चाहिँ पुलिङ्गबाट व्युत्पादित प्रकृतिका छन् । यसरी लिङ्गभेदक शब्दहरू अव्युत्पन्न र व्युत्पन्न दुबै किसिमका भए पनि अमानवीय सन्दर्भमा चाहिँ नामको लिङ्गले वाक्यात्मक सङ्गति नदर्शाउने देखाएका छन् ; जस्तै : भाले बास्यो - पोथी बास्यो आदि ।

यिनले नामको लिङ्गलाई शब्दस्तरमा हेर्दा मानव-अमानव, पुरुष-स्त्री; सजीव-निर्जीव, मूर्त-अमूर्त, कठोर-कोमल, बृहत्-लघु आदि विभिन्न आधारमा छुट्याउन सकिन्छ तर वाक्यात्मक सङ्गतिको दृष्टिले नेपालमा मानवीय सन्दर्भको मात्र महत्त्व रहेको उल्लेख गरेका छन् (पृ.७६) । मानवीय नाम कर्ता भएर आएमा नाममा निहीत पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्गको लक्षणानुरूप क्रियापदमा पनि रूपहरू फरक पर्ने देखाएका छन्; जस्तै : राम लुगा धुन्छ -सीता लुगा धुन्छे आदि ।

वचनका सन्दर्भमा यिनले नामको सङ्ख्यासँग सम्बन्धित व्याकरणात्मक कोटि वचन हो । त्यसैले यसको सम्बन्ध सङ्ख्येय नामसँग रहेको हुन्छ भन्दै यिनले नेपालीमा एकवचन (एउटा मात्र बुझाउने) र बहुवचन (एकभन्दै बढीलाई बुझाउने) गरी वचन दुई प्रकारको देखाएका छन् । यिनले अमानवीय (सजीव, निर्जीव दुबै) नामहरू वाक्यमा कर्ता भएर आएमा बहुवचनमा 'हरू' वैकल्पिक हुने (बत्ती (हरू) बले, काग (हरू)

कराए आदि) तर मानवीय सङ्ख्येय नामहरू कर्ता बनेमा बहुवचन व्यक्त गर्दा 'हरू' को प्रयोग प्रायः आवश्यक हुने (शिक्षक आयो -शिक्षकहरू आए, भाइ सुत्यो-भाइहरू सुते आदि) उल्लेख गर्दै मानवीय सङ्ख्येय नाममा 'हरू' नलाग्दा आदरार्थी व्यक्त हुने सम्भावना भएकाले त्यस स्थितिमा यहाँ 'हरू' को विशेष महत्व रहने देखाएका छन् । तर 'हरू' विहिन प्रयोगहरू कतिपय स्थितिमा बहुवचनका लागि पनि आउन सक्ने हुँदा तिनले आदर वा बहुवचन के जनाएको हो सन्दर्भबाट मात्र स्पष्ट हुने उल्लेख गरेका छन् ; जस्तै : केटा राम्रा थिए, खरदार आए, ती डाक्टर हुन् आदि । यस्ता प्रयोगबाट वक्ताले मध्यम आदर व्यक्त गर्न चाहेमा बहुवचन बाधित भएको मानिन्छ । यिनले एकभन्दै बढी सङ्ख्येय नाम कर्ता भएमा त्यसबाट स्वतः बहुवचन व्यक्त हुने (खरदार र सुब्बा आए ) उल्लेख गरेका छन् । वचनका दृष्टिले यिनको विश्लेषण 'चन्द्रिका' सँग निकै मेल खाने देखिन्छ । यिनको विश्लेषणबाट वचन नामका सङ्ख्यासँग सम्बद्ध व्याकरणिक कोटि भए पनि यसको प्रभाव सर्वनाम, विशेषण र क्रियासँग देखिन्छ ।

कथनका सन्दर्भमा संलग्न भएका सहभागीहरूको प्रकृतिलाई जनाउने व्याकरणात्मक कोटि पुरुष हो भन्दै यिनले यो विशेषतः सर्वनामसँग सम्बन्धित हुन्छ भनेका छन् ; जस्तै : म किताब किन्छु , तँ बजार जान्छस् , ऊ घर जान्छ । पहिलो वाक्यमा वक्ताको कथ्य विषयवस्तु आफै भएको छ , दोस्रोमा श्रोता र तेस्रोमा वक्ता - श्रोताबाहेकको सन्दर्भ विषयवस्तु बनेको छ । त्यसैले यी तिनै वाक्यमा भिन्न भिन्न सन्दर्भक बनेका 'म, तँ ऊ' सर्वनामले क्रियापदको रूपलाई समेत प्रभावित पारेका छन् भनेर देखाएका छन् । यसबाट के देखिन्छ भने पुरुष मूलतः सर्वनामको व्याकरणिक अभिलक्षण भए पनि नेपालीमा यो क्रियामा समेत पाइन्छ । यिनले नेपालीमा पुरुष तीन प्रकारका (प्रथम पुरुष (वक्तासन्दर्भ) , द्वितीय पुरुष ( श्रोतासन्दर्भ) र तृतीय पुरुष (अन्यसन्दर्भ) हुन्छन् भनेर देखाएका छन् । यिनको यो विभाजन परम्परागत विभाजन भन्दै केही भिन्न देखिन्छ ।

आदरको सन्दर्भमा यिनले आदरले पनि व्याकरणात्मक कोटि दर्शाउँछ । यो मानवीय प्रसङ्गमा बहुवचन वा संयुक्त क्रियाद्वारा व्यक्त हुन्छ । आदर मूलतः श्रोता (

द्वितीय पुरुष) र अन्य सन्दर्भ (तृतीय पुरुष) मा व्यक्त हुन्छ । यसका लागि श्रोतासन्दर्भमा आदरार्थी सर्वनामको र अन्य सन्दर्भमा चाहिँ सर्वनामका साथै आदरसूचक नामको प्रयोग हुन सक्ने बताएका छन् । यिनले आदरार्थीका - आदररहित (तँ, यो , त्यो , ऊ), मध्यम आदर (तिमी, यी, ती, यिनी , तिनी, उनी, यिन, तिन, उन), उच्च आदर (तपाईं, उहाँ), विशेष आदर (यहाँ, आफू) , उच्चतर आदर (हजुर) र उच्चतम आदर (मौसुफ) गरी पाँच तह हुने उल्लेख गरेका छन् । यिनले आदरको सही प्रयोगका लागि व्याकरणात्मक पक्ष मात्र नभई प्रयोग प्रसङ्गको विविधता समेत जिम्मेवार रहने उल्लेख गरेका छन् । यसमा क्रिया पनि आदर अनुरूप नै रूपायित भई लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर छुट्टिने उल्लेख गरिएको छ ।

कालको सम्बन्धमा यिनले काल क्रियापदको समयसङ्केतक कोटि हो । सामान्यतः जसरी वाट्यजगतमा समयलाई भूत, वर्तमान र भविष्यत् गरी तीन क्षेत्रमा विभाजन गरिन्छ, त्यसरी नै व्याकरणात्मक काललाई पनि तीन भागमा छुट्याउन खोजिन्छ । तर रूपायनिक विशेषताहरूले विभेदित भई व्यक्त हुन सकेमा मात्र कालहरू व्याकरणात्मक आधारमा एक अर्काबाट विभेदक मानिन सक्छन् भन्ने बताएका छन् । यिनले उदाहरण दिदै -

श्याम (आज) त्यो पुस्तक पढ्छ । (वर्तमान)

रामले (हिजो) त्यो पुस्तक पढ्यो । (भूत)

हरि (आज/भोलि) त्यो पुस्तक पढ्नेछ । (भविष्यत्)

वर्तमानकाल जनाउन 'पढ्' धातुमा वर्तमानबोधक 'छ' ले र भूत काल जनाउन भूतकालबोधक 'यो' ले रूपात्मक भिन्नता प्रदर्शन गर्न सकेका छन् तर भविष्यत् जनाउन 'पढ्' मा 'ने' प्रत्यय आए पनि त्यसले वर्तमानबाट भविष्यत्लाई विभेदक बनाउन सकेको छैन । बरु वर्तमानकालकै रूपले वर्तमान र भविष्यत् पनि जनाउन सक्छ भन्ने कुरा तलका उदाहरणबाट स्पष्ट हुन्छ; हरि ( अहिले/भोलि) त्यो पुस्तक पढ्छ ।

यसरी वर्तमानबाट भविष्यत्लाई विभेदक बनाउन आएको 'ने' कृत् प्रत्ययले सोअनुरूपको महत्त्व दर्शाउन नसकेको देखाएका छन् ।

परम्परागत व्याकरणमा प्रारम्भ भएको तर समाप्त नभएको काललाई वर्तमान ठानिएको छ, तापनि वर्तमानबोधक क्रियापदका रूपहरूले चाहिँ प्रारम्भ नभएको काललाई पनि सङ्केत गर्न सक्छन् । यसरी नेपालीमा वर्तमानले भविष्यत्को परिधिलाई पनि समेट्ने देखिन्छ । अतः भाषाको रूपात्मक व्यवस्थाका आधारमा नेपालीमा दुई काल मात्र फेला पर्छन्- भूतकाल र अभूतकाल भन्ने यिनको धारणा रहेको छ (पृ.११८) । यिनले अभूतकाल अन्तर्गत वर्तमान र भविष्यत्लाई चिनाएका छन् (पृ.११९), जुन सान्दर्भिक देखिन्छ ।

पक्षको बारेमा चर्चा गर्दै पक्षले खास कालको परिवेशभित्र क्रियाका कार्यको प्रकृति तथा वितरणलाई जनाउँछ । त्यसैले यसबाट क्रियाका विभिन्न अवस्था वा चरणहरू (श्याम पढ्दै छ, श्यामले पढेको छ) व्यक्त हुन्छन् । नेपालीमा पक्ष जनाउन क्रियापदका अलग्गै रूपहरू हुँदैनन् । कृदन्तीय क्रियासँग कालिक क्रियापदको योगबाट पक्ष जनाइन्छ, भन्ने यिनको धारणा रहेको छ (पृ. १२१) । यिनले परम्परागत व्याकरणमा पक्षलाई कालको भेदका रूपमा देखाएको पाइन्छ, जुन उपयुक्त देखिँदैन किनभने पक्षले क्रियाको आन्तरिक प्रकृतिलाई जनाउँछ, भने कालले चाहिँ क्रियाको वाह्य परिवेश मात्र जनाउने हुन्छ, भन्दै कालसँग क्रियाको आन्तरिक कार्यप्रकृतिको खास सरोकार नहुने उल्लेख गरेका छन् । पूर्णता, अपूर्णता वा निरन्तरता आदि कुरा क्रियार्थगत कार्यसँग सम्बन्धित रहन्छन् तर काल चाहिँ भूत वा वर्तमान परिवेश जनाउन मात्र सीमित रहन्छ, भन्ने यिनको विश्लेषण छ । नेपालीमा मुख्यतः चार किसिमका पक्ष व्यक्त हुन्छन्- 'अपूर्ण, पूर्ण, अभ्यस्त र अज्ञात' भन्दै यिनले सामान्यभूत र सामान्य वर्तमान तथा भविष्यत् जनाउनेलाई पक्षमा लिएका छैनन् किनभने यी पक्षबाट चिह्नित हुँदैनन्; यिनको पहिचान कालको आधारमा मात्र हुन्छ, भन्ने धारणा रहेको छ । कृदन्तीय 'दै/तै' प्रत्ययका सहायताले वर्तमान र भूत कालमा क्रियाका कार्यको अपूर्णता, निरन्तरता वा उन्नयन व्यक्त भएको देखाएका छन् भने कृदन्तीय 'एको' प्रत्ययका सहायताले वर्तमान र भूतकालमा पूर्णता व्यक्त भएको देखाएका

छन् । त्यसैगरी 'ए/इ' प्रत्ययान्त कृदन्तीय क्रियासँग वर्तमानकालिक 'छ' का रूपहरूको योगबाट बनेका प्रयोगहरूले क्रियाको अज्ञातता व्यक्त गरेको देखाएका छन् । धातुमा भूतकालिक 'थि' का रूपहरू सँग सम्बन्धित कुञ्चित रूपहरूबाट अभ्यस्त पक्ष जनाइएको पाइन्छ ।

क्रियाद्वारा वक्ताको मनोभाव वा मनोवृत्ति जनाउने कोटिलाई भाव वा वृत्ति भनिन्छ भन्दै यिनले नेपालीमा व्याकरणात्मक दृष्टिले चिह्नित हुन सक्ने भाव मुख्यतः तीन किसिमका - 'विध्यर्थ, सम्भावनार्थ र सङ्केतार्थ' छन् भनेर देखाएका छन् । यसबाहेक कुनै विशेष भाव नजनाई वाक्यको सामान्य अवधारणा मात्र बुझाउनेलाई सामान्यार्थ भनिएको पाइन्छ (पृ.१२५) । यिनले मुख्यतः आज्ञा र इच्छाको मनोभाव बुझाउनेलाई विध्यर्थ भनिन्छ भन्दै यसबाट प्रयोग सन्दर्भअनुसार अनुरोध, आदेश, प्रार्थना, सल्लाह, प्रस्ताव वा कामनासमेत बुझिन सक्छ भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यिनले नेपालीका द्वितीय पुराष्मा मात्र आज्ञार्थ भावलाई बुझाउने रूपायक प्रत्ययहरू (अ, ऊ, नू, ओ) रहेको उल्लेख गरेका छन् भने नेपालीका सबै पुरुष र वचनमा इच्छार्थ भाव बुझाउने रूपायक प्रत्यय (ऊँ, औँ, एस्, ए, ओस्, ऊन्) रहेको देखाएका छन् (पृ.१४८)। सम्भावनार्थले निश्चित भइनसकेका कुराको पूर्वानुमान वा सम्भावना बुझाउनेलाई सम्भावनार्थ भनिन्छ भन्दै भविष्यत्कालको परिवेशमा सम्भावना व्यक्त भए पनि भविष्यत्बाट यो स्पष्टतः फरक हुन्छ भन्ने देखाएर भविष्यत्ले निश्चयार्थ र सम्भावनार्थले अनिश्चयार्थ जनाएको उल्लेख गरेका छन् । ('जनताले उसलाई नेता बनाउँछन्/बनाउनेछन्' भविष्यत्मा र 'जनताले उसलाई नेता बनाउलान्' सम्भावनामा) । त्यसैगरी क्रियाहरूका बीच अनुमानात्मक वा काल्पनिक कारण र कार्य (सङ्केत्य र सङ्केतित) को स्थिति रहेमा सङ्केतार्थ व्यक्त हुने उल्लेख गरेका छन् । एकभन्दै बढी क्रियाहरू संलग्न रहने हुनाले यसमा दुई उपवाक्यहरू (सर्त-उपवाक्य र कार्य- उपवाक्य) निहित हुने उल्लेख गरेका छन् ।

वाच्यको सन्दर्भमा पनि यिनले वाक्यमा कर्ता, कर्म वा भाव (क्रिया) मध्ये कुनै एकलाई प्रधान मान्ने व्याकरणात्मक युक्तिलाई 'वाच्य' भनेका छन् । यो मुख्यतः क्रियासित सम्बन्धित भएर व्यक्त हुन्छ भन्दै यिनले वाक्यतत्त्वको प्रधानता वा

वाच्यताका आधारमा नेपालीमा वाच्यहरू -कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य र भाववाच्य गरी तीन प्रकारका हुने उल्लेख गरेका छन् । यिनले वाक्यमा कर्ता प्रधान वा वाच्य भई प्रयोग हुने व्याकरणात्मक युक्तिलाई कर्तृवाच्य भनिन्छ भन्दै कर्तृवाच्यको प्रयोग सकर्मक अकर्मक दुवै क्रियाहरूमा हुने उल्लेख गरेका छन् (जस्तै : म भोलि यहीं बस्छु , श्यामले हरिलाई पिट्यो आदि) कर्तृवाच्यमा कर्ता र क्रियापदको बीच अन्वय भई कर्ताअनुसार क्रियापदको लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदरसमेतको सङ्गति रहने उल्लेख गरेका छन् । सकर्मक क्रियामा आउने कर्मलाई कर्ताका रूपमा स्थापित गरी वाक्य प्रस्तुत गरिउमा कर्मवाच्य हुन्छ भन्ने यिनको विश्लेषण छ । जस्तै श्यामद्वारा हरि पिटियो) । त्यसैगरी वाक्यमा क्रिया वा क्रियाका भावको प्रधानता रहने युक्तिलाई भाववाच्य भनिन्छ भन्दै यस्तो स्थिति अकर्मक क्रियामा र कतिपय स्थितिमा सकर्मक क्रियामा पनि देखिने उल्लेख गरेका छन् (जस्तै: कहिले आइयो?) । भाववाच्यमा क्रियापद सधैं तृतीय पुरुषको पुलिङ्गी,एकवचनमा आउने उल्लेख गरेका छन् ।

यसरी यिनको विश्लेषण केहीमात्रामा परम्परावादीसँग मिले पनि यिनले अर्थतात्त्विक र रूपतात्त्विक दुवै दृष्टिले विश्लेषण गरी अध्ययनलाई सजिलो पारेका छन् ।

## २.२.२.६ भाषाविज्ञानको रूपरेखा (२०५१)

‘भाषाविज्ञानको रूपरेखा (२०५१)’ का लेखक टङ्कप्रसाद न्यौपानेले ‘व्याकरणिक कोटिहरू’ शीर्षकअन्तर्गत ‘लिङ्ग, वचन, पुरुष, कारक, काल, वाच्य, अर्थ (वृत्ति)’ का बारेमा अध्ययन विश्लेषण गरेका छन् ।

‘लिङ्ग’ को बारेमा चर्चा गर्दै यिनले सामान्यतया लिङ्गको अर्थ हो-वस्तु वा सत्वप्रधान वस्तुको चिह्न जसबाट वस्तुलाई चिनिन्छ वा वस्तुको प्रकृतिलाई जसले चिनाउँछ त्यो लिङ्ग हो भनेका छन् । यिनले संसारका सारा वस्तुहरूमध्ये सजीवचाहिँ पुरुष वा भाले, स्त्री वा पोथी र निर्जीवचाहिँ पुंसत्व र स्त्रीत्व नभएका हुन्छन् भन्दै यस प्राकृतिक आधारमा भाले जातिलाई पुलिङ्ग , पोथी जातिलाई स्त्रीलिङ्ग र सास नभएका

निर्जीवलाई नपुंसकलिङ्ग भन्ने चलन छ भनेका छन् (पृ.२६४) । यिनले प्रकृतितः जुनसुकै लिङ्ग होस्, भाषाको चाहिँ आफ्नै किसिमको लिङ्गव्यवस्था हुनसक्छ । यिनले भाषामा लिङ्ग भन्नाले प्राकृतिक पुरुष वा स्त्री भन्ने नबुझिएर व्यवस्थित व्याकरणिक लिङ्ग भन्ने बुझिन्छ भन्दै यसैले भाषामा निर्जीवलाई बुझाउने शब्द पनि पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्गमा प्रयुक्त हुन्छन् भन्ने उल्लेख गरेका छन् । नेपाली भाषामा केही नाम, केही विशेषण र क्रियापदहरूमा लिङ्गभेद देखिन्छ । सामान्यतया सर्वनामहरूमा लिङ्गगत प्रभाव नभएको उल्लेख गरेका छन् । यिनले लिङ्ग सबै भाषामा उति नै र उस्तै किसिमका हुँदैनन् । कुनै भाषामा पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग जस्ता भेद हुन्छन् भने कुनैमा सजीव, निर्जीव, कुनैमा मनुष्यवाचक र मनुष्येतर त कुनैमा स्थूलता, क्षुद्रतावाचक । संस्कृतमा पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग किसिमको भेद छ, नेपालीमा मनुष्यवाचक र मनुष्येतरवाचक लिङ्ग व्यवस्था छ भनेर देखाएका छन् ।

वचनको अर्थ सङ्ख्या हो भन्दै यिनले यो व्याकरणिक कोटिको यस्तो एक भेद हो, जसले वस्तु वा सत्त्व वा द्रव्यको सङ्ख्या बताउने प्रयास गर्छ तर वस्तुको वास्तविक सङ्ख्या र भाषागत प्रयोगका सङ्ख्यामा भिन्नता रहेको उल्लेख गरेका छन् । यिनले वचनको निर्माण विवक्षाले गर्छ, निर्धारण वा भेद-अभेद छुट्याउने कामचाहिँ त्यसका रूपले वा रूपायनले गर्ने बताएका छन् । यिनले प्रत्येक भाषामा आफ्नै परम्परागत वचनव्यवस्था हुन्छ । वचन वस्तुतः नामिक पद वा सत्त्व वा द्रव्यबोधक पदको हुन्छ भन्दै यसको अभिव्यक्ति नाममा प्रत्यय लागेर पनि हुनसक्ने उल्लेख गरेका छन् (विद्यार्थी आए) । यिनले नेपालीमा एकवचन र बहुवचन छन् भन्दै यसको प्रभाव नामिक पद (नाम, सर्वनाम, विशेषण) र क्रियापदमा (समापिका क्रियामा) देखिने उल्लेख गरेका छन् ।

पुरुषका सन्दर्भमा कुनै पनि अभिव्यक्तिका लागि तीन व्यक्ति वा वस्तुको आवश्यकता पर्छ कुनै विषयको वर्णन, त्यसको श्रोता र वर्णन गर्ने व्यक्ति वा वक्ता । यसरी वक्ता, श्रोता र विषयसित सम्बन्धित व्याकरणिक कोटिलाई पुरुष भनिन्छ । यस अनुसार सर्वनामहरू वक्ता (म, हामी) प्रथमपुरुष, श्रोता (तँ, तिमी) द्वितीय पुरुष र

विषय (त्यो, यो, ऊ र सबै नाम) तृतीय पुरुष मानिन्छन् र यसअनुसार क्रियासँग सङ्गति हुन्छ भन्ने उल्लेख (पृ.२६९) गरेका छन् ।

जसले कुनै क्रिया गर्छ त्यो साधन कारक हो । वस्तुतः क्रियालाई सिद्ध गर्ने पद कारक हो । क्रिया साध्य हो भने कारक साधन । वाक्यमा क्रियासँग प्रत्यक्ष सम्बन्ध राखी कर्म सिद्धिमा सक्रिय हुने पद नै कारक हुन् । कार्यसिद्धि कुनै द्रव्यले, वस्तुले वा सत्त्वले, नामिक पदले मात्र गर्दछ ; यसैले क्रिया-सिद्धिका लागि आफ्नो भूमिका स्पष्ट गर्न नामिक पदमा आउने परिवर्तन वा रूपायनलाई यिनले कारक मानेका छन् । यिनले फिल्मयोरलाई उद्धृत गर्दै क्रिया र कारकका योगलाई वाक्य भनेर परिभाषित गर्दै कारक निर्धारणको मूल आधार भूमिकामूलक सम्बन्ध हो, कार्यव्यापारात्मक सम्बन्ध होइन भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यिनले फिल्मयोरलाई उद्धृत गर्दै विश्वका सबै भाषाहरूमा आन्तरिक संरचनामा केही मूल कारक हुन्छन् , ती सबै भाषाका समान सम्पत्ति हुन् भन्दैछन् । भाषाका बाह्य संरचनामा अलग-अलग भाषाहरूमा भिन्न-भिन्न रूपमा यी कारकीय सम्बन्धहरूको अभिव्यक्ति हुन्छ भन्ने उनको दृष्टिकोण उल्लेख गरेका छन् । फिल्मयोरका वर्गीकरणअनुसार देवी गौतमले नेपालीमा निम्नलिखित किसिमका कारक भएको उल्लेख (पृ.२७४) गरेर देखाएको चर्चा यिनले गरेको देखिन्छ -

१. प्रकर्ता वा अभिकर्ता (सक्रिय कर्तृत्व शक्ति भएको प्राणीमात्र; राम दगुर्छ ।)
२. अनुभवकर्ता वा भोक्ता (मानसिक स्थितिको अनुभव गर्ने; कार्यप्रति निस्क्रिय, जस्तै : मलाई भोक लाग्यो) ।
३. करण (कार्यमा कर्ता वा साधनका रूपमा प्रयुक्त हुने, अप्राणीवाचक करण जस्तै: मैले लठ्ठीले सर्प मारें) ।
४. सम्प्रदान (क्रियाद्वारा अभिज्ञप्त नै कार्यद्वारा प्रभावित हुने, कुनै कुरालाई स्वीकार गर्ने, कुनै कुरा प्राप्त गर्ने, जस्तै : म हरिका कामबाट प्रभावित छु) ।

५. तटस्थ वा उदासिन ( क्रियाद्वारा अभिज्ञप्त कार्य वा स्थितिप्रति तटस्थ, कार्य वा स्थितिको असर पर्ने तर उदासिन रहने; जस्तै : रामले लठ्ठी दोबायो, हरिले मलाई कुट्यो आदि) ।
६. स्रोत (गतिबोधक क्रियामा वस्तुको गति सुरु हुने बिन्दु र स्थिति परिवर्तन हुने क्रियामा परिवर्तन हुने सुरुको स्थिति; जस्तै :मैले माटाबाट मूर्ति बनाएँ आदि) ।
७. लक्ष्य (गतिबोधक क्रियामा गतिको अन्तिम चरण र स्थिति परिवर्तीत क्रियामा परिवर्तीत अन्तिम स्थिति; जस्तै: म घर गएँ, राम खोलासम्म पुग्यो आदि) ।
८. अधिकरण (क्रियाद्वारा अभिज्ञप्त कार्य वा स्थितिको स्थान वा अवस्थितिप्रति उन्मुख हुने, आश्रित हुने, निहित हुने वा अन्योन्य सम्बन्ध रहने अर्थ वा क्रियाद्वारा अभिज्ञप्त कार्य अथवा स्थितिमा परिवर्तन नहुने तर वस्तु-वस्तुका बीचमा सम्पर्क भइरहने; जस्तै: तराईमा गर्मी छ, मैले रामको खुट्टा ढोगेँ, टेबुलमाथि किताब छ आदि) (पृ. २७४-२७५) ।

यिनले उल्लेख गरेको देवी गौतमको यो विश्लेषण बढी सान्दर्भिक लाग्छ । कालको चर्चा गर्दै सामान्यतया काल भनेको क्रिया व्यापारको समय निर्धारित गर्ने व्याकरणिक कोटि हो । कुनै घटना वा कामको समय कालले अभिव्यक्त गर्छ तर काल र समय एउटै होइनन् भन्ने यिनको तर्क रहेको छ । समय भौतिक हुन्छ कालचाहिँ धारणागत वृद्धिस्थ तथा व्याकरणिकमात्र । यसैले समयलाई अभिव्यक्त गर्ने प्रयासका निमित्त धातुमा हुने रूपरचना विशेषलाई मात्र काल भनिन्छ भन्ने यिनको विश्लेषण देखिन्छ । वाक्यमा समयलाई बुझाउने कुनै शब्द आउन सक्छ तर त्यसलाई काल मानिँदैन (म भोलि जान्छु) भनेका छन् । यिनले अङ्ग्रेजी भाषामा भैं नेपालीमा पनि व्याकरणिक काल दुईवटा-भूत र अभूत छन् भनेर उल्लेख (पृ. २८४) गरेका छन् । अभूत काल भन्नाले यहाँ भुतकालबाहेकका काललाई सङ्केत गर्ने रुपिमयुक्त रचनालाई लिइएको उल्लेख गरेका छन् (जस्तै: भूत-राम घर गयो, अभूत- राम भोलि घर जान्छ) । यिनले नेपालीमा खासकाल भूतकालमात्र भएको उल्लेख (पृ. २८४) गरेका छन् ।

पक्षको सन्दर्भमा यिनले पक्ष भनेको क्रियाद्वारा अभिव्यक्त कालको विशेष अवस्था र अवधि बुझाउने एक व्याकरणिक कोटि हो । यसैले यसलाई विशेष काल पनि भनिन्छ भन्दै पक्षले कालभन्दै विशिष्ट कुरा बुझाएर यससँग भिन्नता राख्छ यसका लागि क्रियापदमा रूपायन हुन्छ भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यिनले वस्तुतः नेपालीमा सामासिक प्रक्रियाद्वारा पक्षको बोध हुन्छ; संस्कृतमा जस्तो विशेष प्रत्यय लागेर होइन। यस अर्थमा नेपालीमा पक्ष छैन भन्ने यिनको तर्क छ तर यिनको यो तर्कले अर्थतत्त्वमा मात्र ध्यान दिएर रूप तत्त्वलाई बेवास्ता गरेको देखिन्छ । त्यसैले यो विश्लेषण यथार्थभन्दै टाढा देखिन्छ ।

वृत्ति वा अर्थ भनेको क्रियावाट काल र पक्षभन्दै भिन्न रूपमा बुझिने एक व्याकरणिक धारा हो । यसअनुसार वास्तविकता , निश्चय, अनिश्चय, इच्छा, आज्ञा, आवश्यकता आदि विशेष भाव बुझाउन क्रियामा हुने रूपायन विशेषलाई भाव वा वृत्ति वा अर्थ भनिन्छ । जस्तै 'जाऊ' यस क्रियापदमा 'जा+ऊ' दुईको योग छ , यहाँ कुनै काल र पक्ष छैन - केवल धातुमा लागेको प्रत्ययले क्रियाको विशेष अर्थ, पुरुष आदि मात्र जनाएको छ । नेपालीमा सामान्य वा विधान (जान्छ, गयो) विधि (जाओस्), संभावना (जाला, गयो होला) र सङ्केत वा हेतु (भए, पाए, गए, आदि) चार अर्थ मानिन्छन् भनेर उल्लेख गरेका छन् । सङ्केतार्थको अभिव्यक्ति समापिका क्रियापछि निपात, संयोजक लगाएर पनि गरिन्छ । यस अवस्थामा त्यो क्रिया सङ्केतार्थ हुँदैन उपवाक्य मात्र सङ्केतार्थक हुन पुग्छ भन्ने यिनको तर्क छ (जस्तै: पानी पियो भने बाली सप्रिन्छ ) ।

वाच्यको चर्चा गर्दा यिनले वाक्यभित्रका कुनै पदलाई मुख्य रूपमा बुझाउन क्रिया वा धातुमा हुने रूपान्तरले कुनै व्यापार वा सबैलाई मुख्य पार्दछ । कुन पद मुख्य छ भन्ने कुरा अर्थसँग सम्बद्ध भए पनि क्रियाका रचनाद्वारा सङ्केतित हुन्छ । खास गरेर रूपायनशील भाषामा क्रिया (समापिका र असमापिका - भावप्रधान) र त्यस पदका बीच व्याकरणिक कोटिमा भएका सङ्गति वा मेलद्वारा वाच्य निर्धारित हुन्छ भनेर देखाएका छन्; जस्तै

क.

ख.

१ मैले कुटेको थिएँ ।

१ तँ कुटिएको थिइस् ।

तँलाई कुटिएको थियो ।

२ मैले तिनीहरूलाई कुटेको थिएँ ।

२ तिनीहरू कुटिएका थिए ।

तिनीहरूलाई कुटिएको थियो

३ हिजो मैले कुटेका ती मान्छेहरू आए ।

३ हिजो कुटिएका ती मान्छेहरू आए ।

उपरोक्त वाक्यहरूमध्ये (क) समूहमा रेखाङ्कित पदहरू क्रियाका वाच्य छन् भन्ने कुरा ती पदका लिङ्ग वचन, पुरुषका मेलबाट थाहा हुन्छ (क) वर्गका अन्तिम वाक्यमा दुईवटा पद रेखाङ्कित छन् -मैले, मान्छेहरू । यहाँ 'कुटेका' असमापिका क्रियाको कर्ता 'म' छ तर क्रियाको सङ्गति कर्तासँग छैन 'मान्छेहरू' कर्मसँग छ र त्यो 'कुट' धातुको कर्म 'मान्छे' समग्र वाक्यमा 'आए' केन्द्रीय क्रियाको कर्ता छ; त्यसै अनुसार क्रियापदमा सङ्गति छ । यसैले ती वाच्य हुन् भनेका छन् । (ख) समूहमा क्रमशः पहिला (१) वाक्यमा रेखाङ्कित 'तँ' कर्म हो , त्यसअनुसार क्रियापद छ । (२) वाक्यमा कर्म 'तँ' छ तर क्रियापद त्यसअनुसार छैन, दोस्रा वाक्यका (१) वाक्यमा रेखाङ्कित कर्म छ र उद्देश्य भई क्रियालाई त्यसले नियन्त्रित गरेको छ, तर (२) वाक्यमा कर्म भएर पनि क्रियामा त्यसको नियन्त्रण छैन; तेस्रा वाक्यमा 'मान्छेहरू' को दोहोरो भूमिका छ - यो 'आए' क्रियाको कर्ता र 'कुट' क्रिया वा धातुको कर्म छ । यसको (१) मा 'कुटिएका' यहाँ 'कर्म' को विशेषण छ तर त्यो 'मान्छेहरू' द्वारा शासित छ, यसमा रहेका [-इ-] ले कर्मलाई बुझाएको छ भने 'आए' ले कर्तालाई जनाएको छ । यसैले यस वाक्यमा 'मान्छेहरू' वाच्य छ - समापिका र असमापिका दुवैको । पहिला र दोस्रा वाक्यको (२) नं का वाक्यहरूमा चाहिँ क्रिया व्यापारलाई नै विशेष रूपमा वाच्य बनाइएको छ । त्यसैले क्रियापदको सङ्गति भाव वा क्रियाव्यापारसितै देखिन्छ भनेर देखाएका छन् ।

वाक्यमा वाच्यको मूल निर्धारण समापिका क्रियामा आएका रूपायनका आधारमा गर्ने प्रचलन अनुसार कर्तृवाच्य र अकर्तृवाच्यहरू प्रायः भाषामा पाइन्छन् । तर वाक्यतत्त्वको प्रधानता वा वाच्यताका आधारमा नेपालीमा वाच्यहरू कर्तृ, कर्म र भाववाच्य गरी तीन किसिमका हुने देखाएका छन् ।

### २.२.२.७ नेपाली वाक्य व्याकरण (२०५४)

‘नेपाली वाक्य व्याकरण (२०५४)’ का लेखक माधवप्रसाद पोखरेलले ‘वाच्य’ को चर्चा गर्दै क्रियाको अन्तिम प्रत्यय वाक्यमा वाचक हुन्छ, त्यससँग मेल राख्ने नाम नै वाच्य हो । यसरी क्रियाको अन्तिम प्रत्ययले कर्ता बुझाए भने कर्तृवाच्य, कर्म बुझाए कर्मवाच्य र कर्ता र कर्म दुवै बुझाएन भने भाववाच्य हुन्छ भन्दै उदाहरणद्वारा पुष्टि गरेका छन् ; जस्तै :

मैले बेहुली देखें (देख्+एँ)

बेहुली देखिई (देख्+इ+ई) ।

यिनले कर्तृवाच्य (क्रियापदबाट कर्ता बुझिने), कर्मवाच्य (क्रियापदबाट कर्म बुझिने र भाववाच्य (क्रियापदबाट कर्ता र कर्म नबुझिएर धातुको भाव मात्र बुझिने) गरी वाच्य तीन प्रकारका छन् भन्दै अकर्मक क्रियाबाट मात्र नेपालीमा भाववाच्य बन्छ भन्ने नेपाली व्याकरणकारहरूको धारणा गलत रहेको उल्लेख गरेका छन् । हो, अकर्मक क्रियाबाट कर्मवाच्य बन्दैन तर सकर्मक क्रियाबाट तीनैवटा वाच्य बन्छ (पृ.१) भनेर उल्लेख गरेको पाइन्छ । धातु र प्रत्ययका बीचमा मध्यसर्ग ‘इ’ छैन भने कर्तृवाच्य र ‘इ’ भए कर्म र भाववाच्य हुने उल्लेख गरेका छन् ।

‘क्रियाको भाव’ शीर्षकमा भावको चर्चा गर्दै यिनले वक्ताको मनोभाव वा मनसायको भिन्नतालाई व्यक्त गर्ने क्रियाको रूपतत्त्व वा संरचनाको भिन्नतालाई क्रियाको भाव भनिन्छ भनेका छन् ; जस्तै :

## रूपभेद

गर्

गर्+ओस्

गर्+ला

## अर्थभेद

आज्ञा (विधि)

इच्छा

संभावना

यिनले अकरणद्वारा , कालद्वारा परीक्षण गर्दै भावलाई प्रस्ट पारेका छन् । यिनले अकरण बनाउँदा 'न' प्रातिपदिकका अन्त्यमा आउँछ भने त्यस भावलाई सामान्यार्थ वा निश्चयार्थ भन्ने चलन, नआएमा असामान्यार्थ भन्नु ठीक होला (पृ.१७) भनेका छन् ।

सामान्यार्थमा मात्र भूतकाल र वर्तमानकालको भेद हुन्छ, असामान्यार्थमा कालभेद हुँदैन भन्दै असामान्यार्थ तीन किसिमको -'विध्यर्थ, इच्छार्थ र संभावनार्थ' हुन्छ भनेका छन् । आज्ञा बुझाउने भाव विध्यर्थ हो भन्दै विध्यर्थमा मध्यमपुरुष मात्र हुन्छ अरू भावमा पुरुषको भेद (अन्य, मध्यम, उत्तम) पाइन्छ भनेका छन् । प्रायः जुनसुकै क्रियाको धातु रूप नै विध्यर्थ (गर्) एकवचनको रूप हुन्छ । आंशिक सराप वा इच्छा व्यक्त गर्ने क्रियापदको भावलाई इच्छार्थ भनिन्छ । बोलचालमा मध्यमपुरुषको यच्छार्थ र विध्यर्थ छ्यासमिस गरेको पनि पाइन्छ (गरोस्, गरून्, गरेस्, गरूँ, गरौँ) । संभावना वा अनिश्चय व्यक्त गर्ने क्रियाको भावलाई संभावनार्थ वा अनिश्चयार्थ भनिन्छ (गर्ला, गर्लान्, गर्लास्, गरौला, गरूला, गरौला) यसरी धातुपछाडि थपिने प्रत्ययहरूका भुष्पाको भेद र वक्ताको मनसायको भेदलाई क्रियाका भावको भेद भनिन्छ (पृ. १९) भनेर उल्लेख गरेको पाइन्छ ।

'क्रियाको काल' शीर्षकमा कालको चर्चा गर्दै क्रियापदमा पाइने उपसर्ग, प्रत्यय र मध्यसर्ग जस्ता रूपका आधारमा भाषामा टड्कारै देखापर्ने समयको भेद नै काल हो । यो समयको भेद सधैं कुनै कुरो बोल्ने बेला (अहिले) का तुलनामा क्रियाको संरचनामा देखापर्छ (पृ.१९) भनेका छन् । प्रत्ययका आधारमा नेपालीमा काल दुई प्रकारको छ - भूत र अभूत भन्दै अन्य पुरुष एकवचन पुलिङ्गी क्रियापदका अन्त्यमा 'यो' प्रत्यय लागेको क्रियापदले कहिल्यै पनि अहिलेभन्दै पछाडिको घटना

बुझिदैन; अहिलेभन्दै अगाडिको घटना मात्र बुझिन्छ (जस्तै: पानी पयो, लुगा उठा, भोक लाग्यो, मलाई खाजा चाहियो) तर अन्य पुरुष एकवचन पुलिङ्गी क्रियापदमा 'यो' प्रत्यय लागेको छैन भने त्यसले अहिलेको घटना, अहिलेभन्दै अगाडिको घटना र अहिलेभन्दै पछाडिको घटना पनि बुझाउन सक्छ । जस्तै : पानी परेछ, पानी पर्दैछ , पानी पर्नेछ । त्यसैले 'यो' प्रत्यय लाग्ने प्रातिपदिकलाई भूतकाल र 'यो' नलाग्ने प्रातिपदिकलाई अभूत वा उदासीन काल भन्न सकिन्छ (पृ. २०) भनेका छन् । नेपाली व्याकरण परम्पराले उदासीन वा अभूतकाललाई वर्तमानकाल भन्ने गरेको उल्लेख (पृ. २०) पाइन्छ । नेपालीमा दुई किसिमका मात्र काल छन् भन्ने कुरो सहायक क्रिया 'थियो' (भूत) र 'छ' (अभूत) दुईवटा मात्र भएकाबाट पनि छर्लङ्ग हुन्छ । त्यस्तै 'भयो' (भूत) र 'हो' (अभूत) यी दुई योजिका (कोपुला) बाट पनि त्यही निष्कर्षमा पुगिने उल्लेख गरेका छन् । यिनले भूतकाल (यो, ई, इस, यौ, एँ, यौँ) र अभूतकाल (छन्, छस्, छौं छु, छौ, हो, हुन् होस् आदि) का प्रत्ययहरूको रूपावली प्रस्तुत गरेर अध्ययनलाई सरल बनाएका छन् ।

**‘नामको आदरार्थी’** शीर्षकमा आदरको चर्चा गर्दै मानवीय कोटिका नेपाली नाममध्ये सम्बन्धित नाम (वा सर्वनाम) ले बुझाइने व्यक्तिको सामाजिक प्रतिष्ठा र दुई नाम वा सर्वनामले सङ्केत गरिएका व्यक्तिहरू (वक्ता र अन्य) को बीचको सामाजिक अन्तर्सम्बन्ध देखाउने पदसङ्गति, वाक्यगठन र रूपतत्त्वका भेदलाई नामको आदरार्थी भनिन्छ भनेर उल्लेख गरेका छन् । आदरका दृष्टिले नेपाली मानवीय नाम (वा सर्वनाम) लाई चार कोटिमा बाँडेका छन्- दरबारी आदरार्थी (हजुर , मौसुफ) , उच्च आदरार्थी (तपाईं, उहाँ), मध्यम आदरार्थी ( तिमी, उनी /तिनी) र निम्न आदरार्थी (तँ, ऊ/त्यो) यसलाई सर्वनाम, कोटिकार पदसङ्गति, पुलिङ्ग , स्त्रीलिङ्ग, वचन, पुरुषका आधारमा विश्लेषण गरेर देखाई अध्ययनलाई सरल बनाएका छन् ।

**‘नामको लिङ्ग’** शीर्षकमा लिङ्गको परिभाषा दिँदै जुनसुकै भाषाका वाक्यमा नामसँग अर्को कुनै शब्द (सर्वनाम, विशेषण, कोटिकार, सम्बन्धपद र क्रिया) को पदसङ्गतिको भेदले जति किसिमको अर्थभेद देखिन्छ त्यसलाई लिङ्ग (जेण्डर) भन्दैछन् भनेका छन् (पृ.६५) । नाम र क्रियापद अनि नाम र विशेषणको पदसङ्गतिको

आधारमा मानवीय कोटिमै सातप्रकारको लिङ्गभेद देखिने उल्लेख (पृ.६६) गरेका छन् । सर्वनाम साटफेरका आधारमा नेपाली नामको प्रथमतः दुई लिङ्ग मानवीय र मानवेतर देखिन्छन् भनेका छन् । यिनले 'वटा' मात्र यस्तो कोटिकार हो, जसमा भाले (पुलिङ्ग) र पोथी (स्त्रीलिङ्ग) को भेद मानवीय नाममा हुन्छ भनेर उल्लेख गरेका छन् ; जस्तै : तीनवटा छोरा, तीनवटी छोरी ।

पाणिनीले पदसङ्गितिका आधारमा नै संस्कृत नामको लिङ्ग छुट्याएभैं भाषावैज्ञानिकहरू पदसङ्गितिकै आधारमा नामको लिङ्ग छुट्याउँछन् । यसरी पदसङ्गितिका आधारमा नेपाली नामको लिङ्ग छुट्याउँदा भाले-पोथी मात्र होइन, आदरार्थी, कोटिकार, मानवीयता, प्राणीवाचकत्व, सङ्ख्येयता, सर्वनाम, प्रतिस्थापन, वचन आदि विभिन्न कुराद्वारा लिङ्गभेद निर्धारित हुने उल्लेख (पृ.७१) गरेका छन् ।

वाक्यमा नामको एक वा अनेक सङ्ख्यानुसार सबै विकारी (नाम, सर्वनाम, विशेषण र क्रिया) पदमा देखिने प्रत्यय वा संरचनाको भेदलाई वचन (नम्बर) भनिन्छ । वचन विश्वकै भाषामा पाइने नामको एउटा लिङ्ग जस्तै व्याकरणिक कोटि हो । नेपालीमा वचन (क) नाम र विशेषणको पदसङ्गितिमा (छोरो-छोरा) , (ख) कर्ता र क्रियाको पदसङ्गितिमा (यो/ई-ए) , (ग) नाम र सर्वनामको पदसङ्गितिमा अभिव्यक्त हुन्छ (पृ.७७) भनेका छन् । नेपालीमा एकवचन र बहुवचन गरी दुईवटा वचन छन् भन्दै प्रत्ययका भेदले नै वचनका भेदको ठेगान लगाइने उल्लेख गरेका छन् । बहुवचन नेपालीमा अनेकार्थी, प्रकारार्थी र आदरार्थी तीन प्रकारको मानेका छन् । यिनले नेपाली सर्वनाममा वचनका दृष्टिले रूपावली (प्रत्यय) को भेद पाइँदैन । त्यहाँ एकवचन र बहुवचनका लागि छुट्टाछुट्टै शब्द पाइन्छन् भनेका छन्; जस्तै :

|       |        |                |
|-------|--------|----------------|
| पुरुष | एकवचन  | बहुवचन         |
| अन्य  | ऊ/त्यो | उनीहरू/तिनीहरू |
| मध्यम | तँ     | तिमीहरू        |
| उत्तम | म      | हामी (हरू)     |

यिनले 'हरू' को प्रयोग 'उनी, तिनी र तिमी' यी तीनवटा सर्वनाममा बाहेक अरू कुनै पनि नेपाली नाम वा सर्वनाम पछाडि 'हरू' (निपात) जोडेर बहुवचन बनाउनु पर्दैन अर्थात् 'हरू' को प्रयोग अनिवार्य छैन (राखे पनि हुन्छ नराखे पनि हुन्छ) भनेका छन् ; जस्तै : उनी आए (एकवचन)

उनीहरू आए (बहुवचन), (पृ. ७९) ।

ओकारान्त नाम र विशेषणको रूप मात्र हेर्ने हो भने नेपाली बहुवचनको रूप र आदरार्थीको रूप एउटै देखिन्छ भनेर देखाएका छन् ; जस्तै: साना काका, मेरा भञ्जा आदि ।

तर सर्वनाम र क्रियापद हेर्ने हो भने बहुवचन र मध्यम आदरार्थी रूप एउटै पाइँदैन भनेका छन् (पृ. ८१) । आदरार्थीमा एकवचन र बहुवचनको भेद नहुने उल्लेख गरेका छन् । प्रकारार्थीमा 'हरू' जोडेर बहुवचन बनाउनुपर्ने यिनको तर्क छ ।

‘पुरुषको व्यवस्था’ शीर्षकमा कुनै कुरो बोलेका बेलामा बोलचालका सहभागीहरूको परिस्थितिगत प्रकृति व्यक्त गर्ने व्याकरणिक कोटिलाई पुरुष भन्ने चलन छ भन्दै यिनले प्रायः कुरा गर्ने व्यक्ति एउटा पुरुष, कुरा सुन्ने व्यक्ति अर्को पुरुष र कुराकानीमा भाग नलिने (असहभागी) व्यक्ति व्याकरणमा अर्कै पुरुषका मानिन्छन् । पुरुषको यो भिन्नता कुनै पनि भाषामा सर्वनामका रूपमा, क्रियाका रूपमा वा त्यस्तै कतै नदेखिने भिन्नता वा व्यतिरेकका आधारमा प्रकट हुन्छ भनेका छन् । नेपाली भाषाको सबभन्दै पहिलो व्याकरण जे.ए. एटन (१८७७ वि.सं.) ले लेखेका हुन् । त्यसैले नेपालीमा वक्ता (म, हामी,लाई प्रथम पुरुष, श्रोता (तँ, तिमीहरू) लाई द्वितीय पुरुष र कुराकानीमा असहभागी हुने (त्यो, तिनीहरू) लाई तृतीय पुरुष भन्ने चलन बसेको उल्लेख गरेका छन् तर नेपाली व्याकरणका अधिकांश विद्वान्हरू संस्कृत व्याकरणका विद्यार्थी भएकाले कसैकसैले नेपाली पुरुषको वर्गीकरण वा नामकरणमा संस्कृत व्याकरणको अनुसरण गरेको स्वीकार्दै संस्कृत पद्धति अनुसार कुराकानीमा भाग नलिने (त्यो, तिनीहरू) व्यक्तिलाई प्रथम पुरुष, श्रोता (तँ , तिमीहरू) लाई द्वितीय पुरुष र वक्ता (म, हामी)

लाई तृतीय पुरुष मान्ने चलन छ भन्दै एटन र संस्कृत व्याकरणका पुरुषमा रहेको बेमेललाई देखाएका छन् -

| एटन           | पुरुष   | संस्कृत | पुरुष   |
|---------------|---------|---------|---------|
| म, हामी       | प्रथम   | तृतीय   | (उत्तम) |
| तँ, तिमीहरू   | द्वितीय | द्वितीय | (मध्यम) |
| त्यो, तिनीहरू | तृतीय   | प्रथम   | (अन्य)  |

यिनले एटनको व्याकरणमा पुरुषको वर्गीकरण पाश्चात्य पद्धति अनुसार भएको उल्लेख गर्दै यसरी संस्कृत र पाश्चात्य पद्धतिमा नामको वैषम्य भएकाले नेपाली भाषाका शिक्षक र विद्यार्थीले अल्मलिनुपर्ने स्थितिको निराकरणका लागि आफ्ना व्याकरणका लेखहरूमा संस्कृत व्याकरणकै वैकल्पिक शब्द प्रयोग गरेको उल्लेख गरेका छन् । यिनले

|             |                            |
|-------------|----------------------------|
| अन्यपुरुष   | त्यो, तिनीहरू              |
| मध्यमपुरुष  | तँ , तिमीहरू               |
| उत्तम पुरुष | म, हामी भनेर देखाएका छन् । |

यिनले नेपालीमा पुरुषको भिन्नता सर्वनाममा पाएभैं क्रियापदमा पनि प्रत्ययको भेदका रूपमा पाइने उल्लेख गरेका छन् ; जस्तै :

| पुरुष       | एकवचन | बहुवचन |
|-------------|-------|--------|
| अन्य पुरुष  | ओस्   | ऊन्    |
| मध्यम पुरुष | एस्   | ए      |
| उत्तम पुरुष | ऊँ    | औँ     |

संसारका भाषामा प्रायः अन्यपुरुष एकवचनको रूप नै आधारमा हुन्छ, अरू रूपहरू आधार रूपमै प्रत्यय थपेर बनाइन्छ भनेका छन् , जस्तै :

|       | एकवचन | बहुवचन |
|-------|-------|--------|
| अ.पु  | *     | न      |
| म.पु  | स्    | औं     |
| उ.पु. | ऊँ    | औं     |

उच्च आदरार्थी र दरबारी आदरार्थी क्रिया पदमा वक्ता र अन्य भन्ने व्यतिरेक पाइन्छ । अर्थात् त्यहाँ अन्य पुरुष र मध्यम पुरुषमा फरक छैन भनेका छन्; जस्तै: तपाईं आउनुहुन्छ, उहाँ आउनुहुन्छ ।

‘नामको कारक’ शीर्षकमा कारकको चर्चा गर्दै चोम्स्की (१९८१ ई.) को सिद्धान्तअनुसार वाक्यमा प्रयोग भएको कुनै पनि नाम कारक विनाको हुन सक्दैन । वाक्यमा नामको क्रिया अथवा नामानुगामिक (पोस्टपोजिसन) पदसँगको सम्बन्धलाई ‘कारक’ भन्दैछन् । यहाँ नाम भन्नाले सर्वनाम पनि बुझ्नुपर्छ । संस्कृतमा विशेषणको पनि कारक हुन्छ, नेपालीमा हुँदैन भनेर उल्लेख (पृ. ९१) गरेका छन् । यिनले नेपालीमा आधारभूत रूपमा दुई प्रकारको रूपात्मक र वाक्यात्मक मात्र कारक रहेको उल्लेख गरेका छन् । त्यसमा पनि रूपतत्त्वको आधारमा नेपालीमा सरल र तीर्यक् गरी दुईवटा मात्र कारक छन् (पृ. ९१) भनेका छन् । ‘ले , लाई, देखि, बाट, को, मा’ जस्ता नामानुगामिक (तथाकथित विभक्ति ) भन्दै अधिल्लिर आउँदा वा सम्बोधन गर्दा जुनसुकै नाम पनि तीर्यक् हुन्छ । नामको तीर्यक् रूप ओकारान्त नाममा र अधिकांश सर्वनाममा स्पष्ट देखिन्छ, अन्यत्र स्पष्ट देखिँदैन , जस्तै : ए छोरा, तैले कसलाई चिनिनस् आदि । सम्बोधन नगरिएको र पछाडि नामानुगामिक नभएको नाम रूपतत्त्वका आधारमा सरल कारकमा हुन्छ । नेपाली सर्वनामका सरल र तीर्यक् रूप भिडाउँदा तीर्यक् रूपबाट सरल रूप व्युत्पन्न भएजस्तो (ऊ-उस्, छोरो , छोरा आदि) देखिन्छ (पृ. ९२) भनेर उल्लेख गरेका छन् । यिनले सरल कारकअन्तर्गत कर्ता, कर्म र निरपेक्ष कारक आउने उल्लेख गरेका छन् । यिनले रूपतत्त्व फरक भए पनि नभए पनि कुनै पनि नामानुगामिक अगाडि परेको नाम तीर्यक् कारकमा हुन्छ

भनेका छन् ; जस्तै : ‘छोराले बाबुलाई खाटमाथि देख्यो’ । यहाँ ‘छोरो’ मा रूप परिवर्तन (छोरा) भएको छ, ‘बाबु’ र ‘खाट’ मा रूप परिवर्तन भएको छैन तर पनि सैद्धान्तिकरूपमा ‘छोरो’ ‘बाबु’ र ‘खाट’ तीनवटै नामको तिर्यक् कारक छ । तिर्यक् कारकको वाक्यमा के विशेषता हुन्छ भने त्यसको क्रियासँग पदसङ्गति हुँदैन अर्थात् ‘ले’ बाहेक अरू कुनै पनि नामानुगामिक पछाडि छ भने त्यस नामको क्रियासँग पदसङ्गति हुँदैन, क्रिया जहिले पनि अन्यपुरुष एकवचन पुलिङ्गमा हुन्छ । जस्तै : केटीले केटाहरू देखी आदि भनेर उल्लेख गरेका छन् । नेपालीमा सहभागी सर्वनाम (उत्तम पुरुष र मध्यम पुरुष) को मात्र सम्बन्धकारकमा ‘रो’ लाग्छ , अन्यत्र ‘को’ लाग्ने (पृ. ९६) उल्लेख गरेका छन् ।

### २.३ मैथिलीको व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी अध्ययनपरम्परा

मैथिली व्याकरणको परम्पराको प्रवर्तक हर्नलेले व्याकरणीय रूपहरूको केही दृष्टान्तको आधारमा मैथिलीलाई हिन्दीबाट फरक रूपमा स्थापित गरे तापनि मैथिली व्याकरणको गहन अध्ययनको श्रेय ग्रिएर्सन (१८८१ ई.) लाई जान्छ । तर मैथिलीभाषी विद्वान्द्वारा लिखित मैथिलीको सबैभन्दा पुरानो व्याकरण दीनबन्धु भ्राको ‘मिथिलाभाषा विद्योतन’ (सम्भवतः १९४६ ई.) लाई मानिन्छ । यस कृतिमा व्याकरणका नियमहरू संस्कृत व्याकरण पाणिनीय शैलीमा सूत्रको रूपमा लेखिएको छ । यसपछि पं. गोविन्द भ्राले ‘उच्चतर मैथिली व्याकरण’ (१९७९ ई.) लेखेका छन्, जसमा मैथिली भाषाको आधुनिक भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोणले विश्लेषण गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

मैथिलीको व्याकरणिक कोटि भनेर चर्चा नगरेपनि पं. श्री गोविन्द भ्राले ‘उच्चतर मैथिली व्याकरण (१९७९)’ मा व्याकरणिक कोटिका विविध पक्षहरूमध्ये ‘नाम-विचार’ शीर्षकअन्तर्गत ‘कारक, लिङ्ग, वचन र पुरुष’ को चर्चा गरेको देखिन्छ भने ‘आख्यात-विचार’ अन्तर्गत ‘भाव, काल, वाच्यको’ चर्चा गरेको देखिन्छ । यसरी मैथिलीमा व्याकरणात्मक कोटि माथिको कामको सुरुवात पं. गोविन्द भ्रा (१९७९) ले स्पष्ट रूपमा गरेका छन् भने त्यसलाई निरन्तरता दिने काम रामअवतार यादव (१९९६) गरेको देखिन्छ । उनले लिङ्ग, पुरुष र काललाई सरल वाक्यमा देखाएका छन् ।

योगेन्द्रप्रसाद यादव (१९९६, १९९७ ई.) ले सरल वाक्यमा लिङ्ग, पुरुष, आदरार्थी, काल र कारक-विभक्ति आदिको चर्चा गरेको देखिन्छ । भुवनेश्वर भा (१९७९) ले 'मैथिली व्याकरण आओर रचना' मा 'लिङ्ग, वचन, कारक, काल, भाव, वाच्य' र 'सर्वनाम' शीर्षकमा पुरुषको चर्चा परिचर्चा गरेको देखिन्छ । यसैगरी डा. बालगोविन्द भा 'व्यथित' ले 'आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना' (१९७६ ई.) मा 'लिङ्ग- निर्णय, कारक' आदिको चर्चा गरेका छन् भने 'सर्वनाम' शीर्षकअन्तर्गत 'पुरुष र वचन' को चर्चा गरेको देखिन्छ । यिनै अध्ययनका आधारमा कालक्रमिक अध्ययन तथा विश्लेषणलाई समीक्षात्मक रूपमा तल प्रस्तुत गरिएको छ -

### २.३.१ आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना (१९७६ ई.)

'आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना (१९७६ ई.)' का लेखक डा. बालगोविन्द भा 'व्यथित' ले 'सर्वनाम' शीर्षकमा पुरुषवाचक सर्वनामको प्रकारअन्तर्गत पुरुषको चर्चा गरेका छन् । उनले पुरुषवाचक सर्वनाम त्यो हो जसबाट कुनै पुरुष अथवा स्त्रीको बोध हुन्छ । यसै प्रकारको सर्वनाममा भन्ने व्यक्ति, सुन्ने व्यक्ति तथा जसको विषयमा भनिन्छ ती सबै आउँछन् भनेका छन्; जस्तै : हम, तौँ, अहाँ, ओ, ई, हमरासभ, हमरालोकनि, अहाँसभ, तौँसभ आदि । उनले यसै शीर्षकको 'पुरुष' उपशीर्षकमा पुरुषवाचक सर्वनामको पुनः तीन भेद हुन्छ -उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष तथा अन्यपुरुष भन्दै उत्तमपुरुषबाट भन्ने व्यक्तिको बोध हुन्छ; जस्तै (हम, हमरासभ, हमरालोकनि आदि, मध्यमपुरुषबाट सुन्ने व्यक्तिको बोध हुन्छ ; जस्तै (तौँ तौँसभ, तोरासभ, तोरालोकनि आदि; अन्यपुरुषबाट यसै प्रकारको वस्तु अथवा व्यक्तिको बोध हुन्छ जसको विषयमा भन्ने व्यक्ति सुन्ने व्यक्तिलाई केही भन्दैछ भन्दै अन्यपुरुषमा संज्ञापद आउने कुरा उल्लेख गरेका छन् जस्तै : ई., ओ, जे, से आदि ।

त्यसैगरी 'वचन' उपशीर्षकमा मैथिलीमा दुईवटा वचन छन्- एकवचन र बहुवचन भन्दै एकवचनबाट एक व्यक्ति वा एक वस्तुको बोध हुन्छ भने बहुवचनबाट एकभन्दै धेरै व्यक्ति अथवा पदार्थको बोध हुने कुरा उल्लेख गरेका छन् । यिनले अरू अरू भाषामा वचन भिन्नताको कारण शब्दको रूप परिवर्तीत भए तापनि मैथिलीमा

नहुने कुरा उल्लेख गरेका छन् । यिनले एकवचनमा सभ, लोकनि , बहुत, रास, अनेक आदि अनेकार्थक शब्द वा सङ्ख्यासूचक शब्द जोडेर बहुवचन बनाइन्छ भन्दै उदाहरण दिएर पुष्टि गरेका छन् ; जस्तै - 'विद्यार्थी' एकवचन र 'विद्यार्थीसभ, विद्यार्थीलोकनि, बहुत विद्यार्थी, अनेक विद्यार्थी, चारि विद्यार्थी' आदि बहुवचन हुन् भनेका छन् ।

'लिङ्ग निर्णय' शीर्षकअन्तर्गत लिङ्ग त्यो हो जसबाट वस्तुको पुरुषत्व स्त्रीत्व अथवा नपुंसकत्वको बोध हुन्छ भन्दै संस्कृत भाषामा पनि चारवटा मात्र लिङ्ग हुने कुरा उल्लेख गरी हिन्दी भाषाभन्ने मैथिलीमा पनि लिङ्गको प्रक्रिया जटिल नभएको उल्लेख गरेका छन् । उनले मैथिलीमा स्त्रीलिङ्ग, पुलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग तथा उभयलिङ्ग गरी चारवटा लिङ्ग हुन्छ भन्दै यद्यपि कतै-कतै अप्राणीवाचक शब्दका लागि स्त्रीलिङ्ग वा पुलिङ्गका प्रयोग भेट्ने कुरा उल्लेख गरेका छन्; जस्तै- भुताहि पोखरि , दूबरि देह, पुरनी गाछी । उनले पुलिङ्ग , स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्गको परिभाषा दिँदै कुनै वस्तुको पुरुषत्वको बोध हुने पुलिङ्ग (बडद, घोडा, पुरुष), स्त्रीत्वको बोध हुने स्त्रीलिङ्ग (गाय, घोडी, स्त्री) अप्राणीवाचक शब्दहरू नपुंसकलिङ्ग (कुसी, टेबुल) र स्त्रीत्व र पुरुषत्व दुवैको बोध हुने उभयलिङ्ग (मनुष्य आदि) हुन् भनेका छन् । उनले पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्ग बनाउने रीति अगाडि सार्दै , संस्कृत अकारान्त पुलिङ्ग शब्दको अन्तिम अक्षरको अन्तिम स्वर 'अ' लाई 'ई' बनाए स्त्रीलिङ्ग हुने बताएका छन्; जस्तै : पुत्र-पुत्री, राक्षस-राक्षसी आदि तर कतिपय शब्दमा ह्रस्व 'इ' कारले पनि काम चल्ने उल्लेख छ ; जस्तै - (सुन्नर -सुन्नरि, नर -नारि) आदि । त्यसरी नै प्रचलित उपाधिको अन्तिम अक्षरको अन्तिम स्वरको लोप गरेर 'आइन' जोडी (मिसर-मिसराइन, ठाकुर-ठाकुराइन आदि) , जातिसूचक संज्ञामा साधारण तथा 'इन' प्रत्यय लगाएर (धोबी-धोबिन, माली-मालिन आदि), केही पशु-पक्षीको जातिमा पनि यो नियम लाग्ने उल्लेख छ (सिंह-सिंहिन, नाग-नागिन, हाँस-हाँसिन आदि) तर कतै यो नियमको अपवाद पनि देखिन्छ (चमार-चमैनि, बरै-बरैनि, कमार-कमैनि आदि) (पृ. ३९) आकारान्त सम्बन्धसूचक शब्द अथवा अरु शब्दलाई दीर्घ 'ईकारान्त' बनाएर (काका-काकी, घोडा-घोडी आदि) तर सम्बन्धसूचक केही शब्दमा विकल्पले ह्रस्व अथवा दीर्घ दुवै 'इ' कारकै हुन्छ (मामा-मामि, मौसा-माउसि), केही शब्दको स्त्रीलिङ्ग एवम् पुलिङ्ग रूप एक अर्काबाट सर्वथा स्वतन्त्र हुने (

पुरुष-स्त्री, बाप-माय, राजा-रानी आदि), कतिपय उद्योगसूचक अथवा सानो जातिमा 'नी' लगाउनाले (मास्टर-मास्टरनी मेहतर-मेहतरनी, चोर-चोरनी, मुसहर-मुसहरनी आदि) पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्ग बनाउने कुरा उल्लेख गरेका छन् ।

‘कारक’ शीर्षकअन्तर्गत संज्ञा अथवा सर्वनामको क्रिसासँग जे सरोकार हुन्छ त्यसलाई नै कारक भनिन्छ (पृ. ४१) भनेर उल्लेख गरेका छन् । कारक विभाजन गर्दै ‘कारक’ आठप्रकारको हुने कुरा उल्लेख गरेका छन्; कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण र सम्बोधन कारक ।

काम गर्नेलाई कर्ता कारक भनिन्छ भन्दै मैथिली व्याकरणमा कर्ता कारकमा कुनै चिह्न वा विभक्ति नलाग्ने कुरा समेत उल्लेख गरेका छन्. (पृ. ४१) (जस्तै : राम खाइत छथि) । यिनले कामको फल जसमाथि पर्छ तथा क्रियाको परिणामबाट प्रभावित हुने कारक कर्मकारक हो भन्दै यसमा ‘कँ’ विभक्ति लाग्ने र कुनै-कुनै ठाउँमा लुप्त पनि हुने कुरा उल्लेख गरेका छन् (जस्तै: राम भात खाइत छथि) । काम गर्ने साधन बुझाउनेलाई करण कारक भनिन्छ भन्दै यसमा ‘सँ’ तथा (ँ) विभक्ति लाग्ने कुरा उल्लेख गरेका छन् ; (जस्तै: बातें काज नहि चलत) । जसका लागि कुनै काम गरिन्छ त्यसलाई सम्प्रदान कारक भनिन्छ भन्दै यसमा कँ, क लेल, क हेतु, लए आदि हेतु अर्थलाई सूचित गर्ने विभक्ति चिह्न लाग्ने उल्लेख गरेका छन् (अहाँकलेल हम की नहि कएल) । जसबाट कुनै वस्तु पृथक् हुन्छ त्यसलाई अपादान कारक भनिन्छ, जसमा ‘सँ’ विभक्ति प्रयोग गरिएको हुन्छ (मेघसँ पाथर खसल) सम्बन्ध कारक त्यसलाई भनिन्छ , जसबाट कर्ता वा अन्य कुनै कारकको सम्बन्ध हुन्छ, यसमा ‘क’ विभक्ति चिह्नको प्रयोग गद्यमा तथा ‘केर’ को प्रयोग प्रायः पद्यमा हुने उल्लेख गरेका छन् । (ई रामक पुस्तक थीक) । त्यसैगरी जहाँ आधारको अर्थ हुन्छ त्यसलाई अधिकरण कारक भनिन्छ भन्दै यसमा मे, माझ, मध्य, पर आदि विभक्ति लाग्ने उल्लेख छ ( टेबुलपर पुस्तक अछि) । आफूतिर ध्यान आकृष्ट गर्नका लागि सम्बोधन कारकको प्रयोग हुने कुरा उल्लेख गर्दै सम्बोधन कारकको चिह्न आदर, निरादर एवम् सामान्य भावको स्त्री-पुरुषको भेदका कारणले भिन्न-भिन्न रहेको कुरा उल्लेख गरेका छन् । आदर पुलिङ्ग ‘अओ वा औ’, आदर स्त्री ओए वा ऐ । निरादर पु. ‘रओ वा

रौ या रे', निरादर स्त्री. 'गए वा गे' । सामान्य पु. 'हओ वा हौ', स्त्री. 'हए वा हे' हुने उल्लेख गरेका छन् ।

केही वैयाकरणहरूले सम्बोधन कारकलाई कारकको भेदअन्तर्गत नराखेकाले त्यो तर्कसङ्गत नरहेको टिप्पणी गरेका छन् । यिनले मैथिलीमा पनि कसैलाई बोलाईन्छ, कसैको ध्यान आफूतिर आकृष्ट गरिन्छ, भने त्यतिखेर कारकको सातवटा मात्र प्रकार मान्नु ठीक नरहेको उल्लेख गरेका छन् ।

डा. बालगोविन्द भाले मैथिलीको कुनै पनि शब्दमा लिङ्ग, वचन, कारकको कारणले त्यसको रूपमा कुनै पनि परिवर्तन नआउने उल्लेख गर्दै यो मैथिलीको विशेषता भएको जनाएका छन् । अरू-अरू भाषा जस्तै : हिन्दी, अङ्ग्रेजी आदिमा विभक्ति त जोडिन्छ नै शब्दको रूपमा पनि धेरै थोरै परिवर्तन पनि हुन जान्छ भन्दै मैथिलीमा विभक्ति जोड्दा भिन्न-भिन्न कारकको रूप बन्दछ; तृतीया अथवा करणमा 'एँ' जोड्दा केही विकार उत्पन्न हुन्छ भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यदि कारक आदिको कारणबाट रूपान्तर भए पनि सर्वनाममा मात्र हुन्छ छर त्यसमा पनि वचनको कारणले कुनै रूपान्तर नहुने उल्लेख गरेका छन् (पृ. ४७) । यिनले कारकको आधारमा नाम, सर्वनाम आदिको रूपावली प्रस्तुत गरेर देखाएका छन् ।

उनले 'क्रिया प्रकरण' शीर्षकअन्तर्गत 'वाच्य, भाव, काल, पक्ष' आदिको चर्चा गरेका छन् । 'वाच्य' को चर्चा गर्दै मैथिली भाषामा क्रियाको यो एउटा ठूलो विशेषता हो जसमा यसले न कर्ताको अनुसरण गर्दछ न कर्मको ; यो भावको अनुसरण गर्दछ । त्यसैद्वारा कर्ता एवम् कर्मको प्रधानताको आधारमा वाच्यको भेद गरिएको उल्लेख गर्दछन् । यसै कारणले वाच्यको दुई भेद हुने उल्लेख छ- कर्तृवाच्य एवम् कर्मवाच्य र यी दुईको पनि पुनः एक एक उपभेद छ-कर्मकर्तृवाच्य र भाववाच्य (पृ. ६६) भनेर देखाएका छन् । यसरी कुल चार प्रकारको वाच्यको बारेमा उल्लेख गर्दै कर्ता प्रधान हुने क्रिया कर्तृवाच्यको (सीता गीत गौलन्हि), कर्मको प्रधानता रहने क्रिया कर्मवाच्यको (गीत सीताकद्वारा गाओल गेल), जब वाक्यमा कर्म कर्ताभै प्रधान हुन्छ तब सकर्मक क्रिया अकर्मकमा परिवर्तन हुन जान्छ तथा त्यो क्रिया कर्म-कर्तृवाच्यको क्रिया

कहलाउँछ (भात रान्हल गेल, रोटी पकाओल गेल) भनेर देखाएका छन् । त्यसै गरी न कर्ताको न कर्मको प्रधानता रहँदा केवल भावको प्रधानता रहन जान्छ, त्यतिखेर क्रिया भाववाच्यको क्रिया कहलाउँछ (हमरा चलि नहि भेल, हुनका सूतल नहि गेलन्हि) भनेका छन् ।

उनले वाच्यको चार भेद देखिए तापनि मैथिली व्याकरणमा साधारणतः वाच्यको दुईवटा भेद-‘कर्तृवाच्य र कर्मवाच्य’ हुन्छन् भनेर पनि उल्लेख गरिएको पाइन्छ (पृ.६६) यिनी वाच्यान्तर हुँदा क्रियाको रूपमा कुनै परिवर्तन हुन्छ या हुँदैन भन्ने कुरामाथि ध्यान दिनुपर्छ भन्दैछन् । मैथिलीमा आदरको अर्थमा भाववाच्य अथवा कर्मवाच्यको क्रियाको प्रयोग हुने उल्लेख गरेका छन् । प्रार्थना एवम् विवशतामा भाववाच्यको प्रयोग विशेषरूपमा गर्नुपर्ने बताएका छन् ।

‘भाव’ को सन्दर्भमा यिनले क्रियाको स्थितिलाई भाव भनेका छन् । यिनले अङ्ग्रेजीको नक्कल गरेर मैथिलीमा भाव समावेश गरिएको उल्लेख गरेका छन् । यिनले क्रियाको भाव साधारणतया चार प्रकारको हुन्छ- (१) साधारण अथवा निश्चयात्मक (२) सम्भाव्य अथवा अनिश्चयात्मक, (३) विधि अथवा अनुज्ञात्मक (४) आशीर्लिङ्ग अथवा कामनात्मक भनेर देखाएका छन् । यिनले क्रियाको साधारण स्थितिलाई निश्चयात्मक भाव भनेका छन् (राम जाइत छथि), त्यसैगरी क्रियाको त्यस्तो स्थिति जसले कुनै कार्यको निश्चितता नजनाएर त्यसको सम्भावना अथवा अर्को कार्यमाथि त्यसको निर्भरता बुझाएमा सम्भाव्य अथवा अनिश्चयात्मक भाव कहलिन्छ (औँ अबैत तँ हम जैतहुँ) । यसरी नै विधि अथवा अनुज्ञात्मक भाव त्यसलाई भनिन्छ जसबाट आज्ञा, आग्रह अथवा प्रार्थना आदिको सूचना भेटिन्छ (ताँ जाह, अपने एतय रहू) । उनले शुभाकांक्षा, द्वेष अथवा यस्तै अन्य मनोभाव पत्ता लगाउने क्रियाको स्थिति आशीर्लिङ्ग अथवा कामनात्मक भाव हो (राजा दीर्घायु होथु) भनेका छन् (पृ.६७) ।

‘काल’ को सन्दर्भमा कार्य गर्ना वा हुनामा लाग्ने समयलाई काल भनिएको पाइन्छ । काल तीन प्रकारको - ‘भूत, वर्तमान र भविष्य’ हुने पनि बताएका छन् । जसमध्ये बितेको समय बताउने भूत (ओ गेलाह) , बितिरहेको समयलाई वर्तमान (राम

खाइत अछि) र पछि आउने समय बताउने भविष्यत् (ओ पढ्ताह) काल हो भनेर उल्लेख गरेका छन् । यिनले कालको सूक्ष्म विभाजन अर्थात् पक्षको चर्चा पनि यसै भित्र गरेको देखिन्छ । यिनले यी तीनै कालको पनि चार चारवटा भेद भएको देखाएका छन् सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण र तत्कालिक (पृ. ६७) । यिनले कतिपय वैयाकरणले सामान्य वर्तमान (ओ जाइ छथि) र अपूर्ण वर्तमान (ओ जाइ छथि) लाई एउटै मानेको विचारप्रति समर्थन जनाएका छन् । यिनले मैथिलीमा तात्कालिक भविष्यत् हुँदैन भन्ने देखाएका छन् ।

अन्तमा डा. बालगोविन्द भाले गरेको विश्लेषण हेर्दा के देखिन्छ भने यिनले 'लिङ्ग' सम्बन्धी गरेको विश्लेषण प्राकृतिक लिङ्गमा आधारित रहेको छ , जब कि व्याकरणिक लिङ्ग प्राकृतिक लिङ्गभन्दै फरक हुनाले यसलाई पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग दुई प्रकारले अध्ययन गर्नु उचित देखिन्छ , किनभने यसले अर्थतत्त्वलाई मात्र ध्यानमा राखी लिङ्गको निर्धारण गरिएकाले रूपतत्त्व उपेक्षित छ । रूपतत्त्व भाषाको महत्त्वपूर्ण तथा वैज्ञानिक पक्ष हो । यिनको विश्लेषणले शब्दस्तर र वाक्यस्तरमा लिङ्गको विश्लेषण गर्न सकिने देखिन्छ । पुलिङ्गी शब्दमा 'आइन, इन, ई, नी' जोडेर स्त्रीलिङ्गी बनाउने कुरालाई सबल पक्षको रूपमा लिन सकिन्छ । पुरुषको सन्दर्भमा सर्वनाम र क्रियासँग सम्बन्ध व्याकरणिक कोटि पुरुष भएको र अभिव्यक्तिका लागि तीन व्यक्ति वा वस्तु-वक्ता, श्रोता र विषय चाहिने प्रस्ट भएको देखिन्छ , जुन अन्य भाषासँग पनि मेल खान्छ । यिनले मैथिलीमा उमेरको हदले समेत प्रभावित हुने आदरलाई चर्चा गरेको देखिँदैन । जसको चर्चा हुनु जरुरी छ । यिनले कालअन्तर्गत नै पक्षको चर्चा गरेको देखिन्छ , जब कि काल (समयको स्थूल विभाजन) र पक्ष (समयको सूक्ष्म विभाजन) फरक फरक हुन् यसको रूपतात्त्विक आधारमा विश्लेषण आवश्यक देखिन्छ । यिनले सम्बन्ध र सम्बोधन कारकलाई पनि कारकअन्तर्गत राखेको देखिन्छ जुन उपयुक्त छैन । किनभने यसको प्रत्यक्ष सम्बन्ध क्रियासँग रहेको हुँदैन । मैथिलीमा भविष्यत्काल र सम्भावनार्थ क्रियारूप एउटै देखिन्छ । यसलाई स्पष्ट रूपमा देखाउनु आवश्यक छ ।

### २.३.२ मैथिली व्याकरण आओर रचना (१९७९ ई.)

‘मैथिली व्याकरण आओर रचना (१९७९ ई.) का लेखक युगेश्वर भाले ‘लिङ्ग’ शीर्षकमा पुरुष, स्त्री, उभय अथवा नपुंसक जातिको बोध गराउने शब्दलाई लिङ्ग भनिन्छ भन्दै यसको चार भेद- पुल्लिङ्ग (पुरुष जाति बुझाउने) स्त्रीलिङ्ग (स्त्री जाति बुझाउने शब्द), उभयलिङ्ग (पुल्लिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग दुवै हुने) शब्द र नपुंसकलिङ्ग (अप्राणीवाचक शब्दको बोध गराउने) देखाएका छन्, जुन डा. बालगोविन्द भा. को विश्लेषणसँग मेल खाएको देखिन्छ । यिनले नाम तथा विशेषण दुवैमा लिङ्गभेद हुने कुरा देखाएका छन् । पुल्लिङ्गबाट स्त्रीलिङ्ग बनाउने प्रत्यय योजना २.३.१ सँग मेल खाने देखिन्छ । यिनले प्राचीन लेखमा विशेषण शब्दको स्त्रीलिङ्गी रूपको प्रयोग नभएको टिप्पणी गर्दै अहिले पनि धेरै ठाउँमा भाषाको सौन्दर्यको रक्षाका लागि पुल्लिङ्गरूपको व्यवहार लेखकले गरिरहेको उल्लेख गरेका छन् ।

वचनको सन्दर्भमा यिनले वचनको अर्थ सङ्ख्या हो भनेका छन् । यिनले प्रयोगमा आउने शब्द एक अथवा एकभन्दै बढी व्यक्ति अथवा वस्तु बुझाउँछ भन्दै व्यक्ति अथवा वस्तुको एउटामात्र सङ्ख्याको बोध गराउने एकवचन (पोथी, हाथी, नेना) र व्यक्ति अथवा वस्तुको एकभन्दा बढी सङ्ख्याको बोध गराउने बहुवचन (पोथीसभ, हाथीभण्ड, नेनालोकनि) भनेर दुईवटा भेद देखाएका छन् । यिनले एकवचनबाट बहुवचन बनाउँदा एकवचन शब्दको अन्तमा गण (छात्र-छात्रगण), दल ((छात्र-छात्रदल), लोकनि (छात्र-छात्रलोकनि), सबहि (छात्र-छात्रसबहि), सभ (छात्र-छात्रसभ), समूह (छात्र-छात्रसमूह), समुदाय (छात्र-छात्रसमुदाय) आदि बहुवाची अथवा समूहवाची शब्द लगाएर बहुवचन बनाइने कुरा उल्लेख गरेका छन् , अन्यथा मैथिली भाषामा मुख्यरूपले एकवचनको मात्र शब्द रहने उल्लेख छ (पृ.२३) ।

कारकको चर्चा गर्दै यिनले क्रियाको उत्पत्तिमा सहायक हुने शब्द कारक हो भनेका छन् । यिनले कारक आठ प्रकारको -कर्ता, कर्म , करण सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध अधिकरण र सम्बोधन रहेको चर्चा गरेका छन् जुन बालगोविन्द भा.को विश्लेषणसँग फरक नरहेको देखिन्छ । धेरै वैयाकरणहरूले सम्बन्ध कारक र

सम्बोधनलाई कारकअन्तर्गत नराखेको यिनको टिप्पणी रहेको छ । पुरुषको सन्दर्भमा पनि यिनको विश्लेषण २.३.१ सँग मिल्दो जुल्दो छ । पुरुष र क्रियाबीचको सम्बन्धको बारेमा चर्चा गरिएको देखिँदैन । कालको चर्चा पनि २.३.१ अनुसार नै देखिन्छ ।

यिनले पक्षलाई निश्चयात्मक भावअन्तर्गत राखेर विश्लेषण गरेको देखिन्छ (पृ.४५) । यिनले भूतकालको चारवटा (१) सामान्य (श्याम गेलाह), (२) अपूर्ण (मोहन पढत छलाह) , (३) पूर्ण (मोहन गाम आएल छलाह) (४) तात्कालिक (राम पढि रहल छलाह) भेद देखाएका छन् भने वर्तमानको तीनवटा (१) सामान्य (राम पढैछं), (२) अपूर्ण (श्यामू जाइत छथि) , (३) पूर्ण (हम पुस्तक पढि गेल छी) साथै कुनै कुनै वैयाकरणले पूर्ण वर्तमानलाई आसन्नभूत मानेको प्रति टिप्पणी गरेका छन् । (४) तात्कालिक (नरेश गाम जाए रहल अछि) भनेर भेद देखाएका छन् । त्यसैगरी भविष्यत्को - सामान्य -मीनू गीत गाओत), अपूर्ण (बीनू पढैत रहत), पूर्ण (रीता पत्र लिखने रहत) गरी तीनवटा पक्ष देखाएका छन्, जसको सुक्ष्म अध्ययन हुनु आवश्यक छ । यिनले भविष्यत्मा 'तात्कालिक' भेद नरहेको देखाएका छन् । यिनको निश्चयात्मक तथा अनिश्चयात्मक भावअन्तर्गत कालको भेदोपभेद एउटा नौलो प्रयोग देखिन्छ । तर अगाडि २.३.१ भन्दै खासै भिन्न देखिँदैन ।

'भाव' को चर्चाका क्रममा यिनले क्रिया कुन रीतिले, प्रकारले अथवा अवस्थामा सम्पादित हुन्छ त्यसलाई भाव भनेका छन् । यिनले पनि बालगोविन्द झाभै भावका चार भेद देखाएका छन्- निश्चयात्मक, अनुज्ञात्मक , अनिश्चयात्मक र कामनात्मक भाव, जुन २.३.१ सँगै पूरै मेल खान्छ ।

'वाच्य' को सन्दर्भमा वाच्य क्रियाको त्यो रूप हो जसबाट थाहा पाइन्छ कि वाक्यमा कसको प्रधानता छ- कर्ता, कर्म वा भावको' भनेर चिनाएका छन् । यिनले वाच्य-(१) कर्तृ, (२) कर्म, (३) भाव र (४) कर्मकर्तृवाच्य गरी चार प्रकारको देखाएका छन् , जुन २.३.१ सँग मेल खान्छ । यिनले कर्तृवाच्यको क्रिया सकर्मक तथा अकर्मक दुवै हुन सक्ने बताएका छन् भने कर्मवाच्यको क्रिया मात्र सकर्मक हुने तथा भाववाच्यको क्रिया सर्वदा अकर्मक हुने बताएका छन् । यिनले क्रियारूपको परिवर्तन

वाच्यपरिवर्तनको कारणले कर्ता तथा कर्म आदि कारकको पुरुषको आदर, सामान्य अथवा निरादर आदि भावमाथि निर्भर गर्दछ भन्दै आदर-अर्थमा विशेषतया कर्मवाच्य अथवा भाववाच्यको प्रयोग हुन्छ यद्यपि भाववाच्यको प्रयोग निवेदन अथवा विवशताको भावमा हुने कुरा उल्लेख गरेका छन् (पृ.५०) ।

यिनले कर्तृ, कर्म र भाववाच्यलाई निश्चयात्मक, अनिश्चयात्मक भावअन्तर्गत कालका विभिन्न पक्षसँग सामञ्जस्य गराउँदै देखाउने प्रयास गरेका छन्

यसरी डा. बालगोविन्द भ्ना र युगेश्वर भ्नाको अध्ययन विश्लेषण मिल्दो जुल्दो छ । यिनले पनि आदरको बारेमा चर्चा गरिएको देखिएन त्यसैले यसको सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक छ ।

### २.३.३ उच्चतर मैथिली व्याकरण (१९७९ ई.)

उच्चतर मैथिली व्याकरण (१९७९)' का लेखक पं. गोविन्द भ्नाले यस कृतिमा मैथिली भाषालाई आधुनिक भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोणले विश्लेषण गर्ने प्रयास गरेका छन् जुन मैथिलीको महत्त्वपूर्ण उपलब्धी पनि मानिन्छ । यिनले 'नाम-विचार' शीर्षकअन्तर्गत 'कारक, लिङ्ग, वचन र पुरुष' को चर्चा गरेका छन् । यिनले कुनै क्रियाको निष्पादनमा जुन-जुन वस्तु कुनै रूपमा भाग लिन्छ भने ती सबै कारक ( क्रियाको निष्पादन गर्ने) कहलाउँछन् (पृ.२७) भनेका छन् । यिनले भारतका प्राचीन वैयाकरणहरूले संस्कृतमा सातवटा कारक निर्धारित गरेका छन्- कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध र अधिकरण भन्दै वाक्यमा प्रत्येक संज्ञा कुनै न कुनै कारकको भूमिकामा आउँछन्, जुन संज्ञाको सबैभन्दै प्रमुख कार्यरहेको उल्लेख गरेका छन् । यिनले कारकका यी सात प्रकार एकमात्र संस्कृत व्याकरणको आधारमा देखाइएको स्वीकारेका छन् । यिनले क्रियाको निष्पादनमा प्रत्यक्ष रूपमा भाग नलिने नामलाई कारक भन्नु उचित नरहेको सुझाव दिएका छन् तर रूपरचनामा कारकसदृश हुने कारणले सम्बन्धकारक र सम्बोधन कारकलाई पनि कारक भनिन्छ (पृ. २८) भन्ने यिनको कथन रहेको छ । यिनले कर्ताकारकमा ० (शून्य) कर्ममा 'कै', करणमा 'सँ, ऐ' 'ए' लगाउँदा पदान्त 'अ वा आ' लुप्त हुन्छ र अन्य दीर्घ स्वर ह्रस्व हुन्छ; हाथसँ वा

हाथें , मालासँ वा मालें आदि) सम्प्रदानमा 'कें' , अपादानमा 'सँ', सम्बन्धमा 'क, केर', अधिकरणमा 'मे' र सम्बोधनमा 'अओ' विभक्ति प्रयोग हुन्छ भनेर देखाएका छन् । यिनले सैद्धान्तिक दृष्टिले सम्बोधन कारक कुनै कारक नभएको उल्लेख गर्दै रूपावली निर्धारणमा यसको समावेश सर्वथा निरर्थक हुने उल्लेख गरेका छन् ।

पं. भाले लिङ्गको चर्चा गर्ने क्रममा संज्ञा जब कुनै प्राणीको बोध गराउँदछ, तब बहुधा आनुषंगिक रूपमा यो पनि प्रकट गर्दछ कि त्यो प्राणी पुरुष हो कि स्त्री, नर हो कि नारी (पृ. ३६) भनेर उल्लेख गर्दै त्यसअनुसार संज्ञा तीन प्रकारको छ, पुरुष जातिबोधक वा पुलिङ्ग, स्त्री जातिबोधक वा स्त्रीलिङ्ग र स्त्रीत्व -पुरुषत्व -शून्यतासूचक वा नपुंसकलिङ्ग भनेर देखाएका छन् । त्यसै गरी कतिपय संज्ञा यस्तो पनि छ जो केही ध्वनिको परिवर्तनबाट कहिले पुरुषजाति बुझाउँछ , कहिले स्त्रीजातिको यस्तो शब्द उभयलिङ्ग कहलाउँछ भन्ने उनको विश्लेषण छ । त्यसैगरी केही यस्ता शब्द पनि छन् जसको प्रयोग पुरुष तथा स्त्री कुनै जातिमा गर्दा शब्दको रूपमा कुनै परिवर्तन देखिँदैन ; यस्ता शब्द अलिङ्ग कहलाउँछ भन्ने तर्क रहेको छ । मैथिली व्याकरणको दृष्टिले नपुंसकलिङ्ग र अलिङ्ग एउटै कोटिमा पर्ने उल्लेख गरेका छन् किनभने यी दुवै लिङ्ग निरपेक्ष रहेको उनको कथन छ । यिनले 'इ, ई, इनि, इनी, आइनि, नी, नि आदि प्रत्ययद्वारा पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्ग बनाउन सकिने बताएका छन् ।

वचनको विश्लेषण गर्दै मैथिलीमा संस्कृतभन्दा नभएर वचन केही फरक रहेको उल्लेख गरेका छन् । उनले केही उदाहरण (बालक जाइत अछि) दिएर एकवचन र बहुवचन हुने कुरालाई बुझाउने प्रयास गरेका छन् । यिनले बहुत्व (धेरै) बुझाउनका लागि संज्ञाको अगाडि कुनै समूहवाचक शब्द सभ, सब वा लोकनि लगाउन सकिने बताएका छन् ।

पुरुषको चर्चा गर्दै यिनले मानिसले संसारका प्रत्येक वस्तुलाई आफ्नो वाग्व्यवहारमा तीन भागमा बाँडेका छन् -एउटा आफ्नो, अर्को त्यो व्यक्ति जससँग ऊ वाग्व्यवहार गरिरहेको छ र तेस्रो यी दुईभन्दै भिन्न संसारको सबै वस्तु भन्दै वक्ता, श्रोता र विषयलाई पुरुष भनिन्छ भन्ने सङ्केत गरेका छन् । व्याकरणमा यही विविध

दृष्टिकोणले प्रत्येक वस्तु त्रिविध पुरुषरूपले प्रतिपादित हुन्छ- उत्तम पुरुष (हम) , मध्यम पुरुष (तौं) तथा अन्यपुरुष (ओ, ई) । उत्तम पुरुष र मध्यम पुरुषमा सर्वनाम आउँछ भने , सर्वनामका साथै नाहरू अन्यपुरुषमा आउँदछन् । मैथिलीमा पुरुष र सामाजिक स्तर अनुसार क्रियापदको प्रयोग गरिन्छ (पृ.५०) । यिनले 'क्रियाक अनुषंगी भाव' अन्तर्गत उदाहरण दिएर 'काल, भाव' को चर्चा गरेका छन् र रूपायक प्रत्ययका आधारमा काल तीन प्रकारको -वर्तमान, भूत र भविष्यत् हुने देखाएका छन् । त्यसैगरी क्रियापदबाट वक्ताको चित्तवृत्ति-ज्ञापन, इच्छा, आज्ञा आदि बफिन्छ भन्ने विश्लेषणबाट मैथिलीमा पनि यसको (भावको) अध्ययन यिनले गरेको देखिन्छ । यिनले वर्तमान , भूत, भविष्यत्, आज्ञार्थ, इच्छार्थ आदिलाई रूपतात्त्विक आधारमा विश्लेषण गर्दै त्यसको सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत गरी अध्ययनलाई विशिष्टता प्रदान गरेका छन् , जुन मैथिलीको सफलता पनि मानिन्छ ।

यिनले पक्षको छुट्टै चर्चा नगरे पनि 'कालक भेदोपभेद' शीर्षकमा यसको चर्चा भएको देखिन्छ । यिनले हिन्दी आदि भाषाको प्रचलित व्याकरणहरूमा अङ्ग्रेजी व्याकरणको नक्कलको आधारमा कालको एक-एक भेदको अनेक उपभेद गरेको देखिन्छ भन्दै त्यो उपभेदहरू मैथिलीमा पनि लगभग त्यहीँ ढाँचामा गर्न सकिने उनको धारणा छ । उनले तीनै कालका विभिन्न उपभेद देखाएका छन्-

|            |                     |                       |
|------------|---------------------|-----------------------|
| १. वर्तमान | १. सामान्य वर्तमान  | बच्चा पढैत अछि ।      |
|            | २. सन्दिग्ध वर्तमान | बच्चा पढैत होयत ।     |
| २. भूत     | १. सामान्य भूत      | बच्चा पढलक            |
|            | २. आसन्न भूत        | बच्चा पढने अछि ।      |
|            | ३. पूर्णभूत         | बच्चा पढने छल ।       |
|            | ४. अपूर्ण भूत       | बच्चा पढैत छल ।       |
|            | ५. सन्दिग्ध भूत     | बच्चा पढने होयत ।     |
|            | ६. हेतुमद् भूत      | बच्चा चाहैत तँ पढैत । |
| ३. भविष्य  | १. सामान्य भविष्य   | बच्चा पढत ।           |
|            | २. सम्भाव्य भविष्य  | बच्चा पढय ।           |

यिनले माथिका उपभेदलाई कालको उपभेद नमानेर यो संयुक्त क्रियापदको चमत्कार भएको उल्लेख गरेका छन् । यहाँ पक्षलाई कालको भेदोपभेद भन्नु उचित देखिंदैन किनभने पक्षले क्रियाको आन्तरिक प्रकृतिलाई जनाउँछ भने कालले चाहिँ क्रियाको वाह्य परिवेशलाई मात्र जनाउँछ ।

पूर्णता, अपूर्णता वा निरन्तरता आदि कुरा क्रियार्थगत कार्यसँग सम्बन्धित रहन्छन् तर कालचाहिँ भूत वा वर्तमान परिवेश जनाउनमा मात्र सीमित रहन्छ । यिनले प्रत्ययद्वारा क्रियारूपावली प्रस्तुत गरेर देखाएका छन् ।

वाच्यको बारेमा चर्चा गर्ने क्रममा यिनले वाक्यबाट परस्पर अन्वित अनेक पदार्थको बोध हुन्छ । जसमा कहिल्यै कर्ताप्रधान (मुख्य वा चरम विशेष्य) रहन्छ कहिल्यै कर्म तथा कहिल्यै क्रिया । यस आधारमा वाक्य तीन प्रकारको मानिन्छ- कर्तृप्रधान (कर्मवाच्य), कर्मप्रधान (कर्मवाच्य र क्रियाप्रधान वा भावप्रधान (भाववाच्य) भनेर उल्लेख गरेका छन् । अन्य भाषामा भावप्रधान क्रियाको न त कर्ता न त कर्मसँग मेल रहन्छ । तर मैथिलीमा फलभागीसँग यसको (क्रियाको) मेल देखिन्छ (हमरा नहि हँसाइत अछि, तोरा नहि हँसाइत छौक आदि) (पृ.७०) ।

यसरी पं. गोविन्द भाले मैथिली भाषाको व्याकरणिक कोटिलाई मानक मैथिलीको आधारमा विश्लेषण गरे पनि विश्लेषणको अति चर्चित पक्ष 'आदर' को चिनारीमा चुकेका छन्, जसको अध्ययन हुनु आवश्यक छ भने अध्ययनमा भएको जटिलतालाई भाषावैज्ञानिक पद्धतिको आधारमा अन्य भाषासँग तुलना गरेर हेर्नु वाञ्छनीय देखिन्छ ।

### २.३.४ अ रिफरेन्स ग्रामर अफ मैथिली (१९९७ ई.)

‘अ रिफरेन्स ग्रामर अफ मैथिली (१९९७ ई.)’ का लेखक रामअवतार यादवले यस व्याकरणमा मैथिली भाषाको वर्णव्यवस्था रूपव्यवस्था तथा वाक्यसंरचना सहित अन्य सम्बन्धित विषयहरूको विस्तृत वर्णन प्रस्तुत गरेका छन् ।

यिनले लिङ्ग, वचन र कारक रूपतात्त्विक कोटिहरु हुन् जसबाट मैथिली नामहरुलाई वर्गीकरण गर्न सकिन्छ भनेर उल्लेख गरेका छन् । यिनले लिङ्गको चर्चा गर्दै लिङ्ग ‘पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग गरी दुई किसिमको हुने कुरा संस्कृतबाट आएको उल्लेख गर्दै आधुनिक मैथिलीमा व्याकरणिक लिङ्ग नभएको उल्लेख गरेका छन् (पृ.६३) । यिनले आधुनिक मैथिलीमा पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग गरी गरिएको लिङ्गभेद प्राणीवाचक नामको लिङ्गको आधारमा भएको उल्लेख गरेका छन् । यिनले पुलिङ्गी शब्दमा ‘इन’, ‘आइन’, ‘नि’, ‘एनी’ जोडेर स्त्रीलिङ्गी बनाइने कुरा उल्लेख गरेका छन् (जस्तै: बाघ-बाघिन, जाट-जाटिन, ओम्हा-ओम्हाइन, मिसर-मिसराइन, उट-उटनी, सिंह-सिंहनी, कमार-कमानि आदि) । त्यसैगरी शब्दको रूप परिवर्तन गरेर पनि पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्ग बनाउन सकिने उल्लेख गरेका छन् (जस्तै : बाप-माइ, भाइ-बहिन आदि) (पृ. ६३) ।

वचनको सन्दर्भमा यिनले मैथिलीमा व्याकरणिक वचन नहुने उल्लेख गरेका छन् (पृ.६९) । यिनले मैथिलीमा एकवचन र बहुवचन छुट्याउन एकवचनमा ‘सब’ तथा ‘सभ’ जोडेर बहुवचन बनाइने कुरा उल्लेख गरेका छन् (जस्तै : जन-जनसब, गाइ-गाइसब आदि) (पृ.६९) ।

कारकको सन्दर्भमा यिनले कारक ‘कर्ता, कर्म (सम्प्रदान) , करण, सम्बन्ध र अधिकरण’ गरी पाँच प्रकारको हुने उल्लेख गरेका छन् (पृ. ७२) । कर्ता कारकमा कुनै विभक्ति नलाग्ने उल्लेख गर्दै कर्मकारकमा ‘के’ (अहाँ मोहनके बजाउ) , करणकारकमा ‘स’ (माइ चक्कुस आम सोहलन्हि), सम्बन्धकारकमा ‘क’ (राजाक बेटा, बनियाक दोकान) अधिकरणकारकमा ‘मे, पर’ (माइ घरमे छथि, पाहुन कुर्सिपर बैसलाह आदि) विभक्ति जोडिने उल्लेख गरेका छन् (पृ.९२) । यिनले ‘मानिस’ शब्दको कारक रूपावली प्रस्तुत गरेर देखाएका छन् । तर यिनले सम्प्रदानलाई कर्मकारकअन्तर्गत राख्नु, सम्बन्धलाई कारक मान्नु , अपादान कारकलाई कारक नमान्नु उचित देखिँदैन किनभने असर पर्नेवाला र पाउनेवाला फरक फरक भएकाले सम्प्रदान कारकलाई छुट्टै कारक मान्नु पर्ने देखिन्छ । त्यसैगरी सम्बन्धकारकको क्रियासँग सम्बन्ध नहुनाले यसलाई कारक मान्नु उचित देखिँदैन । अपादान कारकले छुट्टिने बिन्दु, अवधि आदि बुझाउनुका

साथै क्रियासँग प्रत्यक्ष सम्बन्ध पनि राख्ने भएकाले यसलाई छुट्टै कारक मानेर अध्ययन गर्नु उचित देखिन्छ ।

पुरुषको सन्दर्भमा मैथिली सर्वनाम पुरुष, आदर वचन र कारकबाट चिह्नित हुन्छन् तर लिङ्गबाट हुँदैनन् (पृ. १०३) भनेर उल्लेख गरेका छन् । यिनले मैथिलीमा प्रथम, द्वितीय र तृतीय गरी तीनवटा पुरुष हुने कुरा उल्लेख गरेका छन् । यिनले एकवचनमा 'सब/सभ' तथा 'लोकनि' जोडेर बहुवचन बनाइने उल्लेख गरेका छन् । तर 'लोकनि' को प्रयोग प्राणीवाचक तथा आदरवाची कर्ताको बहुवचनको सन्दर्भमा मात्र प्रयोग हुने उल्लेख गरेका छन् । यिनले प्रथम पुरुष एकवचनमा 'हम' र बहुवचनमा 'हमसब/लोकनि', द्वितीय पुरुष एकवचनमा 'अपने, अहाँ, तूँ (म आ.) तूँ, (अनादर) ' र बहुवचनमा 'अपनेसब/ लोकनि, अहाँसब/लोकनि, तूँसब/ लोकनि, तूँसब' र तृतीय पुरुष एकवचनमा 'ओ (आदर) , ऊ/ओ (अनादर)' र बहुवचनमा 'ओसब/लोकनि, ऊसब/ओसब,' हुने उल्लेख गरेका छन् (पृ.१०३) ।

पक्षको सन्दर्भमा यिनले आधुनिक मैथिलीमा 'अपूर्ण, पूर्ण र तात्कालिक' गरी तीनवटा पक्ष भएको उल्लेख गरेका छन् । यिनले पूर्ण पक्ष जनाउन सकर्मक क्रियाको धातुमा 'ने' (राम खेने अछि । ) तथा अकर्मक क्रियाको धातुमा 'अल' लाग्ने उल्लेख गरेका छन् भने , अपूर्ण पक्ष जनाउन क्रियाको धातुमा 'अइत' (राम खाइत छथि ।) तथा तात्कालिक पक्ष जनाउन क्रियाको धातुमा 'रहल' (राम जा रहल छलाह ।) जोड्नुपर्ने उल्लेख (पृ. १५४) गरेका छन् ।

कालको सन्दर्भमा यिनले मैथिलीमा 'भूत, भविष्यत् र वर्तमान' गरी तीन प्रकारको काल हुने उल्लेख गरेका छन् । यिनले भूतकाल जनाउन क्रियाको धातुमा 'अल', भविष्यत्काल जनाउन 'अब/अत' तथा वर्तमानकाल जनाउन 'o' -शून्य) प्रत्यय जोडिने उल्लेख गरेका छन् (जस्तै : रामेश भोजन केलन्हि (भूत), अहाँ काल्हि जाएब ( भविष्यत्) , तूँ जाइत छि (वर्तमान) । )

भावको सन्दर्भमा यिनले मैथिलीमा 'सामान्यार्थ (नोकर भात खाइत अछि ।), सम्भावनार्थ (ओ उठल होएताह), आज्ञार्थ (हम जाउ, अहाँ चलु), इच्छार्थ (हे

भगवान हम पास भ जाइ, राजा दीर्घायु होइथ ।) , सङ्केतार्थ (जँ अहाँ पढैत छि तँ वेस अछि) गरी पाँच प्रकारको भाव हुने उल्लेख (पृ. १६६) गरेका छन् । यिनले आज्ञार्थ बुझाउन धातुमा ‘उ, अ, अह, ओ, अउथ तथा इच्छार्थ बुझाउन धातुमा ‘इ, अह, ओ’ जोड्नुपर्ने उल्लेख गरेका छन. (पृ. १६२-१६६) ।

आदरार्थीको सन्दर्भमा यिनले ‘अति उच्च, उच्च, मध्यम, र निम्न’ गरी चार प्रकारको आदर हुने उल्लेख गरेका छन् । यिनै आधारमा विश्लेषण गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

## २.४ सारांश

स्वदेशी तथा विदेशी विद्वान्ले गरेको नेपाली तथा मैथिली भाषाको व्याकरणिक कोटिको अध्ययन परम्पराबाट के निष्कर्षमा पुग्न सकिन्छ भने व्याकरणिक कोटि भनेको रूपको व्याकरणिक वैशिष्ट्य वा पहिचान हो, जसलाई रूपसँग सम्बद्ध लिङ्ग, वचन, पुरुष, काल, भाव, पक्ष, वाच्य, कारक आदिले वहन गर्छन् । भाषाका यी व्याकरणात्मक कोटिबाट नै शब्दहरू माभ रहने अन्तर्सम्बन्ध र शब्दका वाक्यात्मक कार्यको बोध हुन्छ । यस्ता व्याकरणिक कोटिहरू नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषामा देखिए तापनि नेपालीमा बढी उर्वर देखिन्छ भने मैथिलीमा यसको विस्तृत अध्ययन अनुसन्धान हुनु जरुरी देखिन्छ । विद्वान्हरूको विश्लेषणबाट व्याकरणिक कोटिका विविध पक्षहरूलाई निष्कर्षमा यसरी प्रस्तुत गर्न सकिन्छ -

लिङ्ग मुख्यतः नामसँग सम्बन्धित व्याकरणात्मक कोटि भए पनि यसको अभिव्यक्ति विशेषण र क्रियामा पनि हुन्छ । नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषामा वाक्यस्तरमा सजीव मानवीय नाममा मात्र लिङ्गभेद गरिन्छ । नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषामा कतिपय लिङ्गभेदक शब्दहरू अलग-अलग देखिन्छन् भने कतिपय चाहिँ पुलिङ्गबाट व्युत्पादित प्रकृतिका छन् । यस आधारमा लिङ्गलाई पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग गरी दुई आधारमा विभाजन गरी अध्ययन गर्नु उचित देखिन्छ ।

वचन सामान्यतः नामको सङ्ख्यासँग सम्बद्ध व्याकरणिक कोटि भए तापनि नेपालीमा यसको प्रभाव सर्वनाम, विशेषण र क्रियासँग पनि देखिन्छ । नेपालीमा आदरार्थीमा पनि बहुवचनको प्रयोग हुने गर्दछ । नेपालीमा वचन भिन्नताका कारण शब्दको रूपमा परिवर्तन आएको देखिन्छ तर मैथिलीमा देखिँदैन । यसरी हेर्दा नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषामा वचन दुई प्रकारका एकवचन र बहुवचन देखिन्छन् । यसै आधारमा अध्ययन गर्नु उचित देखिन्छ ।

वक्ता, श्रोता र विषयसित सम्बन्धित व्याकरणिक कोटि पुरुष हो । यसबाट कुनै पनि अभिव्यक्तिका लागि तीन व्यक्ति वा वस्तुको आवश्यकता पर्दछ । पुरुष मूलतः सर्वनामको व्याकरणिक अभिलक्षण हो तर यसले मैथिली तथा नेपाली दुवै भाषामा क्रियापदको रूपलाई समेत प्रभावित पार्दछ । नेपालीमा ‘म, हामी’ तथा मैथिलीमा ‘हम, हमसभ’ वक्तासँग सन्दर्भित भएर ‘तँ, तिमी’ तथा तूँ, तौँ, अहाँ, अपने श्रोतासँग सन्दर्भित भएर तथा ऊ, उनी तथा ओ, ई विषयसँग सन्दर्भित भएर आउँदछन् । यसलाई प्रथम, द्वितीय र तृतीय पुरुष गरी तीन प्रकारमा अध्ययन गर्नु उचित देखिन्छ । व्याकरणात्मक कोटि आदर मानवीय प्रसङ्गमा बहुवचन वा संयुक्त क्रियाद्वारा व्यक्त हुन्छ । आदर मूलतः श्रोता (द्वितीय पुरुष) र अन्य सन्दर्भ (तृतीय पुरुष) मा व्यक्त हुन्छ । यसका लागि श्रोतासन्दर्भमा आदरार्थी सर्वनामको र अन्य सन्दर्भमा चाहिँ सर्वनामका साथै आदरसूचक नामको प्रयोग हुन सक्ने देखिन्छ । मैथिलीमा आदरवाची शब्दको उल्लेख पाइएता पनि यसको छुट्टै विश्लेषण गरिएको पाइँदैन त्यसैले नेपालीमा उल्लिखित आदरार्थीको आधारमा यसको अध्ययन गर्नु ठीक होला । नेपालीमा दरबारी आदर (उच्चतम आदर), उच्च आदर, मध्यम आदर र सामान्य आदर तह पाइन्छन् ।

काल क्रियापदको समयसङ्केतक कोटि हो । सामान्यतः जसरी बाह्य जगतमा समयलाई भूत, वर्तमान र भविष्यत् गरी तीन क्षेत्रमा विभाजन गरिन्छ, त्यसरी नै व्याकरणात्मक काललाई पनि तीन भागमा छुट्याउन खोजिएको छ, तर रूपायनिक विशेषताहरूले विभेदित भई व्यक्त हुन सकेमा मात्र कालहरू व्याकरणात्मक आधारमा एक-अर्काबाट विभेदक मानिन सक्छन् । भाषाको रूपात्मक व्यवस्थाका आधारमा नेपालीमा दुई काल मात्र फेला पर्छन्:-

(क) भूतकाल र (ख) अभूतकाल । यी दुवै कालले आ-आफ्नो कालिक धारणाअनुसारका रूपायन लिन सक्ने हुँदा यी स्पष्टतः विभेदक हुन्छन् । यहाँ अभूतकाल भन्नाले भूतकालबाहेकका काललाई सङ्केत गर्ने रूपिमयुक्त रचनालाई लिइएको छ । मैथिलीमा वर्तमान, भूत र भविष्यत् गरी तीन प्रकारको काल देखिन्छ । मैथिलीमा कर्ताको श्रेणीअनुसार धातुमा जोडिने प्रत्यय र रूप फरक-फरक देखिन्छन् ।

पक्ष क्रियासँग सम्बद्ध व्याकरणात्मक कोटि हो । परम्परागत व्याकरणमा पक्षलाई कालको भेदका रूपमा देखाइएको पाइन्छ, जुन उपयुक्त देखिँदैन । किनभने पक्षले क्रियाका आन्तरिक प्रकृतिलाई जनाउँछ भने कालले चाहिँ क्रियाको बाह्य परिवेश मात्र जनाउने हुन्छ । कालसँग क्रियाको आन्तरिक कार्य प्रकृतिको खास सरोकार हुँदैन । पूर्णता, अपूर्णता वा निरन्तरता आदि कुरा क्रियार्थगत कार्यसँग सम्बन्धित रहन्छन् तर काल चाहिँ भूत वा वर्तमान परिवेश जनाउनमा मात्र सीमित रहन्छ । यस आधारमा नेपालीमा मुख्यतः चार किसिमका पक्ष व्यक्त हुन्छन्:- अपूर्ण, पूर्ण, अभ्यस्त र अज्ञात । सामान्य (भूत, वर्तमान र भविष्यत्) जनाउनेलाई पक्षमा लिइएको छैन, किनभने यी पक्षबाट चिह्नित हुँदैनन्, यिनको पहिचान कालका आधारमा मात्र हुन्छ । मैथिलीमा 'पक्ष'को छुट्टै चर्चा गरिएको पाइँदैन, त्यसैले नेपालीकै आधारमा चर्चा गर्नु उचित देखिन्छ ।

भाव काल र पक्षभन्दै भिन्न रूपमा बुझिने एक व्याकरणिक धारा हो । यस अनुसार वास्तविकता, निश्चय, अनिश्चय, इच्छा, आज्ञा, सम्भावना, सङ्केत, सन्देह आदि विशेष भाव बुझाउन क्रियामा हुने रूपायन विशेषलाई भाव वा वृत्ति वा अर्थ भन्न सकिन्छ । नेपालीमा व्याकरणात्मक दृष्टिले चिह्नित हुन सक्ने भाव मुख्यतः तीन किसिमका देखिन्छन्: विध्यर्थ, सम्भावनार्थ र सङ्केतार्थ । यस बाहेक कुनै विशेष भाव नजनाई वाक्यको सामान्य अवधारणा मात्र बुझाउनेलाई सामान्यार्थ भनिन्छ । मैथिलीमा पूर्व वैयाकरणहरूले क्रियाको भाव माथि ध्यान दिएको देखिँदैन तर आधुनिक मैथिली व्याकरणमा अङ्ग्रेजीको नक्कलका आधारमा भावलाई समावेश गरेका हुनाले नेपाली वर्गीकरण अनुसार नै यसको अध्ययन गर्नु उचित देखिन्छ ।

वाक्यमा कर्ता, कर्म वा भाव (क्रिया) मध्ये कुनै एकलाई प्रधान मान्ने व्याकरणात्मक युक्ति वाच्य भनिएको देखिन्छ, साथै यो मुख्यतः क्रियासित सम्बन्धित भएर व्यक्त भएको देखिन्छ । वाक्यतत्त्वको प्रधानता वा वाच्यताका आधारमा नेपालीमा वाच्यहरू तीन किसिमको हुने प्रष्टिन्छ । कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य र भाववाच्य र यो विभाजन नेपाली तथा मैथिली दुवैमा देखिन्छ । मैथिलीमा फलभागीसँग भाववाच्यको मेल रहेको देखिन्छ ।

वाक्यको वाह्य संरचनामा विभिन्न कार्य सम्पादन गर्न आएका नामिक पद वा क्रियाको सम्बन्धलाई कारकका रूपमा लिन सकिन्छ । नामिक पदमा विभिन्न विभक्ति प्रत्ययका माध्यमबाट वाक्यअन्तर्गतका पदहरूको पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित गरी क्रियामा अन्विती हुनु नै कारक देखिन्छ । नेपाली र मैथिली भाषामा कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध र अधिकरणको तिर्यक् प्रयोग भएको पाइन्छ । दुवै भाषामा सामान्यतः रूप लगाई कारकको बोध गराइएको पाइन्छ । तसर्थ तिर्यक् कारकभित्र अर्थका आधारमा वर्गीकरण गरिएका कारकलाई राखी तुलनात्मक चर्चा गर्नु उचित देखिन्छ ।

## तेस्रो परिच्छेद

### नेपाली र मैथिली भाषाका लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदरसम्बन्धी व्याकरणिक कोटिको तुलना

#### ३.१ परिचय

यस परिच्छेदमा नेपाली भाषा र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटि अन्तर्गत लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर सम्बन्धी शीर्षक र उपशीर्षकमा केन्द्रित रहेर विभिन्न उदाहरणसहित व्याख्या, विश्लेषण गरी यी दुई भाषाका उक्त कोटिहरूबीच देखिने समानता र भिन्नता तथा यससम्बन्धी मैथिली भाषाको विशेषतालाई देखाउने प्रयास गरिएको छ ।

#### ३.२ लिङ्ग

लिङ्गलाई विभिन्न स्थितिमा देखाउन सकिन्छ -

##### ३.२.१ शब्दगत

नेपाली भाषाको व्याकरणिक व्यवस्था अनुसार केही शब्दहरूबाट स्त्रीलिङ्गको बोध हुनुका अतिरिक्त केही यस्ता शब्दहरू छन् जुन शब्दहरू स्वतन्त्र शब्दहरू नभई ती पुलिङ्ग शब्दहरूमा प्रत्यय लगाएर लिङ्ग परिवर्तन गरी शब्दहरू व्युत्पन्न हुने गरेको पाइन्छ । त्यसैगरी मैथिली भाषामा पनि केही स्वतन्त्र शब्दहरूबाट स्त्रीलिङ्गको बोध हुनुका अतिरिक्त केही शब्दहरूमा प्रत्यय लगाई पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्गमा परिवर्तन भई शब्दहरू व्युत्पन्न हुने गरेको पाइन्छ । जस्तै:

| नेपाली                          | मैथिली                          |
|---------------------------------|---------------------------------|
| पुलिङ्ग + प्रत्यय = स्त्रीलिङ्ग | पुलिङ्ग + प्रत्यय = स्त्रीलिङ्ग |
| केटो + ई = केटी                 | छौँडा + ई = छौँडी               |
| काका + ई = काकी                 | काका + ई = काकी                 |
| राक्षस + इनी = राक्षसिनी        | राक्षस + ई = राक्षसी            |

कामी + इनी = कमिनी

धोबी + इनी = धोबिनी

पण्डित + नी = पण्डित्नी

खनाल+ नी = खनाल्नी

बाघ + इनी = बाघिनी

नाग + इनी = नागिनी

थापा + इनी = थपिनी

चमार + इनी = चमिनी

गुरुङ् + एनी = गुरुङ्सेनी

भोटे + एनी / इनि = भोटेनी / भोटिनी

धानुक + आइन = धनुकाइन

धोबि + नि = धोबिनि

चोर + नी = चोरनी

मुसहर+ नी = मुसहरनी

बाघ + इनि = बाघिनि

नाग + इनि = नागिनि

अमात+ इनि = अमातिनि

चमार + आइनि = चमाइनि

चमार + आनि / ऐनि = चमानि / चमैनि

मोदि + आइनि / आइन = मोदियाइनि

/ मोदियाइन

पण्डित + आइनि / आइन = पण्डिताइनि

/ पण्डिताइन

त्यसैगरी,

नेपाली

मैथिली

पुलिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग

पुलिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग

भाले मयुर

पोथी मयुर

नर परबा

मेदिन परबा

सानाबा

सानीमा

पुरुषलोक

स्त्रीलोक

बुद्धिमान्

बुद्धिमती

बुद्धिमान

बुद्धिमति

पुत्रवान्

पुत्रवती

पुत्रवान

पुत्रवती

राजा

रानी

राजा

रानी

डालो

डाली

डाला

डाली, आदि ।

उपर्युक्त शब्दहरूका आधारमा के भन्न सकिन्छ भने, नेपाली भाषामा स्वतन्त्र पुलिङ्ग शब्द वा आधारपदमा ई, इनी/एनी,नी आदि जस्ता प्रत्यय लागेर वा रूपायित

भएर स्त्रीलिङ्ग शब्द व्युत्पादित हुने प्रक्रिया प्रशस्त छन् भने मैथिली भाषामा पनि ई, आइन/आइनि, आनि, एनी, नी आदि जस्ता प्रत्यय लागेर वा रूपायित भएर स्त्रीलिङ्ग शब्द व्युत्पादित हुने प्रक्रिया प्रशस्त छन् । त्यसैगरी, नेपालीमा कतै शब्दको अधिल्लो रूप फेरेर तथा कतै पछिल्लो रूप फेरेर तथा पूरै रूप फेरेर पनि पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्गमा परिवर्तन गरेको देखिन्छ, साथै 'मान्' तथा 'वान्' लाई क्रमशः 'मती' तथा 'वती' मा परिवर्तन गरेर पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्ग बनाएको देखिन्छ । मैथिलीमा पनि नेपालीमा जस्तै अधिल्लो रूप फेरेर, 'मान' तथा 'वान' लाई क्रमशः 'मती' तथा 'वती' मा परिवर्तन गरेर पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्गमा परिवर्तन गरेको देखिन्छ ।

मैथिलीमा अर, अल, अह वा ओट प्रत्ययान्त विशेषणशब्दको अन्तिम वर्णलाई ह्रस्व 'इ' मा बदलेर स्त्रीलिङ्ग रूप बनाइन्छ; जस्तै:- (दूबर-दूबरि, सुन्नर-सुन्नरि, अभागल-अभागलि, लूह-लूहि, छोट-छोटि, मोट-मोटी) आदि । त्यसैगरी, आर, आह, अथवा हार प्रत्ययान्त विशेषण शब्दको अन्तिम वर्णलाई पनि ह्रस्व 'इ' मा बदलिएर स्त्रीलिङ्ग रूप बनाइन्छ, जस्तै:- (कुमार-कुमारि, बताह-बताहि, देखनिहार-देखनिहारि आदि ।)

नेपालीमा 'ई', इनी/एनी, आ, प्रत्यय जोडेर, 'अक' प्रत्ययलाई 'इका' बनाएर, 'नी' प्रत्यय थपेर 'वान्' र 'मान्' लाई क्रमशः 'वती' र 'मती' मा परिवर्तन गरेर अधिल्लो; पछिल्लो तथा पूरै रूप फेरेर पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्गी रूपमा सामान्य तरिकाले परिवर्तन गरिन्छ भने मैथिलीमा केही भिन्नै तरिकाले स्त्रीलिङ्गी प्रत्ययहरूको प्रयोग गरिएको देखिन्छ; जस्तै:-

१. 'इ'-यो प्रत्यय प्रायः सबै अकारान्त उभयलिङ्ग पदमा लाग्दछ; सुकुमार- सुकुमारि आदि ।
२. 'ई'- यो सामान्यतः आकारान्त पदमा लाग्दछ; घोडा -घोडी, बेटा-बेटी, काका-काकी आदि ।
३. 'इनि'-यो जातिवाचक पदमा लाग्दछ; बाघ-बाघिनि, नाग-नागिनि, अमात-अमातिनी आदि ।

४. 'इनी'-यो पनि 'इनि' कै रूपान्तर हो, जो कुनै-कुनै जातिवाचक पदमा वैकल्पिक रूपले 'इनि'को सँगै लाग्दछ; सोनार-सोनारिनि/सोनारिनी, अमात-अमातिनी/अमातिनी आदि ।
५. 'आइनि'-यो केही उपाधि तथा जातिवाचक पदमा लागेको पाइन्छ; पण्डित-पण्डिताइनि, पित्ती-पित्तिआइनि, ठाकुर-ठाकुराइनि आदि ।
६. 'नि'- यो पनि 'इनि' कै रूपान्तर हो; जसको अन्त्यमा 'इ' स्वर रहन्छ, त्यहाँ 'इनि' को सट्टामा सोभै 'नि' आउँदछ; तेलि-तेलिनि, धोबि-धोबिनि आदि ।
७. 'नी'- कतिपय जाति तथा व्यवसायवाचक नाममा लाग्दछ; मुसहर-मुसहरनी, चोर-चोरनी, गरिब-गरिबनी आदि ।

आधुनिक युगमा केही पुराना लेखकहरूले प्राचीन नेपाली तथा मैथिलीमा संस्कृत, हिन्दी भाषाजस्तै शब्दगत लिङ्गभेद देखेर मैथिली तथा नेपालीमा कतिपय अप्राणिवाचक शब्दको प्रयोग स्त्रीलिङ्ग जस्तै गरेका छन्; जस्तै: नेपालीमा (गैह्री खेत, राती गेडी) तथा मैथिलीमा पुरना घर, पुरनी पोखरि, भुतहा बाध, भुतही गाछी, नबकी गाछी आदि । तर ती सबै अतीतका कुरा हुन् । आजको नेपाली तथा मैथिलीमा अप्राणीवाचक सबै शब्द नपुंसक हुन् त्यसैले लिङ्गभेद खोज्नु उचित होइन । मैथिलीमा ह्रस्व 'इ' संवृत अग्रस्वरको सूचक हो । पदान्तमा ह्रस्व 'इ' को उच्चारण मैथिलीको एउटा व्यापक विशेषता हो । मानक मैथिलीको शुद्ध उच्चारणमा यही ध्वनिमाथि विशेष ध्यान राख्नु परेकाले स्त्रीलिङ्गी रूपका लागि प्रयोग गरिने प्रत्यय राख्दा बडो विचार पुर्‍याउनु पर्ने देखिन्छ, जुन मैथिलीको आफ्नै विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेकी पक्ष पनि हो ।

यसरी नेपालीमा व्युत्पादनात्मक आधारमा पुलिङ्ग-स्त्रीलिङ्गको स्थिति कोमलता-कठोरता (रातो गेडो-राती गेडी, उज्यालो रात-उजेली रात ), वृहत्त्व र लघुत्व (डालो-डाली) जस्तै मैथिलीमा पनि वृहत्त्व र लघुत्व (डाला-डाली) देखिनुले दुई भाषामा समानता देखिन्छ भने कोमलता-कठोरताको स्थितिका साथै स्त्रीलिङ्गी रूपबोधक प्रत्यय प्रयोगका दृष्टिले नेपालीभन्दै मैथिली बढी उत्पादक देखिनुले यी दुवै भाषाका व्यतिरेकलाई प्रष्ट्याउँछ ।

### ३.२.२ वाक्यगत

वाक्यका एकभन्दै बढी पदमा जब लिङ्गका दृष्टिले रूपात्मक अनुकूलता प्रकट हुन्छ तब लिङ्ग वाक्यात्मक हुने सम्भावना रहन्छ । नेपालीमा मानवीय नाम कर्ता भएर आएमा नाममा निहित पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्गको लक्षण अनुरूप क्रियापदमा पनि रूपहरू फरक पर्छन् । मैथिलीमा पनि यस्तो फरकपना देखिन्छ । मैथिलीमा उमेरको हदले क्रियामा महत्त्वपूर्ण प्रभाव पार्छ । जस्तै:-

| नेपाली                     | मैथिली                      |
|----------------------------|-----------------------------|
| नोकर आयो ।                 | नोकर एलै ।                  |
| नोकर्नी आई ।               | नोकर्नी एलीह ।              |
| नवीनले खायो ।              | नवीन खेलकै ।                |
| नवीनाले खाई ।              | नवीना खेलकै/खयलीह ।         |
| तिमी गयौ । ( पु./स्त्री. ) | तौं गेलही । ( पु./स्त्री. ) |

त्यसैगरी,

| नेपाली                     | मैथिली                     |
|----------------------------|----------------------------|
| पुलिङ्ग      स्त्रीलिङ्ग   | पुलिङ्ग      स्त्रीलिङ्ग   |
| हाम्रो साथी    हाम्री साथी | हमर सँगी    हमर सँगिनी     |
| केटो साथी    केटी साथी     | छउड़ा सँगी    छउड़ी सँगिनी |
| सानो छोरो    सानी छोरी     | छोटका बेटा    छोटकी बेटी   |

उपर्युक्त उदाहरणको आधारमा के भन्न सकिन्छ भने , नेपालीका वाक्यमा कर्ता पुलिङ्गी, हुँदा क्रिया पनि पुलिङ्गी, कर्ता स्त्रीलिङ्गी हुदाँ क्रिया पनि स्त्रीलिङ्गी छ भने मैथिली वाक्यमा द्वितीय पुरुष (मध्यम पुरुष) कर्ताहुदाँ क्रियारूप उही रहेको देखिन्छ भने तृतीय पुरुष (मध्यम पुरुष) को कर्ता पुलिङ्गी भए क्रिया पुलिङ्गी, कर्ता स्त्रीलिङ्गी भए क्रियापनि स्त्रीलिङ्गी भएको देखिन्छ ।

त्यसैगरी नेपालीमा लिङ्गका दृष्टिले अचिह्नित भएका विशेषण वा विशेषणस्थानिकले पनि विशेष्यको सन्दर्भअनुसारको लिङ्गलाई दर्शाउन सकेको देखिन्छ भने मैथिलीमा (षष्ठी विभक्ति) जोडिएका विशेषण वा विशेषणस्थानिकले विशेष्यको सन्दर्भअनुसारको लिङ्गलाई दर्शाउन सकेको देखिँदैन तर अन्य विशेषणस्थानिकले विशेष्यको सन्दर्भअनुसारको लिङ्गलाई दर्शाउन सकेको देखिन्छ । अर्थात् नेपालीमा जस्तो विशेष्यको लिङ्गअनुसार विशेषण र भेद्यको लिङ्ग अनुसार भेदको लिङ्ग निर्धारित छैन ।

अंग्रेजी भाषामा जस्तो नेपाली र मैथिली भाषाका सर्वनामका तहमा लिङ्गभेद देखा पर्दैन अर्थात् नामको सन्दर्भमा आउने सर्वनामहरूमा लिङ्गका दृष्टिले छुट्टै शब्द/रूप हुँदैन तापनि यिनले दर्शाउने सन्दर्भअनुसार क्रियापदका रूपहरूको छनोट गरिने हुन्छ, जस्तै:-

| नेपाली                            | मैथिली                    |
|-----------------------------------|---------------------------|
| यो/त्यो /ऊ दौड्यो । (पु.)         | ई/ओ दौड़लाह । (पु.)       |
| यो/त्यो/ऊ दौडी । (स्त्री.)        | ई/ओ दौड़लीह (स्त्री.)     |
| उहाँ जानुभयो । (पु.)              | ओ गेलाह । (पु.)           |
| उहाँ जानुभयो । (स्त्री.)          | ओ गेलीह । (स्त्री.)       |
| यिनी/तिनी/उनी/ दौडे । (पु.)       | ई/ओ दौड़लाह । (पु.)       |
| यिनी/तिनी/उनी/ दौडिन् । (स्त्री.) | ई/ओ दौड़लीह । (स्त्री.)   |
| तँ गइस् । (पु./स्त्री.)           | तुँ गेलही । (पु./स्त्री.) |
| उसले भात खायो । (पु.)             | ओ भात खएलक । (पु.)        |
| उसले भात खाई । (स्त्री.)          | ओ भात खएलक । (स्त्री.)    |

उपर्युक्त उदाहरणहरूका आधारमा के भन्न सकिन्छ भने नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषाका वाक्यमा आएका सर्वनामको लिङ्गका दृष्टिले एउटै रूप छ अर्थात् पुलिङ्ग

तथा स्त्रीलिङ्ग दुवै क्रियाका लागि एउटै सर्वनाम रूपको प्रयोग भएको देखिन्छ । यसरी मैथिलीमा उच्चतम तथा मध्यम आदरार्थी बुझाउने ‘ई,ओ’ सर्वनाम कर्ताको रूपमा आउँदा क्रियामा लिङ्गभेद देखापरेको छ तर सामान्य आदरार्थी बुझाउने ‘तुँ’ सर्वनाम कर्ताको रूपमा आउँदा क्रियामा लिङ्गभेद देखापरेको छैन भने नेपालीमा कर्ता अनादर/सामान्य आदर हुँदा क्रियामा लिङ्गभेद देखापरेको छ तर उच्चआदरार्थी कर्ता हुँदा क्रियामा लिङ्गभेद देखापरेको छैन । यसरी वाक्यात्मक संरचनामा आएका कर्ता र क्रियाले समान रूपगत अभिलक्षण देखाउन नसक्नु मैथिलीको विशेषताका साथै नेपालीसँग व्यतिरेक देखिन्छ ।

यसरी माथिका नेपाली तथा मैथिली भाषाका वाक्यहरूमा कर्ताअनुसार क्रिया रहेको र कर्ता पुलिङ्गी भए क्रिया पनि पुलिङ्गी र कर्ता स्त्रीलिङ्गी भए क्रिया पनि स्त्रीलिङ्गी रहेको देखिन्छ ।

मैथिलीमा उच्चतम आदरार्थी कर्ताको क्रियामा लिङ्गभेद देखापर्नु तर नेपालीमा देखा नपर्नुले एकातिर मैथिलीको भाषागत विशेषता भल्किनुका साथै अर्कोतिर नेपालीसँगको व्यतिरेकलाई स्पष्ट पार्छ । यद्यपि यी दुईभाषाका सर्वनाममा अंग्रेजीमा जस्तै लिङ्गभेद नहुनुले समानतालाई देखाउँछ । मैथिलीमा अकर्मक क्रियामा लिङ्गभेद हुनु तर सकर्मक क्रियामा लिङ्गभेद नहुनु मैथिलीको विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक देखिन्छ ।

### ३.३ वचन

वचनलाई शब्दस्तर र वाक्यस्तरमा निम्नलिखित तरिकाले देखाउन सकिन्छ;

#### ३.३.१ शब्दगत

‘वचन’ सामान्यतः नामका सङ्ख्यासँग सम्बद्ध व्याकरणिक कोटि भए पनि यसको प्रभाव सर्वनाम, विशेषण र क्रियासँग देखिन्छ । नेपाली भाषामा आदरार्थीमा पनि बहुवचनको प्रयोग हुने गर्दछ । नेपाली भाषामा ओकारान्त शब्दलाई आकारान्तमा परिणत गरी वा ‘हरू’ रूप जोडेर तथा विशेषणका अन्तिम ‘ई, ऊ, र ओ’ रूपलाई

‘आ’ मा फेरेर बहुवचन रूप बनाइएको देखिन्छ भने मैथिलीमा नाम ,सर्वनाम, मानवीयमा गण, दल, सब/सभ, लोकनि, समूह, समुदाय, सबहि (षष्ठी विभक्तिसंग मात्र) आदि र अमानवीयमा ‘सभ, लोकनि, समूह, समुदाय’ रूप जोडेर बहुवचन बनाइन्छ, जस्तै :

| नेपाली        |                | मैथिली     |                                                                   |
|---------------|----------------|------------|-------------------------------------------------------------------|
| एकवचन         | बहुवचन         | एकवचन      | बहुवचन                                                            |
| छात्र         | छात्रहरू       | छात्र      | छात्रगण/छात्रदल/छात्रलोकनि/<br>छात्रसभ/छात्रसमूह/छात्रसमुदाय      |
| पोथी          | पोथीहरू        | पोथी       | पोथीसभ/पोथीसमूह                                                   |
| योगी          | योगीहरू        | योगी       | योगीगण/योगीदल/योगीलोकनि/<br>योगीसब/योगीसभ/योगीसमूह/<br>योगीसमुदाय |
| बाटो          | बाटो/हरू       | बाट        | बाटसभ                                                             |
| म             | हामी/हरू       | हम         | हमसभ                                                              |
| तँ            | तिमीहरू        | तुँ        | तुँसभ                                                             |
| ऊ/यो/त्यो     | उनीहरू/यिनीहरू |            |                                                                   |
|               | /तिनीहरू       | ओ/ई        | ओसभ/ईसभ/लोकनि                                                     |
| उनी/यिनी/तिनी | उनीहरू/यिनीहरू |            |                                                                   |
|               | /तिनीहरूओ/ई    |            | ओसभ/ईसभ/लोकनि                                                     |
| काली केटी     | काला केटीहरू   | कारी छौँडी | कारी छौँडीसभ                                                      |
| गोरी          | गोरा           | गोरि       | गोरि                                                              |
| मसिनु मसिना   |                | मेंही      | मेंही                                                             |

उपर्युक्त उदाहरणहरूका आधारमा नेपाली भाषामा ओकारान्त शब्दलाई आकारान्तमा परिवर्तन गराउँदा एकवचनमा ‘आ’ वा ‘हरू’ रूप जोडेर तथा

विशेषणका अन्तिम 'ई, ऊ र ओ' रूपलाई 'आ' मा फेरेर साथै सर्वनाममा सामान्यतः 'हरू' रूप जोडेर बहुवचन बनाइएको पाइन्छ भने मैथिलीमा गण,दल, लोकनि, सब/सभ, समूह,समुदाय, सबहि (षष्ठि विभक्तिसँग मात्र) आदि रूप जोडेर बहुवचन बनाइएको पाइन्छ । मैथिलीमा विशेषणमा वचनभेद देखिँदैन; साथै 'ई' शब्दको बहुवचन रूप एकवचनको रूपमा प्राणीवाचक पुलिङ्ग एवम् स्त्रीलिङ्गमा 'लोकनि' तथा अप्राणीवाचकमा 'सभ' जोडेर बनाइन्छ; जुन मैथिलीको आफ्नै विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

### ३.३.२ वाक्यगत

नेपाली भाषामा नाम र सर्वनामको क्रियासँग वचनमा मेल र नामको विशेषणमाथि लिङ्गको शासन हुन्छ तर मैथिलीमा नामको विशेषणमाथि लिङ्गको शासन भए तापनि क्रिया रूपायित नहुने हुदाँ एकै रूपको क्रिया प्रयोग हुने गर्दछ । जस्तै:

#### नेपाली

#### मैथिली

सानो केटोले खायो । ( ए.व.)

छोटका छउड़ा खएलक । ( ए.व.)

साना केटाहरूले खाए । ( ब.व.)

छोटका छउड़ासभ खएलक । ( ब.व.)

सानी केटीले खाई । ( ए.व.)

छोटकी छउड़ी खएलक । ( ए.व.)

साना केटीहरूले खाए । ( ब.व.)

छोटकी छउड़ीसभ खएलक । ( ब.व.)

माथिका नेपाली वाक्यहरूमा कर्ता एकवचनमा हुँदा क्रियापनि एकवचनमा तथा कर्ता बहुवचनमा हुदाँ क्रियापनि बहुवचनमा रहेको देखिन्छ, त्यसैगरी नामको विशेषणमाथि लिङ्गको शासन भएको देखिन्छ, तर मैथिली भाषामा वाक्यहरूमा कर्ता एकवचन हुदाँ क्रियाको जुन रूप रहेको छ, बहुवचन हुँदा पनि उही रूप रहेको छ; मात्र कर्तामा बहुवचनबोधक प्रत्यय जोडिएको देखिन्छ । साथै मैथिलीमा नामको विशेषणमाथि लिङ्गको शासन भए तापनि वचनमा मेल देखिँदैन, जसबाट दुई भाषामा वाक्यगत दृष्टिले व्यतिरेक स्वतः प्रष्ट हुन जान्छ ।

### ३.४ पुरुष

पुरुष मूलतः सर्वनामको व्याकरणिक अभिलक्षण हो, तर यो नेपालीमा क्रियामासमेत पाइन्छ । नेपालीमा जस्तै मैथिलीमा पनि पुरुष तीन किसिमका छन्:

#### नेपाली

#### मैथिली

##### प्रथम पुरुष

##### उत्तम पुरुष

एकवचन

बहुवचन

एकवचन

बहुवचन

म

हामी (हरू)

हम

हम/हमसभ/हमरासभ

##### द्वितीय पुरुष

##### मध्यम पुरुष

एकवचन

बहुवचन

एकवचन

बहुवचन

तँ

तिमीहरू

तुँ/तौ

तुँसभ/तौसभ

तिमी

तिमीहरू

तौ

तौसभ

तपाईँ

तपाईँहरू

अहाँ

अहाँसभ

हजुर

हजुरहरू

अपने

अपनेसभ/अपनेलोकनि

##### तृतीय पुरुष

##### अन्य पुरुष

एकवचन

बहुवचन

एकवचन

बहुवचन

ऊ/त्यो/यो उनीहरू/तिनीहरू

ओ/ई

ओसभ/ ईसभ/

/यिनीहरू

ओलोकनि

उनी/तिनी/ उनीहरू/तिनीहरू

ओ/ई

ओसभ/ ईसभ/

यिनी

/यिनीहरू

ओलोकनि

उहाँ

उहाँहरू

ओ

ओसभ/ ओलोकनि

### ३.४.१ प्रथम पुरुष

वक्ताको सन्दर्भमा आउने ‘म’ र ‘हामी’ सँग अन्वित हुन सक्ने विशेषण तथा भेदकहरू पनि सर्वनामद्वारा सन्दर्भित हुने लिङ्ग र वचनानुरूप प्रयुक्त हुन्छन् । प्रथम पुरुषलाई वक्तासन्दर्भ पनि भनिन्छ<sup>१०</sup> जस्तै:

#### नेपाली

मैले पढेको छु ।

हामीले पढेका छौं ।

मैले पढेकी छु

हामीले पढेका छौं ।

म श्यामको दाजु हुँ ।

हामी श्यामका दाजु हौं ।

म श्यामकी दिदी हुँ ।

हामी श्यामका दिदी हौं ।

#### मैथिली

हम पढ़ने छी/पढ़ि चुकल छी ।

हमसभ पढ़ने छी/पढ़ि चुकल छी ।

हम पढ़ने छी/पढ़ि चुकल छी ।

हमसभ पढ़ने छी/पढ़ि चुकल छी ।

हम श्यामक भैया छी ।

हमसभ श्यामक भैया छी ।

हम श्यामक बड़की बहिन छी ।

हमसभ श्यामक बड़की बहिन छी आदि ।

उपरोक्त दुवै भाषाका उदाहरणमा एकवचनमा ‘हम (म)’ र बहुवचनमा ‘हमसभ (हामी)’ देखिन्छ । मैथिलीमा ‘हम’ र ‘हम’सँग सम्बन्धित पक्षका व्यक्तिहरू ‘हमसभ’ लाई बहुवचन मानिएको देखिन्छ । मैथिलीमा ‘हमरासभ/हमरासब’ बहुवचन रूप वैकल्पिक वा पर्यायका रूपमा प्रयोग हुने गर्दछन् । नेपालीमा पुरुषको वचन परिवर्तन हुँदा क्रियारूपमा पनि परिवर्तन आएको देखिन्छ । अर्थात् पुरुषको कर्ता एकवचनमा हुँदा क्रिया एकवचनमा तथा कर्ता बहुवचनमा हुँदा क्रिया बहुवचनमा परिवर्तन भएको छ तर मैथिलीमा पुरुषको कर्ता एकवचनमा हुँदा क्रिया एकवचनमा र

<sup>१०</sup> अधिकारी, हेमाङ्गराज, पूर्ववत्, पृ. ८९ ।

कर्ता बहुवचनमा हुँदा पनि क्रिया एकवचनकै रूपमा रहेको छ, अर्थात् क्रियामा कुनै परिवर्तन आएको छैन ।

नेपालीमा 'म' मा विभक्ति लाग्दा प्रथमा एकवचनमा 'मैले' र षष्ठीमा 'मेरो' भएजस्तै मैथिलीमा 'हम'मा शून्य विभक्ति लागेर प्रथमा एकवचन र षष्ठीमा 'हम' मा 'र' लागेर 'हमर' र बहुवचनमा 'सबहक', 'लोकनिक' रूपहरू लागेर 'हमरासबहक, हमरालोकनिक' रूपहरू हुन्छन् । मैथिलीमा एकवचन र बहुवचन पुरुषका क्रिया रूपहरू पर्यायका रूपमा प्रयोग गर्न सकिने देखिन्छन् जुन मैथिलीको विशेषता पनि मानिन्छ । मैथिलीमा नेपालीमा जस्तै षष्ठी विभक्ति लाग्दा पुरुषको लिङ्ग नछुट्टिनु व्यतिरेक मानिन्छ ।

### ३.४.२ द्वितीय पुरुष

द्वितीय पुरुषमा वक्ताको विषयवस्तु श्रोता हुन्छ । त्यसैले यसलाई श्रोतासन्दर्भ पनि भनिन्छ । एकवचनमा 'तँ'द्वारा सन्दर्भित हुने लिङ्ग र वचनअनुसार क्रियापद, विशेषण र भेदकहरूमा समेत सङ्गति रहन्छ ।<sup>११</sup>

यसरी श्रोताको सन्दर्भ जनाउने सर्वनाम द्वितीय पुरुष हुन्छ । जस्तै:

| नेपाली                               | मैथिली                                |
|--------------------------------------|---------------------------------------|
| तँ जान्छस् । (पु., ए.व.)             | तुँ जाइ छी/छें । (पु./स्त्री., ए. व.) |
| तँ जान्छेस् । (स्त्री., ए.व.)        | तुँसभ जाइछी/छें । (ब. व. )            |
| तिमी जान्छौ । (पु., ए.व.)            | ताँ जाइछह । (पु, ए.व)                 |
| तिमी जान्छ्यौ । (स्त्री., ए. व. )    | ताँ जाइछह । (स्त्री,ए.व)              |
| तिमीहरू जान्छौ । (ब. व. )            | तोरासब जाइ छह । (ब.व.)                |
| तपाईं जानुहुन्छ । ( पु.,स्त्री,ए.व.) | अहाँ जाइत छिएक । (पु./स्त्री.,ए. व.)  |
| तपाईंहरू जानुहुन्छ । (ब.व)           | अहाँसभ जाइत छिएक (ब.व), आदि ।         |

<sup>११</sup> अधिकारी, हेमाङ्गराज, पूर्ववत्, पृ. ८९ ।

उपर्युक्त उदाहरणहरूका आधारमा नेपालीमा तँ/तिमी/तपाईँ आदि एकवचन र 'हरू' रूप लागेर बहुवचन बनेका सर्वनाम जस्तै गरी मैथिलीमा तूँ/तौँ/अपने आदि एकवचन र 'सभ' र 'लोकनि' रूप लागेर बहुवचन बनेका सर्वनाम शब्दलाई द्वितीय पुरुष सर्वनाम शब्दका रूपमा प्रयोग गरेको पाइन्छ । नेपालीमा 'तँ' मा विभक्तिलागदा प्रथमा एकवचनमा 'तैंले' र मैथिलीमा 'तूँ'मा शून्य विभक्तिलागदा प्रथमा एकवचनमा 'तूँ'(तैंले) हुन्छ । नेपालीमा एकवचनमा षष्ठी विभक्ति प्रयोग हुँदा तेरो/तेरा/तेरी, तिम्रो/तिम्रा/तिम्री रूपहरू भएजस्तै मैथिलीमा एकवचनमा षष्ठी विभक्ति प्रयोग हुँदा तोहर/तोहरा रूपहरू हुन्छन् ।

नेपालीमा बहुवचन बनाउँदा 'तिमी' मा 'हरू' अनिवार्य रूपमा जोडिने हुँदा यसको षष्ठीमा 'तिमीहरूको/तिमीहरूका/तिमीहरूकी' रूपहरू भएजस्तै मैथिलीमा 'तूँ/तो' मा 'सबहक', 'लोकनिक' अनिवार्य रूपमा जोडिएर 'तोरासबहक', रूप हुन्छ । तर यसमा नेपालीमा जस्तै षष्ठी विभक्ति लागेका पुरुषमा लिङ्गभेद हुँदैन, साथै द्वितीय पुरुषको क्रियारूप पुलिङ्ग/स्त्रीलिङ्ग दुवैमा एकै समान हुनु मैथिलीको आफ्नो विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

### ३.४.३ तृतीय पुरुष

वक्ता वा श्रोताबाहेकको कथ्य विषयवस्तु तृतीय पुरुषमा व्यक्त हुन्छ । यसलाई अन्यसन्दर्भ पनि भनिन्छ ।<sup>१२</sup> अर्थात् वक्ता र श्रोताबाहेकको सन्दर्भ दर्शाउने सर्वनामलाई तृतीय पुरुष भनिन्छ, जस्तै:

| नेपाली                         | मैथिली                       |
|--------------------------------|------------------------------|
| ऊ/त्यो/यो/यी/ती (ए. व.)        | ओ/ई (ए. व.)                  |
| उनी/तिनी/यिनी (ए. व.)          | ओ/ई (ए. व.)                  |
| उनीहरू/तिनीहरू/यिनीहरू (ब. व.) | ओसभ/ओलोकनि/ईसभ/ईलोकनि (ब.व.) |
| उहाँ (ए. व.)                   | ओ (ए. व.)                    |
| उहाँहरू (ए. व.)                | ओसभ/ओलोकनि (ब.व.) ।          |

<sup>१२</sup> पूर्ववत्, पृ. ९० ।

उपर्युक्त उदाहरणहरूका आधारमा नेपालीमा 'यो/यी/यिनी' निकटवर्ती र 'ऊ/त्यो/ती/तिनी/उनी/उहाँ' दूरवर्ती एकवचन र 'यी/ती/यिनीहरू/तिनीहरू/उनीहरू' निकटवर्ती र दूरवर्ती दुवै मानवीय-अमानवीय सन्दर्भमा बहुवचनमा प्रयुक्त हुने गर्दछन् । मैथिलीमा 'ओ/ई' मध्ये 'ई' निकटवर्ती र 'ओ' दूरवर्ती एकवचन तथा मानवीय-अमानवीय दुवै सन्दर्भमा प्रयुक्त हुने गर्दछन् र 'ओसभ,ओलोकनि, ईसभ, ईलोकनि' बहुवचनमा प्रयुक्त हुने गर्दछन्, जसमध्ये 'ई' शब्दको बहुवचन रूप एकवचनको रूपमा प्राणीवाचक पुलिङ्ग एवम् स्त्रीलिङ्गमा 'लोकनि' तथा अप्राणीवाचक पुलिङ्ग एवम् स्त्रीलिङ्गमा 'सभ/सब' जोडेर प्रयुक्त भएको देखिन्छ, जुन मैथिलीको विशेषता पनि हो । यसरी मैथिली भाषामा प्रथम पुरुष र द्वितीय पुरुषको भन्दै तृतीय पुरुषको प्रयोग क्षेत्र भिन्न देखिन आउँछ ।

नेपालीमा विभक्तिलागदा प्रथमा एकवचनमा 'यस(यसले),उस(उसले) र त्यस(त्यसले)' र बहुवचनमा 'यिनीहरूले, तिनीहरूले, उनीहरूले' भएजस्तै मैथिलीमा शुन्य विभक्तिलागदा प्रथमा एकवचनमा जस्ताको त्यस्तै (ई/ओ) रूपमा रहन्छ । नेपालीमा षष्ठी विभक्ति लागदा एकवचनमा 'त्यसको /त्यसका/त्यसकी, यसको/यसका/यसकी, उसको/उसका/उसकी'भएजस्तै मैथिलीमा 'हिनक/ हिनकर/हिनका' (आदर), 'एकर/एकरा' (अनादर), 'हुनक/हुनकर/हुनक' (आदर), 'ओकर/ओकरा' (अनादर) रूप देखिन जान्छ । तर नेपालीमा जस्तो लिङ्गभेदको अभाव देखिन्छ, जुन मैथिलीको विशेषता हो । साथै बहुवचन मानवीयमा 'हिनकासभक, हुनक, हुनकासभक' र बहुवचन अमानवीयमा 'एकरासभक, ओकरासभक लेल' रूप देखिन्छन् । यसरी मैथिलीमा 'सभक, सभकलेल' जोडेर बहुवचन बनाइएको देखिन्छ भने कतै मानवीय आदरवाची कर्ताको एकवचनको रूप नै बहुवचनमा पनि देखिन्छ, जुन नेपालीसँग मेल खाँदैन र यसबाट यी दुईको व्यतिरेक भल्कन्छ भने अन्य (तृतीय) पुरुषको मानवेतर प्राणीका नाम र क्रियाको पदसङ्गतिमा नेपाली र मैथिली दुवै भाषामा लिङ्ग व्यवस्था देखिँदैन, जसबाट दुवै भाषामा समानता रहेको प्रष्ट हुन्छ, जस्तै:

### नेपाली

कुकुर आयो ।

कुकुर्नी आयो ।

भंगेरा आयो ।

भंगेरी आयो ।

### मैथिली

कुत्ता एलै ।

कुत्ती एलै ।

बगरा एलै ।

बगरी एलै, आदि ।

त्यसैगरी, नेपाली भाषामा अन्य (तृतीय) पुरुषको मानवीय प्रयोग भएको स्थितिमा (नाम प्रयोग भएको स्थितिमा) नाम र क्रियाका बीचमा लिङ्गगत सङ्गति देखिन्छ, तर मैथिली भाषामा अन्यपुरुषको आदरार्थी नाममा लिङ्गभेद देखिन्छ, तर सामान्य आदरार्थीमा देखिँदैन, जस्तै:

### नेपाली

राम आयो ।

सीता आई ।

राम आउनुभयो ।

सीता आउनुभयो ।

### मैथिली

राम एलै ।

सीता एलै ।

राम एलाह ।

सीता एलीह, आदि ।

यसरी नेपालीमा सामान्य आदरार्थी लिङ्गभेद देखिनु, उच्च आदरार्थीमा नदेखिनु, तर मैथिलीमा सामान्य आदरार्थीमा लिङ्गभेद नदेखिनु तर उच्च आदरार्थीमा लिङ्गभेद देखिनुले यी दुई भाषाबीचको व्यापक व्यतिरेक स्वतः प्रष्टिन्छ ।

नेपाली र मैथिली भाषाका पुरुष (सर्वनाम) रूपावली तलको तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ :-

पुरुष (सर्वनाम) रूपावली

नेपाली

मैथिली

| 'म' को रूपावली |                          |                                   | 'हम' को रूपावली                   |                                                       |
|----------------|--------------------------|-----------------------------------|-----------------------------------|-------------------------------------------------------|
| विभक्ति        | एकवचन                    | बहुवचन                            | एकवचन                             | बहुवचन                                                |
| प्रथमा         | म / मैले                 | हामी (हरू) ले                     | हम                                | हमसब, हमरासभ,<br>हमरालोकनि                            |
| द्वितीया       | मलाई                     | हामी (हरू) लाई                    | हमरा                              | हमरासबकेँ, हमरालोकनि<br>केँ                           |
| तृतीया         | मैले / मद्वारा<br>/ मबाट | हामीले / हामीद्वारा / हा<br>मीबाट | हमरासँ,<br>हमरेँ                  | हमरासबसँ, हमरालोकनि<br>सँ                             |
| चतुर्थी        | मलाई                     | हामीलाई                           | हमरा, हमरा<br>लेल / लए / हे<br>तु | हमरासभकलेल,<br>हमरालोकनिकलेल / हेतु                   |
| पञ्चमी         | मबाट / मदेखि             | हामीबाट / हामीदेखि                | हमरासँ                            | हमरासबसँ,<br>हमरालोकनिसँ,                             |
| षष्ठी          | मेरो / मेरा / मेरी       | हाम्रो / हाम्रा / हामी            | हमर                               | हमरासबहक,<br>हमरालोकनिक,                              |
| सप्तमी         | ममा / ममाथि              | हामीमा / हामीमाथि                 | हमरामे,<br>हमरापर                 | हमरासबमे,<br>हमरासबपर,<br>हमरालोकनिमे,<br>हमरालोकनिपर |

| 'तँ' को रूपावली |           |                     | 'ताँ' को रूपावली |        |
|-----------------|-----------|---------------------|------------------|--------|
| विभक्ति         | एकवचन     | बहुवचन              | एकवचन            | बहुवचन |
| प्रथमा          | तँ / तैले | तिमीहरू / तिमीहरूले | ताँ              | तोरासब |

|               |                             |                                           |                                         |                                                     |
|---------------|-----------------------------|-------------------------------------------|-----------------------------------------|-----------------------------------------------------|
| द्वितीया      | तँलाई                       | तिमीहरूलाई                                | तोरा                                    | तोरासबकैँ,                                          |
| तृतीया        | तैँले / तँबाट /<br>तँद्वारा | तिमीहरूले / तिमीहरूबाट /<br>तिमीहरूद्वारा | तोरासँ,<br>तोरेँ                        | तोरासबसँ,                                           |
| चतुर्थी       | तँलाई                       | तिमीहरूलाई                                | तोरा,<br>तोराए,<br>तोराहेतु,<br>तोराएले | तोरासभकलेल, हेतु                                    |
| पञ्चमी        | तँबाट / तँदेखि              | तिमीहरूबाट /<br>तिमीहरूदेखि               | तोरासँ                                  | तोरासबसँ,                                           |
| षष्ठी         | तेरो / तेरा / तेरी          | तिमीहरूको /<br>तिमीहरूका /<br>तिमीहरूकी   | तोर,<br>(तोरा)                          | तोरासबहक,                                           |
| सप्तमी        | तँमा / तँमाथि               | तिमीहरूमा /<br>तिमीहरूमाथि                | तोराभै,<br>तोरापर                       | तोरासबभै, तोरासबपर,                                 |
| ‘ऊ’को रूपावली |                             |                                           | ‘ओ’को रूपावली                           |                                                     |
| विभक्ति       | एकवचन                       | बहुवचन                                    | एकवचन                                   | बहुवचन                                              |
| प्रथमा        | ऊ / उसले                    | उनीहरू / उनीहरूले                         | ओ                                       | ओसभ, ओलोकनि                                         |
| द्वितीया      | उसलाई                       | उनीहरूलाई                                 | ओकरा                                    | ओकरासभकैँ,<br>ओकरालोकनिकैँ                          |
| तृतीया        | उसले / उसबाट /<br>उसद्वारा  | उनीहरूले / उनीहरूबाट /<br>उनीहरूद्वारा    | ओकरासँ,<br>ओकरैँ                        | ओकरासभसँ,<br>ओकरालोकनिसँ,                           |
| चतुर्थी       | उसलाई                       | उनीहरूलाई                                 | ओकराए,<br>ओकराएले,<br>ओकराहेतु          | ओकरासभकलेल / ए /<br>हेतु, ओकरालोकनि-<br>कलेल / हेतु |

|        |                    |                                |                   |                                                      |
|--------|--------------------|--------------------------------|-------------------|------------------------------------------------------|
| पञ्चमी | उसबाट/उसदेखि       | उनीहरूबाट/उनीहरूदेखि           | ओकरासँ            | ओकरासबसँ,<br>ओकरालोकनिसँ,                            |
| षष्ठी  | उसको/उसका/<br>उसकी | उनीहरूको/उनीहरूका/<br>उनीहरूकी | ओकर               | ओकरासबहक,<br>ओकरालोकनिक,                             |
| सप्तमी | उसमा/<br>उसमाथि    | उनीहरूमा/उनीहरूमाथि            | ओकरामे/<br>ओकरापर | ओकरासबमे, ओकरा-<br>सबपर, ओकरालोकनिमे,<br>ओकरालोकनिपर |

मैथिलीमा ‘हम’ को तृतीया रूपावलीको बहुवचनमा देखिएको ‘हमरालोकनिँएँ,’ ‘तौँ’ को तृतीया रूपावलीको एकवचनमा देखिएको ‘तोरैँ’को प्रयोग कममात्रमा व्यवहारमा देखिएको पाईन्छ । त्यसैगरी ‘ओ’ अनादर प्राणीवाचकमा हुँदा ‘ओ, ओकरा, ओकरे, ओकरासँ, ओकरैँ, ओकरालए/लेल/हेतु, ओकरासँ, ओकर, ओकरामे, ओकरापर’ एकवचनमा र त्यसरूपमा ‘सभ/सब, लोकनि’ रूप जोडिएर बहुवचनमा देखिन्छन् भने ‘ओ’ आदर प्राणीवाचकमा हुँदा ‘ओ, हुनका, हुनकासँ, हुनकैँ, हुनकालए/लेल/हेतु, हुनकासँ, हुनक, हुनकर, हुनकामे, हुनकापर’ एकवचनमा र त्यस रूपमा ‘सभ/सब, लोकनि’ रूप जोडिएर बहुवचनमा देखिन्छन् । त्यसैगरी ‘ओ’ अप्राणीवाचकमा हुदाँ ‘ओ, ओकरा, ओहिसँ, ओहिलए/लेल/हेतु, ओकर, ओहिमे, ओहिपर’ एकवचनमा र त्यस रूपमा ‘सभ’ रूप जोडिएर बहुवचनमा देखिन्छन् । मैथिलीमा सम्बन्धकारकमा प्रयोग हुने षष्ठी विभक्ति ‘हक’ जोडिँदा ‘बहक’ को ठाउँमा ‘भक’ प्रयोग गरिन्छ; (सबहक-सभक) । त्यसैगरी, ‘लोकनि’ रूप प्राणीवाचक कर्ताको बहुवचनमा मात्र प्रयोग गरिन्छ ।

### ३.४.४ पुरुषका आदर

वक्ता र श्रोता वा विषयबीचको सम्बन्धका कारण आदरका तहमा समेत भिन्नता देखा पर्छ । तसर्थ पुरुषका सन्दर्भमा चर्चा गर्दा आदर पनि त्यससँगै आउँछ । नेपालीमा द्वितीय र तृतीय पुरुषका आदरका विभिन्न तह देखा पर्छन् ।<sup>१३</sup> तसर्थ

<sup>१३</sup> यादव, योगेन्द्रप्रसाद र रेग्मी, भीमनारायण, भाषाविज्ञान, न्यू हिरा बुक्स इन्टरप्राइजेज (का.) दो.सं., २०५९, पृ. २०१

पुरुषका आदर रूपका सम्बन्धमा चर्चागर्दा के देखिन आउँछ भने नेपाली भाषामा विभिन्न व्यक्ति वा अवस्था अनुरूप विभिन्न आदर शब्द वा पुरुषको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । यसरी प्रयोग गरिने पुरुषका रूपमा विविध आदरार्थी तह अनुरूप प्रयोग गरिन्छ, जसमा दरवारी आदर (उच्चतम आदर), उच्च आदर, मध्यम आदर र सामान्य आदर तह पाइन्छन् । दरवारी आदरार्थीमा 'मौसुफ, हजुर', उच्च आदरार्थीमा 'तपाईं, उहाँ, यहाँ', मध्यम आदरार्थीमा 'तिमी, उनी, यिनी, तिनी, यी, ती' र सामान्य (निम्न) आदरार्थीमा 'तँ, ऊ, यो, त्यो' एकवचनमा र क्रमशः 'मौसुफहरू, हजुरहरू, तपाईंहरू, उहाँहरू, यहाँहरू, तिमीहरू, उनीहरू, यिनीहरू, तिनीहरू' बहुवचनका रूपमा प्रयोग गरिन्छन् र क्रिया पनि आदर अनुरूप नै रूपायित भई लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर छुट्टिने गर्दछ ।

मैथिली भाषामा पनि विभिन्न व्यक्ति वा अवस्था अनुरूप विभिन्न आदर शब्द वा पुरुषको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । यसरी प्रयोग गरिने पुरुषका रूपमा विविध आदरार्थी तह अनुरूप नेपालीमा जस्तै प्रयोग गरे तापनि नेपालीमा भन्दै केही फरक देखिन्छ । मैथिलीमा उच्चतम आदर, उच्च आदर, मध्यम आदर र निम्न (सामान्य) आदर तह पाइन्छन् । उच्चतम आदरार्थीमा 'अपने', उच्च आदरार्थीमा 'अहाँ', मध्यम आदरार्थीमा 'तौँ' र निम्न (सामान्य) आदरार्थीमा 'तुँ' एकवचनमा र 'अपनेसब/अपनेलोकनि, अहाँसब/अहाँलोकनि, तोरासब र तुँसभ' बहुवचनका रूपमा प्रयोग गरिन्छन् तर आदरवाची प्राणीवाचक कर्तासंगमात्र बहुवचन बुझाउन 'लोकनि' रूपको प्रयोग गरिएको देखिन्छ र क्रिया पनि आदर अनुरूप नै रूपायित भई लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर छुट्टिने गर्छ । यस आधारमा यी दुवै भाषामा समानता रहेको देखिन्छ ।

वास्तवमा दुवै भाषामा आदर मूलतः श्रोता (द्वितीय पुरुष) र अन्यसन्दर्भ (तृतीय पुरुष) मा व्यक्त हुन्छ । यसका लागि श्रोतासन्दर्भमा आदरार्थी सर्वनामको र अन्यसन्दर्भमा चाहिँ सर्वनामका साथै आदरसूचक नामको पनि प्रयोग भएको देखिन्छ । मैथिलीमा वक्ताका प्रभावले आदरलाई प्रभावित पारिरहेको हुन्छ, जस्तै :

ओ खेलकै । (सामान्य वक्ता)

ओ खेलखिन । (विशिष्ट वक्ता)

यो मैथिलीको महत्त्वपूर्ण विशेषता पनि मानिन्छ । त्यसैगरी, वाक्य गठनमा अनुपस्थित नामले आदरमा प्रभाव पार्दछ र अप्राणीवाचकमा पनि आदरार्थीको आरोप देखिन जान्छ, जुन नेपालीमा अभाव देखिन्छ, जस्तै :

नेपाली

मैथिली

यो कसको घर हो ?            ई ककर घर छैक ? (सामान्य मान्छेको घर )

यो कसको घर हो ?            ई किनकर घर छिएक/थीक ?(विशिष्ट मान्छेको घर)

जसमा 'कसको ?' भन्ने प्रश्नवाचक शब्दका लागि मैथिलीमा दुईवटा शब्द 'केकर ?' र 'किनकर ?' आएको छ, जसमा 'केकर ?' ले सामान्य आदर बुझाउँदछ भने 'किनकर?' ले उच्च आदरार्थीलाई बुझाउँदछ । जसअनुसारको क्रियामध्ये 'छैक' र 'छिएक/थीक' ले क्रमशः सामान्य आदर र उच्च आदरलाई प्रष्ट्याइरहेको छ तर, नेपालीमा 'यो कसको घर हुनुहुन्छ ?', जस्ता प्रयोग नदेखिने भएकाले आदरार्थीका केही प्रयोगका दृष्टिले नेपालीभन्दै मैथिली भिन्न छ भन्ने कुरा प्रष्टिन्छ ।

### ३.४.५ पुरुष र क्रिया

नेपालीमा दरवारी (उच्चतम) आदरार्थी र उच्च आदरार्थीको क्रियामा लिङ्ग सङ्गति देखिँदैन तर मध्यम र सामान्य (निम्न) आदरार्थीमा देखिन्छ भने मैथिली भाषामा नाम, सर्वनाम, पुरुष, वचन, लिङ्ग र आदर अनुरूप क्रिया रूपायित भए तापनि उच्चतम, उच्च, मध्यम आदरार्थीको क्रियामा लिङ्ग सङ्गति देखिन्छ तर सामान्य आदरार्थीको क्रियामा लिङ्ग सङ्गति देखिँदैन, जसले नेपाली र मैथिली दुवै भाषामा व्यापक व्यतिरेक छ भन्ने देखाउँछ ।

नेपालीमा कर्ता (पुरुष) पुलिङ्गी भए क्रिया पनि पुलिङ्गी, स्त्रीलिङ्गी भए क्रिया पनि स्त्रीलिङ्गी, कर्ता एकवचन भए क्रिया पनि एकवचन र कर्ता बहुवचन भए क्रिया पनि बहुवचनमा रूपायित हुन गएको देखिन्छ भने मैथिलीमा अन्य पुरुषमा मात्र कर्ता

पुलिङ्गी भए क्रिया पुलिङ्गी र कर्ता स्त्रीलिङ्गी भए क्रिया पनि स्त्रीलिङ्गी भएको देखिन्छ तर उत्तम पुरुष र मध्यम पुरुष कर्ताको क्रियामा लिङ्ग सङ्गति देखिँदैन । जस्तै: तुँ गेलही (पु./स्त्री. दुवै) । त्यसरी नै नेपालीमा जस्तै कर्ता (पुरुष) को वचनअनुसार मैथिलीमा क्रियारूपायित भएको देखिँदैन अर्थात् कर्ता (पुरुष) बहुवचनमा भए तापनि क्रिया तटस्थ रहन्छ अर्थात् एकवचन र बहुवचन क्रियाको सङ्गतिमा समानता पाइन्छ । जुन मैथिलीको विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक पक्ष पनि हो ।

क्रियामा पुरुष रूपावली

| नेपाली  |         |              |             |           |            | मैथिली       |                 |                 |                |                 |
|---------|---------|--------------|-------------|-----------|------------|--------------|-----------------|-----------------|----------------|-----------------|
| पुरुष   | सर्वनाम | एकवचन क्रिया |             | बहुवचन    |            | एकवचन क्रिया |                 |                 | बहुवचन         |                 |
|         |         | पुलिङ्ग      | स्त्रीलिङ्ग | सर्वनाम   | क्रिया     | सर्वनाम      | पुलिङ्ग         | स्त्रीलिङ्ग     | सर्वनाम        | क्रिया          |
| प्रथम   | म       | जान्छु       | जान्छु      | हामी(हरू) | जान्छौं    | हम           | जाइ छी          | जाइ छी          | हमसभ           | जाइ छी          |
| द्वितीय | तँ      | जान्छस्      | जान्छेस्    | तिमीहरू   | जान्छौ     | तुँ          | जाइ छही<br>/छें | जाइ छही<br>/छें | तुँसभ          | जाइ छही<br>/छें |
|         | तिमी    | जान्छौ       | जान्छ्यौ    | तिमीहरू   | जान्छौ     | ताँ          | जाइ छह          | जाइ छह          | ताँसभ/तोरासब   | जाइ छह          |
|         | तपाईँ   | जानुहुन्छ    | जानुहुन्छ   | तपाईँहरू  | जानुहुन्छ  | अहाँ/अपने    | जाइ<br>छिएक     | जाइ<br>छिएक     | अहाँ/अपनेलोकनि | जाइ छिएक        |
|         | हजुर    | गइबक्सिन्छ   | गइबक्सिन्छ  | हजुरहरू   | गइबक्सिन्छ | अपने         | गेल जाइ<br>छै   | गेल जाइ<br>छै   | अपनेलोकनि      | गेल जाइ छै      |
| तृतीय   | यो      | जान्छ        | जान्छे      | यिनीहरू   | जान्छन्    | ई            | जाइ छैक         | जाइ छैक         | ईसब/ईसभ        | जाइ छैक         |
|         | यिनी    | जान्छन्      | जान्छिन्    | यिनीहरू   | जान्छन्    | ई            | जाइ छथि         | जाइ छथि         | ईसभ            | जाइ छथि         |
|         | ए       | जान्छ        | जान्छे      | उनीहरू    | जान्छन्    | ओ            | जाइ छैक         | जाइ छैक         | ओसभ            | जाइ छैक         |
|         | उनी     | जान्छन्      | जान्छिन्    | उनीहरू    | जान्छन्    | ओ            | जाइ छथि         | जाइ छथि         | ओलोकनि         | जाइ छथि         |
|         | त्यो    | जान्छ        | जान्छे      | तिनीहरू   | जान्छन्    | ओ            | जाइ छैक         | जाइ छैक         | ओसभ            | जाइ छैक         |
|         | तिनी    | जान्छन्      | जान्छिन्    | तिनीहरू   | जान्छन्    | ओ            | जाइ छथि         | जाइ छथि         | ओलोकनि         | जाइ छथि         |
|         | उहाँ    | जानुहुन्छ    | जानुहुन्छ   | उहाँहरू   | जानुहुन्छ  | ओ            | जाइ<br>छथिन्ह   | जाइ<br>छथिन्ह   | ओलोकनि         | जाइ छथिन्ह      |

### ३.५ आदर

नेपाली भाषामा आदरार्थी प्रयोगका दृष्टिले नामका साथै पुरुषवाचक सर्वनामका रूपमा व्यापकता रहेको पाइन्छ । नेपाली भाषा व्याकरणलाई प्रभावित पार्ने तँ, तिमी, तपाईं, हजुर, यहाँ, उहाँ, आफू आदिजस्ता विशेषता पाइन्छन् । यी पुरुषवाचक सर्वनाम एकवचन र बहुवचनका रूपमा विविध प्रसङ्ग अनुरूप प्रयोग भएको पाइन्छ भने अन्य आदरार्थी (मौसुफ) शब्दहरू पनि प्रयोगमा आएका छन् । आदरार्थीको प्रयोगमा सामान्य आदर बुझाउने स्त्रीलिङ्गको एकवचनमा स्त्रीलिङ्गी क्रिया प्रयोग भएको पाइन्छ, अन्यत्र भने सामान्य आदर भए सबै ठाउँमा पुलिङ्गी बहुवचनको रूप हुन्छ । औपचारिक आदर र उच्च या विशिष्ट आदर भए पुलिङ्गी एकवचनकै रूप प्रयोग हुन्छ र लिङ्गभेद देखिँदैन ।

मैथिली भाषामा पनि आदरार्थी प्रयोगका दृष्टिले नामका साथै पुरुषवाचक सर्वनामका रूपमा व्यापकता रहेको पाइन्छ । मैथिली भाषा व्याकरणलाई प्रभावित पार्ने 'तुँ, तौँ, अहाँ, अपने' आदिजस्ता विशेषता पाइन्छन् । यी पुरुषवाचक सर्वनाम एकवचन र बहुवचनका रूपमा विविध प्रसङ्ग अनुरूप प्रयोग भएको पाइन्छ भने अन्य आदरार्थी (ई/ओ) शब्दहरू पनि प्रयोगमा आएका छन् । आदरार्थीको प्रयोगमा उच्चतम आदरार्थीमा सात प्रकारका क्रियाको रूप प्रयोग भएको देखिनुका साथै क्रियामा लिङ्गभेद समेत भएको देखिन्छ भने मैथिली भाषामा पुरुष र स्त्री (स्त्रीलिङ्गी र पुलिङ्ग) का लागि छुट्टाछुट्टै आदरार्थी रूपको प्रयोग भएको पाइन्छ । कतै (सामान्य आदरार्थीमा) एउटै क्रिया रूपले दुवैलिङ्गलाई दर्शाएको पनि देखिन्छ । त्यसरीनै मध्यम पुरुष उच्च आदरार्थी तथा उच्चतम आदरार्थीमा पनि एउटै क्रियारूप पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्गका लागि प्रयुक्त भएको देखिन्छ भने अन्यपुरुषको आदरार्थीबोधक क्रियामा लिङ्गभेद भएको देखिन्छ । नेपालीमा कुनै पनि बहुवचन क्रियारूपमा लिङ्गभेद देखिँदैन तर मैथिलीमा भने तृतीय पुरुषको आदरार्थी कर्ताको बहुवचन क्रियामा लिङ्गभेद देखिन्छ, जस्तै:

नेपाली

राजाको सवारी भयो ।

मैथिली

राजाके/राजाक सवारी भेल ।

रानीको सवारी भयो ।

काका जानुभयो ।

काकी जानुभयो ।

भान्जा आए ।

भान्जी आइन् ।

केटो आयो ।

केटी आई ।

नोकर आयो ।

नोकर्नी आई ।

भान्जाहरू आए ।

भान्जीहरू आए ।

केटाहरू आए ।

केटीहरू आए ।

नोकरहरू आए ।

नोकर्नीहरू आए ।

तपाईं जानुभयो । (पु.)

तपाईं जानुभयो । (स्त्री)

तिमी गयौ । (पु./स्त्री.)

तँ जान्छस् । (पु.)

तँ जान्छेस् । (स्त्री.)

रानीके/रानीक सवारी भेल ।

काका गेलाह ।

काकी गेलीह ।

भगिना/भगिन एलाह/आएल ।

भगिनी एलीह ।

छउड़ा एलै ।

छउड़ी एलीह ।

नोकर एलै ।

नोकर्नी एलीह ।

भगिनासभ एलाह ।

भगिनीसभ एलीह ।

छउड़ासभ एलै ।

छउड़ीसभ एलीह ।

नोकरसभ एलै ।

नोकर्नीसभ एलीह ।

अहाँ गेलौं । (पु.)

अहाँ गेलौं । (स्त्री)

तौं गेलह/गेलही । (पु./स्त्री )

तुँ जाइछी । (पु.)

तुँ जाइछी (स्त्री), आदि ।

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरूलाई गहिरिएर हेर्दा नेपाली तथा मैथिली दुवैको उच्चतम (दरबारी) आदरार्थी क्रियामा लिङ्गव्यवस्था देखिँदैन । त्यसैगरी नेपाली भाषामा उच्च आदरार्थीमा क्रियागत लिङ्गव्यवस्था देखिँदैन तर मैथिलीमा अन्य पुरुषको उच्च तथा सामान्य (निम्न) दुवै आदरार्थीमा क्रियागत लिङ्गव्यवस्था देखिन्छ । मैथिलीमा उमेरको हदले आदरमा प्रभाव पार्छ । जुन मैथिलीको विशेषता पनि हो । यसरी नै

नेपालीका कुनै पनि बहुवचन क्रियारूपमा लिङ्गभेद देखा परेको छैन भने मैथिलीमा तृतीय पुरुष आदरार्थी कर्ताको बहुवचन क्रियामा लिङ्गभेद देखापरेको छ, जुन मैथिलीको आफ्नै विशेषताको साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक देखिन जान्छ ।

### ३.६ सारांश

यस परिच्छेदमा नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदरको वैज्ञानिक पद्धतिअनुसार व्याकरणका कोटिसँग सम्बद्ध पक्षहरूको निरूपण गरी रूपतात्त्विक विश्लेषण गरिएको छ । जसअनुसार व्याकरणिक दृष्टिले हेर्दा लिङ्ग दुई किसिमका (पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग) पाइएका छन् । दुवै भाषामा नाम, विशेषण वा मानवीय र मानवेतरका रूपमा लिङ्गभेद देखिन्छन् । यी दुवै भाषाका समान पक्ष हुन् । मैथिली भाषामा नाम, सर्वनाम, आदर अनुरूप क्रिया रूपायित हुन सके तापनि अन्य पुरुषमा बाहेक अरु पुरुषमा लिङ्गभेद नछुट्टिने हुनाले क्रियामा सङ्गति पनि पाइँदैन । व्युत्पादनात्मक रूप लिई पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्ग बन्ने प्रक्रिया अनुरूप नेपालीमा ‘ई, इनी/एनी, नी’ प्रत्यय र मैथिलीमा ‘ई, आइन/आइनि, आनि, एनी, नी’ जस्ता प्रत्यय प्रयोग गरी पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्गी शब्दको निर्माण हुने गरेको देखिन्छ । नेपालीमा लिङ्गका दृष्टिले अचिह्नित भएका विशेषण वा विशेषणस्थानिकले पनि विशेष्यको सन्दर्भनुसारको लिङ्गलाई दर्साउन सकेको देखिन्छ भने मैथिलीमा (षष्ठी विभक्ति) जोडिएका विशेषण वा विशेषणस्थानिकले विशेष्यको सन्दर्भ अनुसारको लिङ्गलाई दर्साउन सकेको देखिँदैन तर अन्य विशेषणस्थानिकले विशेष्यको सन्दर्भ अनुसारको लिङ्गलाई दर्साउन सकेको देखिन्छ; अर्थात् नेपालीमा जस्तो विशेष्यको लिङ्ग अनुसार विशेषण र भेद्यको लिङ्ग अनुसार भेदको लिङ्ग निर्धारित छैन ।

नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषाका वाक्यमा आएका सर्वनामको लिङ्गका दृष्टिले एउटै रूप पाइन्छ । मैथिलीमा उच्चतम तथा मध्यम आदरार्थी बुझाउने ‘इ, ओ’ सर्वनाम कर्ताको रूपमा आउँदा क्रियामा लिङ्गभेद देखापरेको छ तर सामान्य आदरार्थी बुझाउने ‘तु’ सर्वनाम कर्ताको रूपमा आउँदा क्रियामा लिङ्गभेद देखापरेको छैन भने नेपालीमा कर्ता अनादर/सामान्य आदर हुँदा क्रियामा लिङ्गभेद देखिन्छ तर उच्च आदरार्थी कर्ता हुँदा क्रियामा लिङ्गभेद देखिँदैन । यसरी वाक्यात्मक संरचनामा आएका

कर्ता र क्रियाले समान रूपगत अभिलक्षण देखाउन नसक्नु मैथिलीको विशेषताका साथै नेपालीसँग व्यतिरेक देखिन्छ ।

वचन व्यवस्थाको निरूपण गर्दा दुवै भाषामा एकवचन र बहुवचन पाइएका छन् । दुवै भाषामध्ये नेपाली भाषामा नाम, सर्वनाम, विशेषण र क्रियाको वचनभेद गरिने प्रक्रिया पाइएको छ भने मैथिली भाषामा नाम र सर्वनामको मात्रै वचनभेद गरिने प्रक्रिया पाइएको छ तर बहुवचन बनाइने प्रक्रिया भने भिन्न देखिएका छन् । दुवै भाषामा बहुवचनका भिन्नाभिन्नै प्रत्यय (रूपहरू) छन् । नेपाली भाषामा ओकारान्त शब्दलाई आकारान्तमा परिवर्तन गराउँदा एकवचनमा 'आ' वा 'हरू' रूपहरू जोडेर तथा विशेषणका अन्तिम 'ई, ऊ र ओ' रूपलाई 'आ'मा फेरेर साथै सर्वनाममा सामान्यतः 'हरू' रूप जोडेर बहुवचन बनाइएको पाइन्छ भने मैथिलीमा 'गण, दल, लोकनि, सब/सभ, समूह, समुदाय, सबहि (षष्ठी विभक्तिसँग मात्र) आदि रूप जोडेर बहुवचन बनाइएको पाइन्छ । मैथिलीमा विशेषणमा वचनभेद देखिँदैन साथै 'ई' शब्दको बहुवचन रूप एकवचनको रूपमा प्राणीवाचक पुलिङ्ग एवम् स्त्रीलिङ्गमा 'लोकनि' तथा अप्राणीवाचकमा 'सभ' जोडेर बनाइन्छ, जुन मैथिलीको आफ्नै विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक देखिएको छ । नेपालीवाक्यहरूमा कर्ता एकवचनमा हुँदा क्रिया पनि एकवचनमा तथा कर्ता बहुवचनमा हुँदा क्रिया पनि बहुवचनमा रहेको देखिन्छ । त्यसैगरी नामको विशेषणमाथि लिङ्गको शासन भएको देखिन्छ तर मैथिलीभाषाका वाक्यहरूमा कर्ता एकवचनमा हुँदा क्रियाको जुन रूप रहेको छ, बहुवचन हुँदा पनि उही रूप रहेको देखिन्छ, मात्र कर्तामा बहुवचनबोधक प्रत्यय जोडिएको देखिन्छ साथै मैथिलीमा नामको विशेषणमाथि लिङ्गको शासन भए तापनि वचनमा मेल देखिँदैन ।

पुरुष व्यवस्थाको निरूपण गर्दा नेपाली र मैथिली दुवै भाषामा तीन किसिमका पुरुष भएको पाइन्छ । नेपाली र मैथिली दुवै भाषामा प्रथम (उत्तम) पुरुष एकवचनमा 'हम(म)' र बहुवचनमा 'हमसभ(हामीहरू)', द्वितीय (मध्यम) पुरुष एकवचनमा 'तुँ (तँ), तौँ (तिमी), अहाँ/अपने (तपाईँ)' र बहुवचनमा 'तुँसभ/तोरासब (तिमीहरू), अहाँलोकनि/अपनेलोकनि (तपाईँहरू)' देखिन्छ । मैथिलीमा 'हमरासब/हमरासभ' बहुवचन रूप वैकल्पिक वा पर्यायका रूपमा प्रयोग भएको देखिन्छ । नेपालीमा पुरुषको

वचन परिवर्तन हुँदा क्रियारूपमा पनि परिवर्तन आएको देखिन्छ, अर्थात् पुरुषको कर्ता एकवचनमा हुँदा क्रिया एकवचनमा तथा कर्ता बहुवचनमा हुँदा क्रिया बहुवचनमा परिवर्तन भएको देखिन्छ, तर मैथिलीमा पुरुषको कर्ता एकवचनमा हुँदा क्रिया एकवचनमा र कर्ता बहुवचनमा हुँदा पनि क्रिया एकवचनकै रूपमा रहेको देखिन्छ । नेपालीमा ‘म’ मा विभक्ति लाग्दा प्रथमा एकवचनमा ‘मैले’ र षष्ठीमा ‘मेरो’ भएजस्तै मैथिलीमा ‘हम’ मा शुन्य विभक्ति लागेर प्रथमा एकवचन र षष्ठीमा ‘हम’ मा ‘र’ लागेर ‘हमर’ र बहुवचनमा ‘सबहक’, ‘लोकनिक’ रूपहरू लागेर ‘हमरासबहक’, ‘हमरालोकनिक’ रूपहरू बनेको देखिन्छ । मैथिलीमा एकवचन र बहुवचन पुरुषका क्रियारूपहरू पर्यायका रूपमा प्रयोग गर्न सकिने देखिन्छन्, जुन मैथिलीको विशेषता पनि मानिन्छ । मैथिलीमा नेपालीमा जस्तै षष्ठी विभक्ति लाग्दा पुरुषको लिङ्ग नछुट्टिनु व्यतिरेकी पक्ष मानिन्छ । मैथिलीमा मध्यम पुरुषको क्रियारूप पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग दुवैमा एकै समान देखिन्छ, तर अन्यपुरुषको आदरार्थी नाममा लिङ्गभेद देखिन्छ, भने सामान्य आदरार्थीमा देखिँदैन । नेपालीमा ‘यो/यी/यिनी’ निकटवर्ती र ‘ऊ/त्यो/ती/तिनी/उनी/उहाँ’ दूरवर्ती एकवचन र ‘यी, ती, यिनीहरू, तिनीहरू, उनीहरू’ निकटवर्ती र दूरवर्ती दुवै मानवीय–अमानवीय सन्दर्भमा बहुवचनमा प्रयुक्त हुने गरेको देखिन्छ । मैथिलीमा ‘ओ/ई’ मध्ये ‘ई’ निकटवर्ती र ‘ओ’ दूरवर्ती एकवचन तथा मानवीय – अमानवीय दुवै सन्दर्भमा प्रयुक्त हुने गर्दछन् र ‘ओसभ, ईसभ, ओलोकनि, ईलोकनि’ बहुवचनमा प्रयुक्त हुने गरेको देखिन्छ, जसमध्ये ‘ई’ शब्दको बहुवचन रूप एकवचनको रूपमा प्राणीवाचक पुलिङ्ग एवम् स्त्रीलिङ्गमा ‘लोकनि’ तथा अप्राणीवाचक पुलिङ्ग एवम् स्त्रीलिङ्गमा ‘सभ/सब’ जोडेर प्रयुक्त भएको देखिन्छ ।

आदर व्यवस्थाको चर्चा गर्दा के देखिन आउँछ भने, नेपाली भाषामा विभिन्न व्यक्ति वा अवस्था अनुरूप विभिन्न आदर शब्द वा पुरुषको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । यसरी प्रयोग गरिने पुरुषका रूपमा विविध आदरार्थी तह अनुरूप प्रयोग गरिन्छ, जसमा दरवारी आदर (उच्चतम आदर), उच्च आदर, मध्यम आदर र सामान्य आदर तह पाइन्छन् । दरवारी (उच्चतम) आदरार्थीमा ‘मौसुफ, हजुर’, उच्चआदरार्थीमा ‘तपाईं, उहाँ, यहाँ’, मध्यम आदरार्थीमा ‘तिमी, उनी, यिनी, तिनी, यी, ती’ र सामान्य (निम्न) आदरार्थीमा ‘तँ, ऊ, यो, त्यो’ एकवचनमा र क्रमशः ‘मौसुफहरू, हजुरहरू,

तपाईंहरू, उहाँहरू, यहाँहरू, तिमीहरू, उनीहरू, यिनीहरू, तिनीहरू' बहुवचनका रूपमा प्रयोग भएको देखिन्छ र क्रिया पनि आदर अनुरूप नै रूपायित भई लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर छुट्टिने गरेको देखिन्छ । मैथिली भाषामा पनि विभिन्न व्यक्ति वा अवस्था अनुरूप विभिन्न आदर शब्द वा पुरुषको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । यसरी प्रयोग गरिने पुरुषका रूपमा विविध आदरार्थी तह अनुरूप नेपालीमा जस्तै प्रयोग गरेता पनि नेपालीमा भन्दै केही फरक देखिन्छ । मैथिलीमा उच्चतम आदर, उच्च आदर, मध्यम आदर र निम्न (सामान्य) आदर तह पाइन्छन् । उच्चतम आदरार्थीमा 'अपने', उच्च आदरार्थीमा 'अहाँ', मध्यम आदरार्थीमा 'तौं' र निम्न (सामान्य) आदरार्थीमा 'तुँ' एकवचनमा र 'अपनेसब/अपनेलोकनि', 'अहाँसब/अहाँलोकनि', 'तोरासब/तोरालोकनि' र 'तुँसभ' बहुवचनका रूपमा प्रयोग गरिएका देखिन्छन् र क्रिया पनि आदर अनुरूप नै रूपायित भई लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर छुट्टिने गरेको देखिन्छ । वास्तवमा दुवै भाषामा आदर मूलतः श्रोता (द्वितीय पुरुष) र अन्यसन्दर्भ (तृतीय पुरुष) मा व्यक्त हुन्छ । यसका लागि श्रोतासन्दर्भमा आदरार्थी सर्वनामको र अन्यसन्दर्भमा चाहिँ सर्वनामका साथै आदरसूचक नामको पनि प्रयोग भएको देखिन्छ । मैथिलीमा वक्ताका प्रभावले आदरलाई प्रभावित पारिरहेको देखिन्छ । त्यसैगरी वाक्य गठनमा अनुपस्थित नामले आदरमा प्रभाव पार्दछ र अप्राणीवाचकमा पनि आदरार्थीको आरोप देखिन जान्छ । नेपालीमा दरवारी (उच्चतम) आदरार्थी र उच्च आदरार्थीको क्रियामा लिङ्ग सङ्गति देखिँदैन तर मध्यम र सामान्य (निम्न) आदरार्थीमा देखिन्छ भने मैथिली भाषामा नाम, सर्वनाम, पुरुष, वचन, लिङ्ग र आदर अनुरूप क्रिया रूपायित भए तापनि उच्चतम, उच्च, मध्यम आदरार्थीका क्रियामा लिङ्ग सङ्गति देखिन्छ तर सामान्य आदरार्थीको क्रियामा लिङ्ग सङ्गति देखिँदैन ।

## चौथो परिच्छेद

### नेपाली र मैथिली भाषाका काल, पक्ष, भाव, वाच्य र कारकसम्बन्धी कोटिको तुलना

#### ४.१ परिचय

यस परिच्छेदमा नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिअन्तर्गत काल, पक्ष, भाव, वाच्य र कारक सम्बन्धी शीर्षकमा केन्द्रित रहेर विभिन्न उदाहरण- सहित व्याख्या विश्लेषण गरी उक्त कोटिहरूबीच देखिने भिन्नता र मैथिली भाषाको विशेषतालाई देखाउने प्रयास गरिएको छ ।

#### ४.२ काल

प्रत्ययका आधारमा काल दुई प्रकारका छन्:- भूतकाल र अभूतकाल ।<sup>१४</sup> भाषाको रूपात्मक व्यवस्थाका आधारमा नेपालीमा दुई काल मात्र फेला पर्छन् । : भूतकाल र अभूतकाल ।<sup>१५</sup>

##### ४.२.१ भूतकाल

यस कालले क्रियाको त्यस रूपलाई जनाउँछ, जसमा वर्णित व्यापार वा अवस्थाको समय कथनक्षण (अहिले) भन्दै पहिला नै सकिएको हुन्छ । नेपालीमा क्रियाको भूतकालिक रूपको रचना 'यो, यौ, यौँ, ई, इन्, इस, ए, एँ' प्रत्ययबाट गरिन्छ । लिङ्ग, वचन, पुरुष, आदर आदिका भेदले यी प्रत्ययहरूको विविध रूपको प्रयोग गरिन्छ । मैथिलीमा पनि यस किसिमको क्रियाको अवस्था वा कार्यव्यापार पाइन्छ, जसले भूतकाललाई सङ्केत गर्दछ । मैथिलीमा धातुका आधार प्रत्यय 'ल' सँग 'ई, हुँ, हिँ, एँ, ह, क, Ø (शून्य), नि, आह' जोडेर भूतकालिक क्रियारूपको रचना गरिन्छ, जस्तै:

नेपाली

मैले पढें ।

मैथिली

हम पढ़ली/पढ़लहुँ ।

<sup>१४</sup> पोखरेल, माधवप्रसाद, पूर्ववत्, (२०५४:२०) ।

<sup>१५</sup> अधिकारी, हेमाङ्गराज, पूर्ववत्, पृ. ११८ ।

|                          |                        |
|--------------------------|------------------------|
| हामीले पढ्यौ ।           | हमसभ पढ़ली / पढ़लहुँ । |
| तैंले पढिस् ।            | तुँ पढ़लहिँ/पढ़लैं ।   |
| तिमीले पढ्यौ ।           | ताँ पढ़लह ।            |
| तिमीहरूले पढ्यौ ।        | तोसँभ पढ़लह ।          |
| तपाईंले पढ्नुभयो ।       | अहाँ पढ़लहुँ ।         |
| उसले/त्यसले/यसले पढ्यो । | ओ/ई पढ़लक ।            |
| उनले/तिनले/यिनले पढे ।   | ओ/ई पढ़लनि ।           |
| उहाँले पढ्नुभयो ।        | ओ पढ़लनि, आदि ।        |

उपर्युक्त वाक्यहरूमध्ये नेपाली भाषामा वितेको समयको सङ्केत गर्ने क्रिया ‘पढें, पढ्यौँ, पढिस्, पढ्यौ, पढ्नुभयो, पढ्यो, पढे’ का धातुमा जोडिएका क्रमशः ‘एँ, यौँ, इस्, यौ, नुभयो, यो, ए’ जस्ता प्रत्यय (रूप) ले भूतकालिक समयको सङ्केत गरेका छन् । मैथिली भाषामा वितेको समयको सङ्केत गर्ने क्रिया ‘पढ़ली/पढ़लहुँ, पढ़लहिँ/पढ़लैं, पढ़लह, पढ़लक, पढ़लनि’ का धातुमा आधार प्रत्यय ‘ल’ सँग क्रमशः ‘ई, हुँ, हिँ, एँ, ह, क, नि’ जस्ता प्रत्यय (रूप)ले भूतकालिक समयको सङ्केत गरेका छन् । नेपाली र मैथिली दुवै भाषामा प्रत्यय योजना केही भिन्न देखिन्छ । साथै मैथिलीमा निम्न श्रेणीको कर्तासँग प्रयोग हुने सकर्मक/ अकर्मक क्रियाको धातुमा आधार प्रत्यय ‘ल’ सँग जोडिने प्रत्यय र रूप तथा उच्च श्रेणीको कर्तासँग प्रयोग हुने सकर्मक/अकर्मक क्रियाको धातुमा आधार प्रत्यय ‘ल’ सँग जोडिने प्रत्यय र रूप फरक-फरक देखिन्छन्; जुन मैथिलीको विशेषता हो, तर नेपालीमा यस्तो व्यवस्था नभएकाले नेपालीसँगको व्यतिरेक पक्ष पनि ।

नेपाली र मैथिली भाषाका भूतकालिक क्रिया रूपावली निम्न तालिकामा प्रस्तुत गरी चर्चा गर्ने प्रयास गरिएको छ -

भाषाका पद धातुको भूतकालिक क्रिया रूपावली

| नेपाली पद धातु ) |         |         |             |         |         |         | मैथिली भाषाका पद (सकर्मक)/चल (अकर्मक) धातु आधार-प्रत्यय 'ल' |              |                  |        |                  |             |         |        |         |
|------------------|---------|---------|-------------|---------|---------|---------|-------------------------------------------------------------|--------------|------------------|--------|------------------|-------------|---------|--------|---------|
| पुरुष<br>(कर्ता) | एकवचन   |         |             |         | बहुवचन  |         | पुरुष                                                       | निम्न श्रेणी |                  |        |                  | उच्च श्रेणी |         |        |         |
|                  | पुलिङ्ग |         | स्त्रीलिङ्ग |         |         |         |                                                             | सकर्मक       |                  | अकर्मक |                  | सकर्मक      |         | अकर्मक |         |
|                  | प्रत्यय | रूप     | प्रत्यय     | रूप     | प्रत्यय | रूप     |                                                             | रूप          | प्रत्यय          | रूप    | प्रत्यय          | रूप         | प्रत्यय | रूप    | प्रत्यय |
| प्रथम            | एँ      | पढें    | एँ          | पढें    | यौँ     | पढ्यौँ  | उत्तम                                                       | ई            | पढली             | ई      | चलली             | हुँ         | पढलहुँ  | हुँ    | चललहुँ  |
| द्वितीय          | इस्     | पढिस्   | इस्         | पढिस्   | यौ      | पढ्यौ   | मध्यम                                                       | हिँ/एँ       | पढलहिँ/<br>पढलें | हिँ/एँ | चललहिँ/<br>चललें | ह           | पढलह    | ह      | चललह    |
|                  | यौ      | पढ्यौ   | यौ          | पढ्यौ   | यौ      | पढ्यौ   |                                                             |              |                  |        |                  | ह           | पढलह    | ह      | चललह    |
|                  | नुभयो   | पढनुभयो | नुभयो       | पढनुभयो | नुभयो   | पढनुभयो |                                                             |              |                  |        |                  | हुँ         | पढलहुँ  | हुँ    | चललहुँ  |
| तृतीय            | यो      | पढ्यो   | ई           | पढी     | ए       | पढे     | अन्य                                                        | क            | पढलक             |        | चलह              | नि          | पढलनि   | आह     | चललाह   |
|                  | ए       | पढे     | इन्         | पढिन्   | ए       | पढे     |                                                             |              |                  |        |                  | नि          | पढलनि   | आह     | चललाह   |
|                  | नुभयो   | पढनुभयो | नुभयो       | पढनुभयो | नुभयो   | पढनुभयो |                                                             |              |                  |        |                  | नि          | पढलनि   | आह     | चललाह   |

उपर्युक्त तालिकाका आधारमा के निष्कर्षमा पुग्न सकिन्छ भने नेपाली भाषामा वितेको समय सङ्केत गर्ने क्रिया 'पढें, पढ्यौं, पढिस्, पढ्यौ, पढनुभयो, पढ्यो, पढे, पढी, पढिन्' का धातुमा जोडिएका क्रमशः 'एँ, यौं, इस्, यौ, नुभयो, यो, ए, ई, इन्' जस्ता प्रत्यय (रूप) ले भूतकालिक समयको सङ्केत गर्ने गरेको देखिन्छ । त्यसैगरी, मैथिली भाषामा वितेको समय सङ्केत गर्ने क्रिया 'पढ़ली, चलली, पढ़लहुँ, चललहुँ, पढ़लहिँ/पढ़लैं, चललहिँ, चललैं, पढ़लह, चललह, पढ़लनि, चललाह' का धातुमा (आधार प्रत्यय 'ल'सँग) क्रमशः 'ई, हुँ, हिँ, एँ, ह, नि, आह' जस्ता प्रत्ययले भूतकालिक समयको सङ्केत गरेका छन् । दुवै भाषामा प्रत्यय योजना केही भिन्न देखिन्छ । मैथिलीमा आधार-प्रत्यय 'ल' सँग भूतकालिक समयको सङ्केत गर्ने प्रत्ययहरू जोडिएको देखिन्छ साथै निम्न श्रेणीको कर्तासँग प्रयोग हुने सकर्मक/अकर्मक क्रियाको धातुमा आधार-प्रत्यय 'ल' सँग 'ई' प्रत्यय (उ.पु.मा) 'हिँ/एँ' (मध्यम पुरुषमा), 'क' (अन्य पुरुष, सकर्मकमा) र अकर्मकमा चाहिँ  $\emptyset$  (शून्य) प्रत्यय (रूप) जोडिएको देखिन्छ भने उच्च श्रेणीको कर्तासँग प्रयोग हुने सकर्मक/अकर्मक क्रियाको धातुमा आधार प्रत्यय 'ल' सँग 'हुँ' प्रत्यय (उत्तम पुरुषमा तथा मध्यम पुरुषको उच्च आदरमा), 'ह' प्रत्यय (म.पु.मा) 'नि' प्रत्यय (अन्यपुरुषको सकर्मकमा) तथा 'आह' प्रत्यय (अन्यपुरुषको अकर्मकमा) जोडिएको देखिन्छ । यसरी कर्ताको श्रेणी अनुसारको कालबोधक प्रत्यय सकर्मक र अकर्मक क्रियाको धातुमा फरक-फरक पाइनु मैथिलीको विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

#### ४.२.२ अभूतकाल

यस कालले क्रियाको त्यस रूपलाई जनाउँछ, जसमा वर्णित व्यापार वा अवस्थाको समय कथनक्षणभन्दै पहिलाको हुँदैन । यसको तात्पर्य के हो भने भूतकालबाहेकको सम्पूर्ण समय अभूतकाल हुन्छ । नेपालीमा क्रियाका अभूतकालिक रूपको रचना 'छ' प्रत्ययबाट गरिन्छ । लिङ्ग, वचन, पुरुष, आदिका भेदले 'छ' प्रत्ययका विविध रूपहरू हुन्छन् । मैथिलीमा पनि यस किसिमको क्रियाको अवस्था वा कार्यव्यापार पाइन्छ; जसले अभूतकाललाई सङ्केत गर्दछ । अभूतकालको क्रियारूपले कि वर्तमान काल कि भविष्यत् काललाई बुझाउँछ ।

#### ४.२.२.१ वर्तमान काल

वर्तमान कालले अहिलेको समयलाई बुझाउँछ । यस कालमा क्रियाको कार्यव्यापार वा अवस्था प्रारम्भ भइसकेको हुन्छ, तर समाप्त चाहिँ भएको हुँदैन । मैथिलीमा पनि यस किसिमको क्रियाको अवस्था वा क्रियाको कार्यव्यापार पाइन्छ । नेपालीमा क्रियाको वर्तमान कालिक रूपको रचना 'छु, छौँ, छस्, छौ, छ्यौ, छेस्, छ, छे, छन्, छिन्, नुहुन्छ' जस्ता प्रत्ययबाट गरिन्छ । लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर आदिका भेदले यी विविध रूपहरूको प्रयोग गरिन्छ । मैथिलीमा भने वर्तमान कालिक क्रियापद हिजोआज दुई धातु जोडेर बनाइन्छ; एउटा मूल धातु अर्को सहायक धातु 'अछ' । मूल धातु सधैं असमापिकाको रूपमा अर्थात् वर्तमान कृदन्त (इत) को रूपमा रहन्छ साथै त्यसको अगाडि 'अछ' धातु आफ्नो पूर्ण रूपावलीको साथ आउँछ, तर यस्तो भन्नाट नेपालीमा देखिँदैन, जस्तै:

##### नेपाली

म पढ्छु ।

हामी पढ्छौ ।

तँ पढ्छस् ।

तँ पढ्छेस् ।

तिमी पढ्छौ ।

तिमी पढ्छ्यौ ।

तपाईँ पढ्नुहुन्छ ।

ऊ/त्यो/यो पढ्छ / पढ्छे ।

उनी/तिनी/यिनी पढ्छन्/पढ्छिन् ।

उहाँ पढ्नुहुन्छ ।

##### मैथिली

हम पढ़ैत छी ।

हमसभ पढ़ैत छी ।

तुँ पढ़ैत छहिँ / छें ।

तुँ पढ़ैत छहिँ / छें ।

ताँ पढ़ैत छह ।

ताँ पढ़ैत छह ।

अहाँ पढ़ैत छी ।

ओ/ई पढ़ैत अछि ।

ओ/ई पढ़ैत छथि ।

ओ पढ़ैत छथि ।

उपर्युक्त वाक्यहरूमध्ये नेपाली भाषामा वर्तमान समयको सङ्केत गर्ने क्रिया 'पढ्छु, पढ्छौँ, पढ्छस्, पढ्छेस्, पढ्छौ, पढ्छ्यौ, पढ्नुहुन्छ, पढ्छ, पढ्छे, पढ्छन्, पढ्छिन्' का धातुमा जोडिएका क्रमशः 'छु, छौँ, छस्, छेस्, छौ, छ्यौ, नुहुन्छ, छ, छे, पढ्छिन्' का धातुमा जोडिएका क्रमशः 'छु, छौँ, छस्, छेस्, छौ, छ्यौ, नुहुन्छ, छ, छे,

छन्, छिन' जस्ता प्रत्यय (रूप) ले वर्तमानकालिक समयको सङ्केत गरेका छन् । मैथिलीभाषामा वर्तमान समयको सङ्केत गर्ने क्रिया 'पढ़ैत छी, पढ़ैत छहिँ/छें, पढ़ैत छह, पढ़ैत छी, पढ़ैत अछि, पढ़ैत छथि' का धातुमा वर्तमान कृदन्त 'इत' संग 'अछ' धातुको पूर्ण रूपावली अर्थात् आधार प्रत्यय 'छ' संग क्रमशः 'ई, हिँ, एँ, ह, ए, इ, थि' जस्ता प्रत्यय (रूप) ले वर्तमानकालिक समयको सङ्केत गरेका छन्, जुन नेपालीभन्दै भिन्न प्रकारले प्रत्यय योजना गरिएको पाइन्छ । (स्मरणीय रहोस् मैथिलीमा रहेको 'अछ' धातुको 'अ' हिजोआज लुप्त भएर मात्र 'अछि'मा अडेको देखिन्छ) । यसरी मैथिलीमा मूल धातु र सहायक धातु जोडेर वर्तमान क्रियापद बनाउनु मैथिलीको आफ्नो विशेषता हो । यस्तो प्रक्रिया नेपालीमा नदेखिनु मैथिलीसंगको व्यतिरेक पनि हो ।

नेपाली र मैथिली भाषाका वर्तमानकालिक क्रियारूपावली निम्न तालिकामा प्रस्तुत गरी चर्चा गर्ने प्रयास गरिएको छ :

नेपाली र मैथिली भाषाका वर्तमानकालिक क्रियारूपावली

| नेपाली ('पढ़' धातु ) |         |            |             |            |         |            | मैथिली 'पढ़' धातु, (आधार-प्रत्यय 'इत + अछ' ) |              |                |             |                      |
|----------------------|---------|------------|-------------|------------|---------|------------|----------------------------------------------|--------------|----------------|-------------|----------------------|
| पुरुष                | एकवचन   |            |             |            | बहुवचन  |            | पुरुष                                        | निम्न श्रेणी |                | उच्च श्रेणी |                      |
| (कर्ता)              | पुलिङ्ग |            | स्त्रीलिङ्ग |            |         |            | (कर्ता)                                      |              |                |             |                      |
|                      | प्रत्यय | रूप        | प्रत्यय     | रूप        | प्रत्यय | रूप        |                                              | प्रत्यय      | रूप            | प्रत्यय     | रूप                  |
| प्रथम                | छु      | पढ़छु      | छु          | पढ़छु      | छौँ     | पढ़छौँ     | उत्तम                                        | ई            | पढ़ैत छी       | ई           | पढ़ैत छी             |
| द्वितीय              | छस्     | पढ़छस्     | छेस्        | पढ़छेस्    | छौ      | पढ़छौ      | मध्यम                                        | हिँ, ऐँ (ँ ) | पढ़ैत छहिँ/छेँ | ह/ऐँ        | पढ़ैत छह/पढ़ैत छेँ   |
|                      | छौ      | पढ़छौ      | छ्यौ        | पढ़छ्यौ    | छौ      | पढ़छौ      |                                              |              |                | ह           | पढ़ैत छह             |
|                      | नुहुन्छ | पढ़नुहुन्छ | नुहुन्छ     | पढ़नुहुन्छ | नुहुन्छ | पढ़नुहुन्छ |                                              |              |                | ह/एक        | पढ़ैत छी/ पढ़ैत छिएक |
| तृतीय                | छ       | पढ़छ       | छे          | पढ़छे      | छन्     | पढ़छन्     | अन्य                                         | ए, इ         | पढ़ैत अछि      | थि/थिन्ह    | पढ़ैत छथि/ छथिन्ह    |
|                      | छन्     | पढ़छन्     | छिन्        | पढ़छिन्    | छन्     | पढ़छन्     |                                              |              |                | थि          | पढ़ैत छथि/ छथिन्ह    |
|                      | नुहुन्छ | पढ़नुहुन्छ | नुहुन्छ     | पढ़नुहुन्छ | नुहुन्छ | पढ़नुहुन्छ |                                              |              |                | थि          | पढ़ैत छथि/ छथिन्ह    |

उपर्युक्त तालिकाका आधारमा के निष्कर्षमा पुग्न सकिन्छ भने नेपाली भाषामा वर्तमान समय सङ्केत गर्ने क्रिया ‘पढ्छु, पढ्छौं, पढ्छस्, पढ्छेस्, पढ्छौ, पढ्छ्यौ, पढ्नुहुन्छ, पढ्छ, पढ्छे, पढ्छन्, पढ्छिन्’ का धातुमा जोडिएका क्रमशः ‘छु, छौं, छस्, छेस्, छौ, छ्यौ, नुहुन्छ, छ, छे, छन्, छिन्’ जस्ता (रूप) प्रत्ययले वर्तमानकालिक समय सङ्केत गरेको देखिन्छ । त्यसैगरी मैथिली भाषामा वर्तमान समय सङ्केत गर्ने क्रिया ‘पढैत छी, पढैत छहिँ/छें, पढैत छह, पढैत अछि, पढैत छथि’का धातुमा आधार प्रत्यय ‘इत+अछ’ सँग जोडिएका क्रमशः ‘ई, हिँ, एँ, ै, ह, ए, इ, थि’ जस्ता प्रत्यय (रूप) ले वर्तमानकालिक समयको सङ्केत गरेको देखिन्छ । जसमध्ये मैथिलीको मध्यम पुरुषमा देखिने ‘छहिँ’ रूप मानक मैथिलीमा चल्दैन । मैथिलीमा निम्न तथा उच्चश्रेणी बोधक कर्ताका लागि छुट्टै क्रियारूपको प्रयोग भएको देखिन्छ, जुन नेपालीमा देखिदैन ।

#### ४.२.२.२ भविष्यत् काल

भविष्यत् कालले पछि आउने समयलाई जनाउँछ । यस कालमा कार्यव्यापार वा अवस्था आउँदो समयमा हुने बुझिन्छ ।

नेपालीमा भविष्यत् परिवेश जनाउन क्रियापदले छुट्टै रूपायनिक विशेषता लिँदैनन् तापनि भविष्यत्कालका लागि ‘ने’ प्रत्ययान्त कृदन्तीय क्रियाका साथ ‘छ’ का रूपहरूको योगद्वारा बनेका प्रयोगहरू पनि आउँछन् तर यी भविष्यत्का लागि विभेदक हुँदैनन्, पूरक वा वैकल्पिक भने हुन सक्छन्; यस्तो अवस्था वर्तमान प्रयोगबाट भविष्यत्लाई अलग्याउन गरिएको सचेत प्रयासका रूपमा देखापर्छ ।<sup>१६</sup>

मैथिलीमा पनि यस किसिमको क्रियाको अवस्था वा कार्यव्यापार पाइन्छ, जसले भविष्यत्काललाई सङ्केत गर्दछ । मैथिलीमा धातुमा आधार प्रत्यय ‘ब’, ‘त’ सँग ‘शून्य(०), ओँ, हिँ, एँ, ह, आह’ रूप जोडेर भविष्यत्कालिक क्रियारूपको रचना गरिन्छ, जस्तै:

<sup>१६</sup> अधिकारी, हेमाङ्गराज, पूर्ववत् पृ० १२० ।

## नेपाली

म पढ्नेछु ।

हामी पढ्नेछौं ।

तँ पढ्नेछस् ।

तँ पढ्नेछेस् ।

तिमी पढ्नेछौ/पढ्नेछ्यौ ।

तपाईं पढ्नुहुनेछ ।

ऊ/त्यो/यो पढ्नेछ/पढ्नेछे ।

उनी/तिनी/यिनी पढ्नेछन्/पढ्नेछिन् ।

उहाँ पढ्नुहुनेछ ।

## मैथिली

हम पढ़ब ।

हमसब पढ़ब ।

तुँ पढ़बहिँ/बैं ।

ताँ पढ़बहिँ/बैं ।

ताँ पढ़बह ।

अहाँ पढ़ब ।

ओ/ई पढ़त ।

ओ/ई पढ़ताह ।

ओ पढ़ताह ।

उपर्युक्त वाक्यहरूमध्ये नेपाली भाषामा आउने समयको सङ्केत गर्ने क्रिया ‘पढ्नेछु, पढ्नेछौं, पढ्नेछस्, पढ्नेछेस्, पढ्नेछौ, पढ्नेछ्यौ, पढ्नुहुनेछ, पढ्नेछ, पढ्नेछे, पढ्नेछन्, पढ्नेछिन्’ का धातुमा जोडिएका ‘ने’ प्रत्ययान्त कृदन्तीय क्रियाका साथ ‘छ’का रूपहरू क्रमशः ‘नेछु, नेछौं, नेछस्, नेछेस्, नेछौ, नेछ्यौ, नुहुनेछ, नेछ, नेछे, नेछन्, नेछिन्’ जस्ता प्रत्यय (रूप) ले भविष्यत्कालिक समयको सङ्केत गरेका छन् । मैथिली भाषामा आउने समयको सङ्केत गर्ने क्रिया ‘पढ़ब, पढ़बौं, पढ़बहिँ/पढ़बैं, पढ़बह, पढ़त, पढ़ताह’ का धातुमा जोडिएका आधार प्रत्यय ‘ब’/‘त’ सँग जोडिएका ‘Ø’ (शुन्य)/औं, हिँ/एँ, ह, Ø, आह’ जस्ता प्रत्यय (रूप) ले भविष्यत्कालिक समयको सङ्केत गरेका छन् । मैथिलीमा भविष्यत्कालिक प्रत्यय योजना नेपालीभन्दा भिन्न किसिमको देखिन्छ । यसरी दुवै भाषामा यस किसिमको रूपको प्रयोग भएर निर्मित क्रियारूपले पुरुष र आदरसमेत सङ्केत गरी (क्रिया) भेद छुट्टिने गरेको देखिन्छ । नेपाली र मैथिली भाषाका भविष्यत्कालिक क्रियारूपावली निम्न तालिकामा प्रस्तुत गरी चर्चा गर्ने प्रयास गरिएको छ :

उपर्युक्त तालिकाको आधारमा के निष्कर्षमा पुग्न सकिन्छ भने नेपाली भाषामा (भविष्यत्) आउने समय सङ्केत गर्ने क्रिया 'पढ्नेछु, पढ्नेछौँ, पढ्नेछस्, पढ्नेछेस्, पढ्नेछौ, पढ्नेछ्यौ, पढ्नुहुनेछ, पढ्नेछ, पढ्नेछे, पढ्नेछन्, पढ्नेछिन्' का धातुमा जोडिएका 'ने' प्रत्ययान्त कृदन्तीय क्रियाका साथ 'छ'का रूपहरू क्रमशः 'नेछु, नेछौँ, नेछस्, नेछेस्, नेछौ, नेछ्यौ, नुहुनेछ, नेछ, नेछे, नेछन्, नेछिन्' जस्ता प्रत्यय (रूप) ले भविष्यत्कालिक समयको सङ्केत गरेका छन् । त्यसैगरी, मैथिली भाषामा आउने समय सङ्केत गर्ने क्रिया 'पढ़ब, पढ़बौँ/पढ़ब, पढ़बहिँ/पढ़बैँ, पढ़बह, पढ़त, पढ़ताह' का धातुमा आधार-प्रत्यय 'ब'/'त' सँग जोडिएका 'Ø (शून्य), ओँ, हिँ/एँ, ह, Ø, आह' जस्ता प्रत्यय (रूप) ले भविष्यत्कालिक समयको सङ्केत गरेका छन् । जसबाट के देखिन्छ भने मैथिलीमा भविष्यत्कालिक प्रत्यय योजना नेपालीभन्दै भिन्न किसिमको छ । यसरी दुवै भाषामा यस किसिमको रूपको प्रयोग भएर निर्मित क्रिया रूपले पुरुष र आदरसमेत सङ्केत गरी (क्रिया) भेद छुट्टिने गरेको देखिन्छ ।

### ४.३ पक्ष

नेपालीमा पक्ष जनाउन क्रियापदका अलग्गै रूपहरू हुँदैनन् । कृदन्तीय क्रियासँग कालिक क्रियापदको योगबाट पक्ष जनाइन्छ ।

जे-जस्तो प्रकारहरू देखिए तापनि पक्षलाई अपूर्ण, पूर्ण, अभ्यस्त र अज्ञात अनुसार चिनाउने प्रयास गरिएको छ ।

#### ४.३.१ अपूर्ण पक्ष

अपूर्ण पक्षले कार्यको अपूर्णता वा निरन्तरता जनाउने हुन्छ । यो एकभन्दै बढी कालिक परिवेशमा आउन सक्छ । मैथिलीमा पनि यस किसिमको अवस्था देखिन्छ; जस्तै:-

भाषा वर्तमानकाल

नेपाली : श्याम पढ्दै छ ।

भूतकाल

श्याम पढ्दै थियो ।

|                                         |                                 |
|-----------------------------------------|---------------------------------|
| मैथिली : श्याम पढैत अछि/पढ़ि रहल अछि ।  | श्याम पढैत/पढ़ि रहल छल ।        |
| नेपाली : म पढ्दै छु ।                   | म पढ्दै थिएँ ।                  |
| मैथिली : हम पढैत छी ।                   | हम पढैत छलहुँ ।                 |
| नेपाली : हामी पढ्दै छौँ ।               | हामी पढ्दै थियौँ ।              |
| मैथिली : हमसभ पढैत छी ।                 | हमसभ पढैत छलहुँ ।               |
| नेपाली : तँ पढ्दै छस्/छेस् ।            | तँ पढ्दै थिइस् ।                |
| मैथिली : तुँ पढैत छहिँ/छें ।            | तुँ पढैत छलहिँ/छलें ।           |
| नेपाली : तिमी पढ्दै छौ ।                | तिमी पढ्दै थियौ ।               |
| मैथिली : तौँ पढैत छह ।                  | तौँ पढैत छलह ।                  |
| नेपाली : तपाईँ पढ्दै हुनुहुन्छ ।        | तपाईँ पढ्दै हुनुहुन्थ्यो ।      |
| मैथिली : अहाँ/अपने पढैत छी ।            | अहाँ/अपने पढैत छलहुँ ।          |
| नेपाली : ऊ/त्यो/यो पढ्दै छ/छे ।         | ऊ/त्यो/यो पढ्दै थियो/थिई ।      |
| मैथिली : ओ/ई पढैत अछि ।                 | ओ/ई पढैत छल ।                   |
| नेपाली : उनी/तिनी/यिनी पढ्दै छन्/छिन् । | उनी/तिनी/यिनी पढ्दै थिए/थिइन् । |
| मैथिली : ओ/ई पढैत छथि/छथिन्ह ।          | ओ/ई पढैत छलनि/छलथिन्ह ।         |

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरूलाई हेर्दा के देखिन्छ भने नेपाली भाषामा कृदन्तीय तै/दै (तो/दो) प्रत्ययका सहायताले वर्तमान र भूतकालका क्रियाका कार्यको अपूर्णता/निरन्तरता व्यक्त भएको छ र कृदन्तीय क्रियाका साथमा वर्तमानकालिक/भूतकालिक सहायक क्रियाको योग हुने गर्दछ भने मैथिली भाषाका वाक्यमा वर्तमानकालको अपूर्ण पक्ष अन्तर्गतको क्रियाको मूल धातु 'इत' र सहायक धातु 'अछ' मा 'ई, हिँ/एँ, ह, ए, इ, थि' रूपको योग हुने गरेको तथा भूतकालको अपूर्ण पक्ष अन्तर्गतको क्रियाको धातुमा कृदन्तीय 'इत' प्रत्यय र आधार प्रत्यय 'ल' सँग 'हुँ, हिँ, एँ, ह, क, Ø, नि, आह (अकर्मकमा)' रूपको योग हुने गरेको पाइन्छ; जसको सहायताले क्रियाको कार्यको अपूर्णता, निरन्तरता व्यक्त भएको छ । मैथिली भाषामा पनि नेपालीमा जस्तै कृदन्तीय क्रिया र वर्तमानकालिक/भूतकालिक सहायकक्रियाको

योग भई बनेका क्रियापदले अपूर्ण पक्षको बोध गराउने गरेको देखिन्छ । यसले नेपाली र मैथिलीमा रहेको समानतालाई झल्काउँछ ।

### ४.३.२ पूर्ण पक्ष

पूर्ण पक्षले कार्यको सिद्धि वा पूर्णता जनाउँछ । यो पनि एकभन्दै बढी कालिक परिवेशमा आउँछ । मैथिलीमा पनि यस किसिमको अवस्था देखिन्छ । जस्तै:

**भाषा वर्तमानकाल**

**भूतकाल**

नेपाली : मैले पढेको छु ।

मैले पढेको थिएँ ।

मैथिली : हम पढ़ि चुकल छी ।

हम पढ़ि चुकल छलहुँ ।

नेपाली : तैले पढेको छस्/छेस् ।

तैले पढेको थिइस् ।

मैथिली : तुँ पढ़ि चुकल छहिँ/छें ।

तुँ पढ़ि चुकल छलहिँ/छलें ।

नेपाली : तिमिले पढेका छौ/पढेकी छ्यौ ।

तिमिले पढेका थियौ/पढेकी थियौ ।

मैथिली : तौं पढ़ि चुकल छह ।

तौं पढ़ि चुकल छलह ।

नेपाली : तपाईंले पढ्नुभएको छ ।

तपाईंले पढ्नुभएको थियो ।

मैथिली : अहाँ/अपने पढ़ि चुकल छी ।

अहाँ/अपने पढ़ि चुकल छलहुँ ।

नेपाली : उसले/त्यसले/यसले पढेको छ/  
पढेकी छे ।

उसले/त्यसले/यसले पढेको  
थियो/पढेकी थिई ।

मैथिली : ओ/ई पढ़ि चुकल अछि ।

ओ/ई पढ़ि चुकल छलक ।

नेपाली : उनले/तिनले/यिनले पढेका छन्/  
/पढेकी छिन्

उनले/तिनले/यिनले पढेका  
थिए/पढेकी थिइन् ।

मैथिली : ओ/ई पढ़ि चुकल छथि ।

ओ/ई पढ़ि चुकल छलनि ।

नेपाली : उहाँले पढ्नुभएको छ ।

उहाँले पढ्नुभएको थियो ।

मैथिली : ओ पढ़ि चुकल छथि ।

ओ पढ़ि चुकल छलनि ।

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरूलाई हेर्दा के देखिन्छ, भने नेपालीमा कृदन्तीय 'एको/एका/एकी' प्रत्ययका सहायताले वर्तमान र भूतकालका क्रियाका कार्यको पूर्णता व्यक्त भएको छ र कृदन्तीय क्रियाका साथमा वर्तमानकालिक (छ) तथा भूतकालिक (थि) सहायक क्रियाको योग हुने गर्दछ भने मैथिली भाषाका वाक्यमा वर्तमानकालको पूर्ण पक्षअन्तर्गतको कृदन्तीय क्रिया (पढ़ि) र 'चुकल (गेल)' आधार प्रत्यय 'छ' मा 'ई, हिँ, एँ, ह, ए, इ, थि' रूपको योग हुने गरेको तथा भूतकालको पूर्ण पक्षअन्तर्गतको कृदन्तीय क्रिया 'पढ़ि' र 'चुकल' सँग आधार प्रत्यय 'छल' मा 'हुँ, हिँ/एँ, ह, क, नि, आह (अकर्मकमा)' रूपको योग हुने गरेको पाइन्छ; जसको सहायताले कार्यको पूर्णता व्यक्त भएको छ । नेपाली भाषामा जस्तै मैथिलीमा पनि कृदन्तीय क्रिया र वर्तमानकालिक तथा भूतकालिक सहायक क्रियाको योग भई बनेका क्रियापदले पूर्ण पक्षको बोध गराउने गरेको देखिन्छ; जसले यी दुई भाषामा रहेको समानतालाई देखाउँछ । त्यसैगरी नेपालीमा कृदन्तीय 'एको/एका/एकी' प्रत्ययहरू कर्ताको लिङ्ग, वचन, पुरुष, आदर आदि अनुसार धातुमा प्रयोग भएको देखिन्छ भने मैथिलीमा यसको अभाव देखिन्छ, जुन यी दुई भाषाको पूर्ण पक्षको आधारमा व्यतिरेक मान्न सकिन्छ ।

### ४.३.३ अभ्यस्त पक्ष

कार्यको आवृत्ति वा अभ्यस्त स्वभाव जनाउने पक्षलाई अभ्यस्त भनिन्छ अर्थात् वितेको समयमा नियमिमत्ता वा काम गर्न बानी परेको (काममा निरन्तरता दिने गरेको) अर्थ जनाउने क्रियाको रूपलाई अभ्यस्त भूत भनिन्छ । यसलाई अभ्यासबोधक भूत पनि भनिन्छ । साथै यसले वितेका समयमा कुनै कार्य निरन्तर रूपमा गर्ने गरेको तर पछि खण्डित भएको भावबोध गराउँदछ । त्यसैले यसलाई अपूर्ण भूत र पूर्ण भूत बीचको पक्षका रूपमा लिने गरिन्छ । मैथिलीमा नेपालीमा जस्तै यस किसिमको छुट्टै क्रियारूप पाइँदैन; अपूर्ण भूतमा भैं क्रियारूप पाइन्छन्; जस्तै:-

नेपाली

म धेरै पढ्छौं

मैथिली

हम बहुते पढैत छलहुँ ।

|                                    |                              |
|------------------------------------|------------------------------|
| हामी धेरै पढ्थ्यौ ।                | हमसभ बहुते पढैत छलहुँ ।      |
| तँ धेरै पढ्थिस् ।                  | तुँ बहुते पढैत छलहिँ/छलें ।  |
| तिमी धेरै पढ्थ्यौ ।                | ताँ बहुते पढैत छलह ।         |
| तपाईं धेरै पढ्नुहुन्थ्यो ।         | अहाँ/अपने बहुते पढैत छलहुँ । |
| ऊ/त्यो/यो धेरै पढ्थ्यो/पढ्थी ।     | ओ/ई बहुते पढैत छलक ।         |
| उनी/तिनी/यिनी धेरै पढ्थे/पढ्थिन् । | ओ/ई बहुते पढैत छलनि/छलथिन ।  |

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरूलाई हेर्दा के देखिन्छ, भने नेपाली भाषाका वाक्यका क्रियामा 'थें, थ्यौं, थिस्, थ्यौ, नुहुन्थ्यो, थ्यो, थी, थे, थिन्' आदि जस्ता भूतकालिक रूप (प्रत्यय) द्वारा 'पढ्थें, पढ्थ्यौं, पढ्थिस्, पढ्थ्यौ, पढ्नुहुन्थ्यो, पढ्थ्यो, पढ्थी, पढ्थे, पढ्थिन्' जस्ता क्रियापद बनेर अभ्यस्त भूतको बोध गराएको पाइन्छ, तर मैथिलीमा क्रियाको मूल धातुमा कृदन्तीय 'इत' प्रत्यय र आधार प्रत्यय 'ल' संग 'हुँ, हिँ, एँ, ह, क, नि' आदि जस्ता भूतकालिक रूप (प्रत्यय) द्वारा 'पढैत छलहुँ, पढैत छलहिँ/छलें, पढैत छलह, पढैत छलक, पढैत छलनि/छलथिन' जस्ता क्रियापद बनेर अभ्यस्त भूतको अर्थबोध गराएको देखिन्छ, जुन अपूर्ण भूतसंग पूरै मेल खान्छ । अतः नेपालीमा भै मैथिलीमा अभ्यस्त रूप देखाउने छुट्टै प्रत्ययको अस्तित्व नभएकाले अभ्यस्त भूतको अस्तित्व पनि देखिँदैन जुन नेपालीसँगको व्यापक व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

### ४.३.४ अज्ञात पक्ष

पहिले थाहा नभई पछि मात्र थाहा भएको क्रियाको अवस्था जनाउनेलाई अज्ञात पक्ष भनिन्छ । अज्ञात परिस्थितिको निश्चय जनिनु नै अज्ञात पक्षको विशेषता मानिन्छ । अर्थात् क्रियाको कार्यव्यापार वितेको समयमा थाहा नपाइकन भइसकेको तर पछि मात्र ज्ञात हुन आएको वा वर्तमानमा ज्ञात हुन आएको जनाउँदछ । मैथिलीमा नेपालीमा जस्तै यस किसिमको छुट्टै क्रियारूप पाइँदैन, जस्तै :

नेपाली

मैले पढेछु ।

मैथिली

हम पढने छी ।

|                                    |                       |
|------------------------------------|-----------------------|
| हामीले पढेछौं ।                    | हमसभ पढने छी ।        |
| तैंले पढेछस्/पढिछेस् ।             | ताँ पढने छह/छें ।     |
| तिमीले पढेछौ/पढिछ्यौ ।             | ताँसभ पढने छह/छिहीक । |
| तपाईंले पढनुभएछ ।                  | अहाँ/अपने पढने छिएक । |
| उसले/त्यसले/यसले पढेछ/पढिछे ।      | ओ/ई पढने अछि ।        |
| उनले/तिनले/यिनले पढेछन्/ पढिछिन् । | ओ/ई पढने छथि ।        |
| उहाँले पढनुभएछ ।                   | ओ पढने छथि, आदि ।     |

नेपाली भाषामा अज्ञात भूतको क्रियाको रूप हेर्दा कृदन्तीय 'ए' प्रत्यय लागेका मुख्य क्रिया र वर्तमानकालिक सहायक क्रिया 'छ' को प्रयोग भई बनेका 'पढेछु, पढेछौ, पढेछस्/पढिछेस्, पढेछौ/पढिछ्यौ, पढनुभएछ, पढेछ/पढिछे, पढेछन्/पढिछिन्, पढनुभएछ' जस्ता क्रियारूपले अज्ञात भूतको बोध गराएको पाइन्छ । तर मैथिलीमा अज्ञात पक्ष नहुनाले पूर्ण पक्षको भै क्रियारूपले अज्ञात पक्षको अर्थलाई बुझाएको देखिन्छ । यसरी नेपालीमा अज्ञात पक्ष हुनु तर मैथिलीमा नहुनुले यी दुई भाषाको व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

## ४.४ भाव

नेपालीका तीन किसिमका भावका आधारमा मैथिली भाषाका भावलाई पनि वर्गीकरण गरी विश्लेषण गर्ने प्रयास गरिएको छः

### ४.४.१ सामान्यार्थ

वक्ता वा लेखकको सामान्य वृत्ति वा निश्चय बुझाउने क्रियारूपलाई सामान्यार्थक भनिन्छ । निश्चय भाव बुझाउने आधारमा यसलाई निश्चयार्थ भनिएको पनि पाइन्छ । यस भावको अभिव्यक्ति करण वा अकरण र प्रश्नसूचकका रूपमा प्रयुक्त हुँदा निश्चित उत्तर दिन सकिने हुन्छ । मैथिली भाषामा पनि यस किसिमको भाव (अर्थ) को बोध गराउने क्रिया रहेको पाइन्छ, जस्तै:

## नेपाली

म पढ्छु ।

मैले पढें ।

म पढ्ने छु ।

तँ पढ्छस्/पढ्छेस् ।

तिमी पढ्छौ/पढ्छ्यौ ।

तैले पढिस् ।

तिमीले पढ्यौ ।

तँ पढ्नेछस्/पढ्नेछेस् ।

तिमी पढ्नेछौ/पढ्नेछ्यौ ।

ऊ/त्यो/यो पढ्छ/पढ्छे ।

उसले/त्यसले/यसले पढ्यो/पढी

ऊ/त्यो/यो पढ्नेछ/पढ्नेछे ।

उनी/तिनी/यिनी पढ्छन्/पढ्छिन् ।

उनले/तिनले/यिनले पढे/पढिन् ।

उनले/तिनले/यिनले पढ्नेछन्/पढ्नेछिन् । ओ/ई पढ्ताह, आदि ।

माथिका वाक्यहरूमा प्रयुक्त क्रियापद नेपाली र मैथिलीमा 'पढ्छु (पढैंत छी), पढें (पढलहुँ), पढ्नेछु(पढब), पढ्छस्/पढ्छेस् (पढैंत छहिँ/छी), पढ्छौ/पढ्छ्यौ(पढैंत छह), पढिस् (पढलहिँ), पढ्यौ (पढलह), पढ्नेछस्/पढ्नेछेस् (पढबहिँ), पढ्नेछौ/पढ्नेछ्यौ (पढबह), पढ्छ/पढ्छे (पढैंत अछि), पढ्यो/पढी (पढलक), पढ्नेछ/पढ्नेछे (पढत), पढ्छन्/पढ्छिन् (पढैंत छथि), पढे/पढिन् (पढलनि), पढ्नेछन्/पढ्नेछिन् (पढताह)' आदिले निश्चित भाव (अर्थ) प्रदान गरेका छन् ।

## मैथिली

हम पढैंत छी ।

हम पढलहुँ ।

हम पढब ।

तुँ पढैंत छहिँ/छी ।

ताँ पढैंत छह ।

तुँ पढलहिँ ।

ताँ पढलह ।

तुँ पढबहिँ ।

ताँ पढबह ।

ओ/ई पढैंत अछि ।

ओ/ई पढलक ।

ओ/ई पढत ।

ओ/ई पढैंत छथि ।

ओ/ई पढलनि ।

माथिका सबै क्रिया करण क्रियाका रूपमा प्रयुक्त हुन आएको देखिन्छ । सुविधा अनुसार नेपाली समापिका क्रियाको सुरु, बीच तथा अन्त्यमा 'न' जोडेर तथा

मैथिली समापिका क्रियाको सुरुमा मात्र 'नहि' जोडेर नकारात्मक निश्चित अर्थ प्रदान गर्ने अकरण क्रियारूप वाक्यमा प्रयुक्त हुन सक्तछ, जुन मैथिलीको आफ्नै विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक पक्ष पनि हो ।

त्यसैगरी नेपालीमा सार्वनामिक प्रश्नसूचकका रूपमा आउने 'के, को, किन, कसले, कसको, कहिले, कहाँ, कुन, कसरी' आदि जस्ता प्रश्नसूचक शब्दहरू प्रयुक्त भए जस्तै मैथिलीमा पनि आफ्नै किसिमका यस्ता प्रश्नसूचकका रूपमा 'की, केकर, किनकर, के, कखन, कतए' आदि जस्ता प्रश्नार्थक सार्वनामिक शब्दहरू प्रयुक्त भई वा क्रियापदलाई पनि प्रश्नार्थक बनाई भाव प्रकट गर्ने गरेको पाइन्छ; जस्तै :- अपनेके की भेल ? (तपाईंलाई के भयो ?) ले प्रश्नार्थक भाव प्रकट गरेको देखिन्छ । यसरी नै 'पढैत छी, पढ़लहुँ, पढ़ब' क्रियाले नेपालीमा जस्तो वर्तमान, भूत, भविष्यत् तीनै कालको पनि निश्चितताका साथ भाव बोध गरेको देखिन्छ । यसरी नेपालीमा जस्तो मैथिलीमा पनि सामान्यार्थ प्रकट गर्ने भाव (अर्थ) देखिन आउँछ ।

### ४.४.२ विध्यर्थ

क्रियावाट आज्ञा र इच्छार्थको मनोभाव बोध हुने भाव विध्यर्थ हो । यसलाई दुई प्रकारले वर्गीकरण गर्न सकिन्छ; क) इच्छार्थ, (ख) आज्ञार्थ । मैथिली भाषामा पनि क्रियावाट आज्ञा र इच्छाको मनोभाव बोध गराउने भाव पाइन्छ; जसमध्ये आज्ञार्थकलाई अनुज्ञात्मक तथा इच्छार्थकलाई कामनात्मक भावअन्तर्गत राखेको पाइन्छ । यिनलाई पनि नेपाली भाषा अनुसार नै वर्गीकरण गरी चर्चा गरिएको छ ।

#### ४.४.२.१ इच्छार्थ

वक्ता वा लेखकको अनुरोध, अनुनय, विन्ती, प्रार्थना, इच्छा, आशीर्वाद आदि वृत्ति बुझाउने भावलाई इच्छार्थक भनिन्छ । नेपालीका सबै पुरुष र वचनमा यस भावको क्रियाको प्रयोग भएको पाइन्छ भने मैथिलीमा पनि सबै पुरुष र वचनमा इच्छार्थक भावको क्रियाको प्रयोग भएको पाइन्छ । मैथिलीमा पुरुष र आदर (श्रेणी)

अनुरूप क्रिया रूपायित भए पनि लिङ्ग र वचनअनुरूप क्रिया रूपायित भएको पाइँदैन । पुरुषद्वारा वचन छुट्टिने र क्रियामा वचन नछुट्टिई एकै रूप वा समान रूप प्रयुक्त हुने गर्दछ; जस्तै :

नेपाली

मैथिली

म पढूँ ।

हम पढ़ी ।

हामी पढौँ ।

हमसभ पढ़ी ।

तँ पढेस् ।

तुँ पढ़िहँ ।

तिमी पढे ।

तौँ पढ़ह ।

ऊ/त्यो/यो पढोस् ।

ओ/ई पढ़य ।

उनी/तिनी/यिनी पढून् ।

ओ/ई पढ़थि, आदि ।

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरू मध्ये नेपालीका 'पढूँ, पढौँ, पढेस्, पढे, पढोस्, पढून्' क्रियाका धातुमा क्रमशः 'ऊँ, औँ, एस्, ए, ओस्, ऊन्' प्रत्यय लागेर इच्छार्थक भाव बोध भएको पाइन्छ भने मैथिलीका 'पढ़ी, पढ़िहँ, पढ़ह, पढ़य, पढ़थि' क्रियाका धातुमा क्रमशः 'ई, हिँ, ह, य, थि' जस्ता पाँचौँ लकार बुझाउने प्रत्यय लागेर इच्छार्थक भाव बोध भएको पाइन्छ । मैथिलीमा एउटै रूपको एकै क्रिया प्रयुक्त हुन गई वचनभेद नभएको र समान क्रियाले भाव व्यक्त गरेको देखिन्छ । वचनको भेदक क्रिया नभएर स्वयम् पुरुषबाटै छुट्टिने देखिन्छ । (वचनको चर्चा यसभन्दै अगाडिको परिच्छेदमा पनि गरिसकिएको छ ।)

मैथिलीमा आशीर्वाद, शुभकामना, श्राप आदिमा चौथो लकार अर्थात् आज्ञार्थ रूपावली प्रयोग भएको देखिन्छ, जब कि नेपालीमा इच्छार्थ भावबोधक क्रिया रूपावलीकै प्रयोग भएको देखिन्छ, जसबाट यी दुई भाषाबीचको व्यतिरेक देखिन्छ साथै मैथिलीको विशेषता पनि, जस्तै (राजा दीर्घायु होऊन् ) राजा दीर्घायु होथु । 'होथु' क्रिया मैथिलीमा आज्ञार्थक भाव बुझाउने उच्च श्रेणीको कर्तासँग प्रयोग गरिन्छ; अर्थ चाहिँ इच्छार्थले दिने भै हुन्छ, तर नेपालीमा 'होऊन्' क्रियारूप विशेष गरेर

इच्छार्थक भावलाई नै बुझाउनुका साथै इच्छार्थकमा मात्र प्रयोग गरिन्छ, यसरी यस दृष्टिकोणले यी दुई भाषाबीचको व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

#### ४.४.२.२ आज्ञार्थ

वक्ता वा लेखकको आज्ञा, हुकुम, आदेश आदि वृत्ति बुझाउने क्रियारूपलाई आज्ञार्थक भनिन्छ । आज्ञार्थक वाक्यमा कर्ता रहन पनि सक्छ र नरहन पनि सक्छ । आज्ञार्थक सबै पुरुषमा नभई द्वितीय पुरुषको एकवचन र बहुवचनमा मात्र हुन्छ । मैथिलीमा पनि यस्ता क्रियाको भाव वा अर्थबोध गराउने प्रक्रिया पाइन्छ । जस्तै:

नेपाली

मैथिली

म .....

हम पढू ।

तँ पढ् ।

तुँ पढ/पढ़िह ।

तिमी पढ/पढ्नु ।

ताँ पढ़ह ।

तपाईं पढ्नुहोस् ।

अहाँ/अपने पढू ।

ऊ/त्यो/यो .....

ओ/ई पढ़ओ ।

उनी/तिनी/यिनी .....

ओ/ई पढ़थु, आदि ।

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरू मध्ये नेपालीका ‘पढ्, पढ/पढ्नु, पढ्नुहोस्’ क्रियाका धातुमा क्रमशः ‘ $\emptyset$  (शुन्य), अ/नू, नुहोस्’ प्रत्यय लागेर आज्ञार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ भने मैथिलीमा ‘पढू, पढ/पढ़ हि, पढ़ह, पढू, पढ़ओ, पढ़थु’ क्रियाका धातुमा क्रमशः ‘ऊ,  $\emptyset$  (शुन्य)/हि, ह, ऊ, ओ, थु’ जस्ता चौथो लकार बुझाउने प्रत्यय लागेर आज्ञार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ । सुविधा अनुसार मैथिलीमा भविष्यत्कालिक आज्ञामा सातौँ लकार (निम्न श्रेणीमा ‘इहहिँ/इहे’ तथा उच्च श्रेणीमा ‘इहह’) प्रयोग भएको पाइन्छ । जस्तै: रओ ताँ काल्हि चलिहँ । हओ, ताँ काल्हि चलिहह आदि ।

त्यसैगरी, मैथिलीमा खास गरेर निषेधात्मक आज्ञामा चौँथो लकारको सँग— सँगै तेस्रो लकारको पनि व्यवहार भएको पाइन्छ । जस्तै : हओ होस्टलमे घर जेकाँ नहि करबह वा करिहह, मन लगा पढ़बह । मैथिलीमा आशीर्वाद , शुभकामना, श्राप आदि अर्थ बुझाउँदा पनि आज्ञार्थ भाव हुने गर्दछ, जसमा चौँथो लकारको प्रयोग भएको पाइन्छ जस्तै: जुग—जुग जीबथु; बज्र खसौक आततायीक कपारपर आदि । माथिका उदाहरणहरूलाई गहिरिएर हेर्दा नेपालीमा द्वितीय पुरुषमा मात्र आज्ञार्थ भाव बुझाउने रूपायक प्रत्ययहरू देखिन्छन् भने मैथिलीमा तीनै पुरुष अर्थात् उत्तम, मध्यम, अन्यपुरुषमा आज्ञार्थ भाव बुझाउने रूपायक प्रत्ययहरू देखिन्छन्, जसमध्ये उत्तम पुरुषको उच्च श्रेणीको कर्तासँग मात्र तथा मध्यम र अन्यपुरुषको निम्न तथा उच्च दुवै श्रेणीको कर्तासँग प्रयोग हुने रूपायक प्रत्यय देखिन्छ, जुन मैथिलीको आफ्नो विशेषता देखिनुका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक पनि प्रष्टिन्छ । नेपालीमा वचनअनुसार छुट्टै रूपायक प्रत्ययको प्रयोग भएको पनि पाइन्छ तर मैथिलीमा यसको अभाव देखिन्छ, जसले यी दुई भाषाबीचको व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

### ४.४.३. अनिश्चयार्थ

क्रियाको कार्यव्यापारको निश्चय नभईसकेको , सम्भावना, अड्कल, सन्देह (अनुमान) वा कल्पना आदिको भाव वा अर्थ बोध गराउने अनिश्चयार्थ हो । यो भाव दुई प्रकारको हुन्छ: सम्भावनार्थ र सङ्केतार्थ । अनिश्चयार्थ बोध गराउने भाव मैथिलीमा पनि रहेको देखिन्छ ।

#### ४.४.३.१. सम्भावनार्थ

सम्भावनार्थ क्रियाको कार्यव्यापारले सम्भावना, अड्कल आदि भाव बुझाउँछ । नेपालीका सबै पुरुष र वचनका क्रियामा यस भावको रूपायन गर्ने प्रत्ययहरू छन् । यसले अभूतकालान्तर्गत भविष्यत्मा हुने कार्यलाई जनाउँछ । यस भावको अभिव्यक्ति करण र अकरण दुवै खालका वाक्यमा हुन्छ । मैथिलीमा पनि यस्ता क्रियाको भाव वा अर्थबोध गराउने प्रक्रिया पाइन्छ; जस्तै :-

## नेपाली

म पढूँला ।

हामी पढौँला ।

तँ पढ्लास/ पढ्लिस ।

तिमी पढौला/ पढौली ।

ऊ/त्यो/यो पढ्ला/पढ्ली ।

उनी/तिनी/यिनी पढ्लान्/पढ्लिन् ।

## मैथिली

हम पढ़ब ।

हमसभ पढ़ब ।

तुँ पढ़बहिँ/ पढ़बैँ ।

ताँ पढ़बह ।

ओ/ई पढ़त ।

ओ/ई पढ़ताह, आदि ।

माथिका वाक्यहरू मध्ये नेपालीका 'पढूँला, पढौँला, पढ्लास्/पढ्लिस, पढौला/पढौली, पढ्ला/पढ्ली, पढ्लान्/पढ्लिन्' क्रियाका धातुमा क्रमशः 'उँला, औँला, लास्/लिस, औला/औली, ला/ली, लान्/लिन्' प्रत्यय लागेर सम्भावनार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ भने मैथिलीका 'पढ़ब, पढ़बहिँ/पढ़बैँ, पढ़बह, पढ़त, पढ़ताह' क्रियाका धातुमा आधार प्रत्यय 'ब/त' सँग क्रमशः 'Ø (शुन्य), हिँ/ऐँ, ह, Ø (शुन्य), आह' प्रत्यय लागेर सम्भावनार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ । मैथिलीमा भविष्यत्कालिक क्रियारूप र सम्भावनार्थ क्रियारूप एउटै प्रयोग भएको पाइन्छ, जुन मैथिलीको आफ्नै विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक पक्ष पनि हो । मैथिलीमा जब क्रियाको निष्पत्ति वक्ताको अनुमानको विषय हुन्छ, तब 'हो' धातुको प्रयोग गरिएको पनि पाइन्छ । मूल धातु यथास्थिति वर्तमान कृदन्त वा भूत कृदन्त रूपमा रहन्छ भने अनुप्रयुक्त धातुबाट तेस्रो वा पाँचौ लकार हुन्छ; जस्तै :- हमार अनुमान अछि जे अरविन्द गाम पहुँचल होयताह, नाच देखने होयताह वा देखैत होयताह आदि । यसरी सम्भावना, अनुमान बुझाउँदा भविष्यत् तथा इच्छार्थक रूपायक प्रत्यय मैथिलीमा देखिनु यसको विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेकी पक्ष प्रष्टिन्छ ।

### ४.४.३.२. सङ्केतार्थ

क्रियाहरूका बीच अनुमानात्मक वा काल्पनिक कारण र कार्य (सङ्केतक र सङ्केतित) को स्थिति रहेमा सङ्केतार्थ व्यक्त हुन्छ । एकभन्दै बढी

क्रियाहरू संलग्न रहने हुनाले यसमा दुई उपवाक्यहरू निहित हुन्छन् :  
एउटा सर्त उपवाक्य र अर्को कार्य उपवाक्य ।

मैथिलीमा पनि यस्तो भाव बोध गराउने प्रक्रिया पाइन्छ, जस्तै :-

नेपाली

मैथिली

- |                                    |                               |
|------------------------------------|-------------------------------|
| (i) यदि वर्षा भयो भने धान उब्जला । | यदि वर्षा होयत तँ धान उपजत ।  |
| (ii) समय भेट्यो भने गाउँ जाउँला ।  | जँ समय भेटत तँ गाम जाएब ।     |
| (iii) त्यो आए म जान्थेँ ।          | ओ जँ अबैत तँ हम जैतहुँ, आदि । |

माथिका वाक्यहरू मध्ये नेपाली (i) मा ‘भयो’ र ‘उब्जला’ समापिका क्रिया हुन् । त्यसैगरी, (ii) मा ‘भेट्यो’ र ‘जाउँला’ समापिका क्रिया हुन् भने (iii) मा ‘आए’ र ‘जान्थे’ क्रमशः असमापिका र समापिका क्रिया हुन् । जहाँ असमापिका र समापिका क्रियाका संयुक्त कार्यवाट सङ्केतार्थको बोध भएको देखिन्छ । मैथिलीमा (i) मा ‘होयत’ र ‘उपजत’ , (ii) मा ‘भेटत’ र ‘जाएब’ तथा (iii) मा ‘अबैत’ र ‘जैतहुँ’ समापिका क्रिया हुन् जसले कार्यको निश्चितता नबताई त्यसको सम्भावना अथवा अर्को कार्यमाथि त्यसको निर्भरता बुझाउँदछ । नेपालीमा जस्तो मैथिलीमा असमापिकाको स्थिति देखा पर्दैन, जुन मैथिलीका विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक पक्ष पनि हो ।

#### ४.५ वाच्य

वाक्यतत्त्वको प्रधानता वा वाच्यताका आधारमा नेपालीमा वाच्यहरू तीन किसिमका मानिन्छन्: कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य र भाववाच्य ।<sup>१७</sup> मैथिलीमा पनि यस किसिमका वाच्यहरू पाइन्छन् । नेपालीका यिनै तीन किसिमका वाच्यका आधारमा मैथिली भाषाका वाच्यलाई पनि वर्गीकरण गरी विश्लेषण गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

---

<sup>१७</sup> अधिकारी, हेमाङ्गराज, पूर्ववत्, पृ. १६५

### ४.५.१ कर्तृवाच्य

वाक्यमा कर्ता प्रधान वा वाच्य भई प्रयोग हुने व्याकरणात्मक युक्तिलाई कर्तृवाच्य भनिन्छ । कर्तृवाच्यको प्रयोग अकर्मक तथा सकर्मक दुवै क्रियाहरूमा हुन्छ । मैथिलीमा पनि यस प्रकारको प्रक्रिया देखिन्छ, जस्तै:-

| सकर्मक                                   | अकर्मक               |
|------------------------------------------|----------------------|
| नेपाली: श्याम पुस्तक पढ्दैछ ।            | श्याम हाँस्दै छ ।    |
| मैथिली: श्याम पुस्तक पढैत अछि ।          | श्याम हँसैत अछि ।    |
| नेपाली: सीताले गीत गाइन् ।               | राधा नाच्दै छे ।     |
| मैथिली: सीता गीत गओलन्हि                 | राधा नचैत अछि ।      |
| नेपाली: सबै व्यक्ति सभामा उपस्थित भए ।   | रीता आउँदै छे ।      |
| मैथिली: सब व्यक्ति सभामे उपस्थित भेलाह । | रीता अबैत अछि, आदि । |

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरू मध्ये नेपाली भाषाका वाक्यहरूमा कर्ता र क्रियापदका बीच मेल (अन्वय) भई कर्ता अनुसार क्रियापदको लिङ्ग वचन, पुरुष र आदर अनुरूपको सङ्गति रहने गरेको देखिन्छ, भने मैथिलीका वाक्यहरूमा पनि कर्ता र क्रियापदका बीच मेल (वाक्यमा कर्ताको प्रधानता) भएको देखिन्छ । यसमा पनि कर्ताको पुरुष, श्रेणी (सामाजिक स्तर), लिङ्ग आदि अनुसार क्रिया निर्धारित भएको देखिन्छ । मैथिलीमा निश्चयात्मक तथा अनिश्चयात्मक दुवै भावमा कर्तृवाच्य व्यक्त भएको पाइन्छ । निश्चयात्मक भावअन्तर्गत सामान्य वर्तमानको रूपनिर्माण गर्नका लागि वर्तमानकालिक कृदन्तको अगाडि 'हो' सहायिका क्रियाको वर्तमानकालिक रूप लगाइन्छ, तथा सामान्यभूत अथवा सामान्य भविष्यत्कालिक रूप बनाउनका लागि धातुको मौलिक विकारमात्र आवश्यक हुन जान्छ, जस्तै:- चलैत छी (वर्तमान), चलल (भूत), चलब (भविष्यत्) । त्यसैगरी, अपूर्ण रूपको निर्माण गर्नका लागि

वर्तमानकालिक कृदन्तको अगाडि 'हो' सहायिका क्रियाको वर्तमानकालिक रूप जोडेर वर्तमानकालिक, 'हो' एवं 'रह' धातुको समापिका रूप जोडेर भूतकालिक तथा 'रह' धातुको भविष्यत्कालिक सहायिका रूप जोडेर भविष्यत्कालिक रूप बनाइन्छ; जस्तै:- चलैत छी (वर्तमान), चलैत छलहुँ (भूत), चलैत रहब (भविष्यत्) । पूर्ण रूपको निर्माण गर्नका लागि अकर्मक क्रियाको सामान्य भूतकालिक रूप तथा सकर्मक क्रियाको सार्वकालिक कृदन्तको रूपको अगाडि 'हो' क्रियाको वर्तमानकालिक रूप जोडेर वर्तमानकालिक, 'हो' एवं 'रह' धातुको समापिका रूप जोडेर भूतकालिक तथा 'रह' धातुको भविष्यत् सहायिका रूप जोडेर भविष्यत्कालिक रूप बनाइन्छ; जस्तै: चलल छी, पढने छी (वर्तमान), चलल छलहु वा रही (भूत), चलल रहब (भविष्यत्) ।

यसैगरी अनिश्चयात्मक भावअन्तर्गत सामान्य रूप निर्माण गर्नका लागि धातुको वर्तमानकालिक कृदन्तको अगाडि 'हो' सहायिका क्रियाको आशिर्लिङ्ग रूप लगाएर वर्तमानकालिक, आशिर्लिङ्गको रूपको अन्तिम 'ई' लाई 'इतहुँ' मा बदलेर भूतकालिक तथा आशिर्लिङ्गको रूप राखेर भविष्यत्कालिक रूप बनाइन्छ । जस्तै: चलैत होई (वर्तमान), चलितहुँ (भूत), चली (भविष्यत्) ।

अपूर्ण रूपको निर्माणका लागि धातुको वर्तमानकालिक कृदन्तको अगाडि 'हो' सहायिका क्रियाको आशिर्लिङ्ग रूप लगाएर वर्तमानकालिक, 'हो' धातुको निश्चयात्मक सामान्य भविष्यत् रूप अथवा 'रह' धातुको अनिश्चयात्मक सामान्य भूतकालिक रूप लगाएर भूतकालिक तथा 'रह' धातुको भूतकालिक सहायिका क्रियाको रूप लगाएर भविष्यत्कालिक रूप बनाइन्छ । जस्तै: चलैत होई; पढैत होइ (वर्तमान), चलैत होएब वा रहितहुँ; पढैत होएब वा रहितहुँ (भूत), चलैत रही ;पढैत रही (भविष्यत्) ।

पूर्ण रूप निर्माणका लागि अकर्मक क्रियाको सामान्य भूतकालिक रूप तथा सकर्मक क्रियाको सार्वकालिक कृदन्तको अगाडिको 'हो' धातुको आशिर्लिङ्ग रूप लगाएर वर्तमानकालिक, 'हो' धातुको निश्चयात्मक सामान्य भविष्यत्कालिक रूप अथवा 'रह' धातुको अनिश्चयात्मक सामान्य भूतकालिक रूप लगाएर भूतकालिक तथा 'रह' धातुको भूतकालिक सहायिका क्रियाको रूप लगाएर भविष्यत्कालिक रूप बनाइन्छ;

जस्तै: चलल होइ; पढ़ने होइ (वर्तमान), चलल होएब वा रहितहुँ; पढ़ने होएब वा रहितहुँ (भूत), चलल रही; पढ़ने रही (भविष्यत्) ।

यसरी मैथिलीमा छुट्टा-छुट्टै भावमा वाच्यार्थबोधक क्रियारूप फरक-फरक तरिकाले बनाउनु मैथिलीको आफ्नो विशेषताको साथै नेपालीसँग व्यतिरेक देखिन्छ ।

#### ४.५.२ कर्मवाच्य

यस वाच्यले वाक्यमा क्रियाको विषय कर्म हो भन्ने बुझाउँदछ । कर्मवाच्यको उद्देश्य कर्म हुने हुँदा वाक्यमा त्यसकै प्रधानता हुन्छ । यस प्रधानताका कारण क्रिया पनि कर्मकै लिङ्ग, वचन र पुरुष अनुसार रहन्छ । यस वाच्यमा कर्म नै कर्ता बन्छ र त्यसले उद्देश्यको कार्य गर्छ । कर्मवाच्य अकर्मक क्रियाबाट होइन सकर्मक क्रियाबाट बन्छ । वाच्यमा कर्ता समावेश गर्नु परेको खण्डमा त्यसलाई करण कारक (ले/बाट/द्वारा) मा राखिन्छ । कर्तृवाच्यको कर्ता लोप हुन पनि सक्छ र लोप नभए गौण भएर पनि रहन सक्छ । क्रियाको धातुमा पहिला कर्मवाच्य चिह्नक प्रत्यय 'इ' लाग्छ, त्यसपछि अन्य प्रत्यय लाग्छन् र कर्मको स्थानमा स्थापित कर्ताअनुरूप लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदरको सङ्गति रहन्छ ।

मैथिली भाषामा पनि वाक्यमा कर्मको प्रधानता हुन्छ अर्थात् क्रियाको लिङ्ग, वचन र पुरुष कर्म अनुसार नै हुन्छ, यसमा पनि वाच्यको क्रिया सकर्मक हुन्छ । यसबाट यी दुई भाषाबीचको समानता प्रष्टिन्छ । यसमा पनि नेपालीमा जस्तै वाक्यमा कर्ता समावेश गर्नुपरेको खण्डमा त्यसलाई करण कारक (सँ, एँ) मा राखिन्छ । यसमा पनि कर्तृवाच्यको कर्ता लोप हुन पनि सक्छ र लोप नभए गौण भएर पनि रहन सक्छ ।

मैथिलीमा कर्मवाच्यमा निश्चयात्मक वा अनिश्चयात्मक दुवै भावमा धातुको सामान्य भूतकालिक रूपको अगाडि 'जा' सहायक धातुको भिन्न-भिन्न रूप लगाउने गरिन्छ । कुनै-कुनै स्थानमा 'हो' अथवा 'रह' धातुको सहायता पनि लिने गरिन्छ; जुन मैथिलीको आफ्नै विशेषता हुनुका साथै यी दुईबीचको व्यतिरेक स्वतः स्पष्टिन्छ ।

रूपावलीको निर्माणमा सुविधा ल्याउनका लागि 'पढ़' धातुको विभिन्नकालिक रूप तल प्रस्तुत छ :

### निश्चयात्मक भाव

#### सामान्य रूप

##### नेपाली

##### मैथिली

(मद्वारा) पढ़िन्छ ।

(हमरासँ) पढ़ल जाइत अछि ।

(मद्वारा) पढ़ियो ।

(हमरासँ) पढ़ल गेल ।

(मद्वारा) पढ़िनेछ ।

(हमरासँ) पढ़ल जाएत ।

#### अपूर्ण रूप

(मद्वारा) पढ़िदै छ ।

(हमरासँ) पढ़ल जाइत अछि ।

(मद्वारा) पढ़िदै थियो ।

(हमरासँ) पढ़ल जाइत छल ।

(मद्वारा) पढ़िदै हुनेछ ।

(हमरासँ) पढ़ल जाएत रहत ।

#### पूर्ण रूप

(मद्वारा) पढ़िएको छ ।

(हमरासँ) पढ़ल गेल अछि ।

(मद्वारा) पढ़िएको थियो ।

(हमरासँ) पढ़ल गेल छल ।

(मद्वारा) पढ़िएको हुनेछ ।

(हमरासँ) पढ़ल गेल रहत ।

### अनिश्चयात्मक भाव

#### सामान्य रूप

##### नेपाली

##### मैथिली

(मद्वारा) पढ़िएला ।

(हमरासँ) पढ़ल जाएत ।

(मद्वारा) पढ़ियो होला ।

(हमरासँ) पढ़ल गेल होएत ।

(मद्वारा) पढ़िनेछ होला ।

(हमरासँ) पढ़ल जाएत ।

## अपूर्ण रूप

(मद्वारा) पढिँदै छ होला ।      (हमरासँ) पढल जाइत रहत ।

(मद्वारा) पढिँदै थियो होला ।      (हमरासँ) पढल जाइत छल होएत ।

(मद्वारा) पढिँदै हुनेछ होला ।      (हमरासँ) पढल जाइत रहल होएत ।

## पूर्ण रूप

(मद्वारा) पढिएको छ होला ।      (हमरासँ) पढल गेल होएत ।

(मद्वारा) पढिएको थियो होला ।      (हमरासँ) पढल गेल छल होएत ।

(मद्वारा) पढिएको हुनेछ होला ।      (हमरासँ) पढल गेल रहत होएत ।

यसरी माथिका दुवै भाषाका उदाहरणहरूलाई गहिरिएर हेर्दा कर्तृवाच्यको कर्ता लोप हुन पनि सक्ने र नहुन पनि सक्ने कुरालाई प्रष्ट पारेको छ । नेपालीमा कर्तृवाच्यको कर्तामा करण विभक्ति (द्वारा) जोडेर कर्ता गौण बनाइएको देखिन्छ भने मैथिलीमा करण विभक्ति (सँ) जोडेर कर्ता गौण बनाइएको देखिन्छ । नेपालीमा क्रियाको धातुमा पहिला कर्मवाच्य चिह्नक 'इ' प्रत्यय लागी कर्मको स्थानमा स्थापित कर्ता अनुरूप लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदरको सङ्गति भएको देखिन्छ भने मैथिलीमा पनि धातुको सामान्य भूलकालिक रूपको अगाडि 'जा' सहायक धातुका भिन्न-भिन्न रूप लगाइएको देखिन्छ; जुन नेपालीमा यस्तो बाध्यता देखिँदैन । मैथिलीमा कुनै-कुनै स्थानमा 'हो' अथवा 'रह' धातुको पनि सहायता लिइएको पाइन्छ; यसले मैथिलीको विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक प्रष्ट पारेको देखिन्छ ।

### ४.५.३ भाववाच्य

यस वाच्यले वाक्यमा क्रियाको विषय भाव हो भन्ने बुझाउँछ । भाव भनेको धातुको अर्थ (व्यापार) हो र यस वाच्यमा कर्ता वा कर्मको होइन भाव (क्रियाको अर्थ वा व्यापार) को प्रधानता हुन्छ । त्यसैले क्रियाको व्यापार र फल दुवैको असर भावमा

निहित रहन्छ । भाववाच्यमा अकर्मक क्रिया हुन्छ र त्यो प्रत्येक स्थितिमा एकवचन, पुलिङ्ग र तृतीय पुरुषमा रहन्छ । यसमा पनि कर्ता अनुपस्थित रहन्छ, अथवा पुरुषविहीन भएर करण कारकमा आउँछ ।<sup>१८</sup>

मैथिलीमा पनि भाववाच्यका लागि क्रियापदको व्यवस्था पाइन्छ । तर मैथिलीमा असरपर्नेवाला (फलभागी) संग क्रियाको पनि मेल रहेको पाइन्छ; जुन नेपालीसंगको व्यापक व्यतिरेक पक्ष हो । जस्तै :

### नेपाली

### मैथिली

#### सामान्य वर्तमान

|                        |                            |
|------------------------|----------------------------|
| मद्वारा हाँसिदैन ।     | हमरासँ नहि हँसाइत अछि ।    |
| तँद्वारा हाँसिदैन ।    | तोरासँ नहि हँसाइत छौक ।    |
| मद्वारा हिँडिन्छ ।     | हमरासँ टहलल जाइत अछि ।     |
| तपाईँद्वारा हिँडिन्छ । | अहाँसँ टहलल जाइत अछि ।     |
| तँद्वारा सुतिन्छ ।     | तोरासँ सुतल जाइत छौक ।     |
| उहाँद्वारा हिँडिन्छ ।  | हुनकासँ टहलल जाइत छैन्हि । |

#### अपूर्ण वर्तमान

|                         |                            |
|-------------------------|----------------------------|
| मद्वारा हिँडिदै छ ।     | हमरासँ टहलल जाइत अछि ।     |
| तपाईँद्वारा हिँडिदै छ । | अहाँसँ टहलल जाइत अछि ।     |
| तँद्वारा सुतिदै छ ।     | तोरासँ सुतल जाइत छौक ।     |
| उहाँद्वारा हिँडिदै छ ।  | हुनकासँ टहलल जाइत छैन्हि । |

#### पूर्ण वर्तमान

|                       |                         |
|-----------------------|-------------------------|
| मद्वारा हाँसिएको छ ।  | हमरासँ हँसल गेल अछि ।   |
| तँद्वारा हाँसिएको छ । | तोहरासँ हँसल गेल छलहु । |

<sup>१८</sup> शर्मा, मोहनराज, शब्द रचना वर्णविन्यास, वाक्यतत्त्व र अभिव्यक्ति, नवीन प्रकाशन, (का.) , २०५६, पृ, २४८ ।

तिमीद्वारा हिँडिएको छ ।

उहाँद्वारा हिँडिएको छ ।

उसद्वारा सुतिएको छ ।

तोरासँ टहलल गेल छौक ।

हुनकासँ टहलल गेल छैनहि ।

ओकरासँ सुतल गेल छैक ।

### भूतकाल

#### सामान्य भूत

मद्वारा सुतियो ।

तँद्वारा हिँडियो ।

तिमीद्वारा हाँसियो ।

उहाँद्वारा सुतियो ।

उसद्वारा हिँडियो ।

हमरासँ सुतल गेल छल ।

तोहरासँ टहलल गेलहु ।

तोरासँ हँसल गेलौक ।

हुनकासँ सुतल गेल छलैनहि ।

ओकरासँ टहलल गेल छलैक ।

#### अपूर्ण भूत

मद्वारा सुतिदै थियो ।

तँद्वारा हिँडिदै थियो ।

तिमीद्वारा हाँसिदै थियो ।

उहाँद्वारा सुतिदै थियो ।

उसद्वारा हिँडिदै थियो ।

हमरासँ सुतल जाइत छल ।

तोहरासँ टहलल जाइत छलहु ।

तोरासँ हँसल हँसल जाइत छलौक ।

हुनकासँ सुतल जाइत छलैनहि ।

ओकरासँ टहलल जाइत छलैक ।

#### पूर्ण भूत

मद्वारा सुतिएको थियो ।

तँद्वारा हिँडिएको थियो ।

तिमीद्वारा हाँसिएको थियो ।

उहाँद्वारा सुतिएको थियो ।

उसद्वारा हिँडिएको थियो ।

हमरासँ सुतल गेल छल ।

तोहरासँ टहलल गेल छलहु ।

तोरासँ हँसल गेल छलौक ।

हुनकासँ सुतल गेल छलैनहि ।

ओकरासँ टहलल गेल छलैक ।

#### सामान्य भविष्यत्

मद्वारा सुतिनेछ ।

हमरासँ सुतल जाएत ।

तँद्वारा हिँडिनेछ ।

तोहरासँ टहलल जैतहु ।

तिमीद्वारा हाँसिनेछ ।

तोरासँ हँसल जैतौक ।

उहाँद्वारा सुतिनेछ ।

हुनकासँ सुतल जैतन्हि ।

उसद्वारा हिँडिनेछ ।

ओकरासँ टहलल जैतैक, आदि ।

यसरी माथिका वाक्यहरूलाई हेर्दा नेपालीमा अकर्मक क्रिया प्रत्येक स्थितिमा एकवचन, पुलिङ्गी, तृतीय पुरुष, अनादरमा रहेको देखिन्छ भने मैथिलीमा असरपर्नेवाला (फलभागी) सँग क्रियाको मेल रहेको देखिन्छ । कर्ताको आदरअनुसार क्रियारूपावली आएको देखिन्छ । यस्तो हुनु मैथिलीको आफ्नो विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

#### ४.६ कारक

नेपाली र मैथिली भाषाका कारक व्यवस्थाका बारेमा तुलनात्मक चर्चा निम्नानुसार गरिन्छ :

कारक र विभक्ति  
नेपाली र मैथिली भाषाका कारकका रूपहरू

| कारक      | विभक्ति  | नेपाली                     | मैथिली                                          |
|-----------|----------|----------------------------|-------------------------------------------------|
|           |          | रूप (प्रत्यय)              | रूप (प्रत्यय)                                   |
| कर्ता     | प्रथमा   | ले/बाट/द्वारा              | -                                               |
| कर्म      | द्वितीया | लाई                        | केँ, रा, काँ                                    |
| करण       | तृतीया   | ले/बाट/द्वारा              | सँ/ँ(एँ)                                        |
| सम्प्रदान | चतुर्थी  | लाई/लागि/निम्ति            | केँ, क लेल, क हेतु, क लए                        |
| अपादान    | पञ्चमी   | देखि/बाट                   | सँ                                              |
| सम्बन्ध   | षष्ठी    | को/का/की,रो/रा/री,नो/ना/नी | के, क                                           |
| अधिकरण    | सप्तमी   | मा/माथि                    | मे, पर, माँझ, मध्य                              |
| सम्बोधन   | सम्बोधन  | ए/हे/ओ                     | अओ/ओ, अए/ऐ,<br>रओ/रौ/रे, गए/गे,<br>हओ/हौ, हए/हे |

### ४.६.१ कर्ता कारक

नेपाली भाषामा 'ले/बाट/द्वारा' र मैथिलीमा 'शून्य (०)' विभक्ति को रूपबाट कर्ताकारकको बोध गराइएको पाइन्छ । अर्थात् मैथिलीमा कर्ता कारकलाई बुझाउने कुनै चिह्न वा विभक्ति छैन, जुन मैथिलीको आफ्नै विशेषता पनि हो र नेपाली र मैथिलीबीचको व्यतिरेक पक्ष पनि, जस्तै :

| नेपाली                 | मैथिली                          |
|------------------------|---------------------------------|
| राम खाँदै छ ।          | राम खाइत अछि ।                  |
| रामले पुस्तक पढेको छ । | राम पुस्तक पढि गेल (चुकल) अछि । |
| मैले भात खाएँ ।        | हम भात खेलौं ।                  |
| राम डराउँछ ।           | राम डराइत अछि ।                 |

नेपालीमा कर्तृवाच्यको अकर्मक क्रियाको कर्तामा 'ले' रूप (प्रत्यय) लाग्दैन, तर सकर्मक क्रियाको कर्तामा प्रायः अनिवार्य रूपमा 'ले' विभक्ति (प्रत्यय) लगाइएको पाइन्छ भने मैथिलीमा कर्ताकारक बुझाउने कुनै चिह्न वा विभक्ति नहुनाले विभक्ति (प्रत्यय) को प्रयोग भएको देखिँदैन, जुन मैथिलीको विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक प्रमाणित भएको देखिन्छ ।

### ४.६.२ कर्म कारक

नेपाली भाषामा 'लाई' र मैथिली भाषामा 'कैँ, रा' रूपको प्रयोग गरी कर्म कारकको बोध गराइएको हुन्छ । नेपालीमा नाम-सर्वनाममा 'लाई' रूपको प्रयोग गरिन्छ भने मैथिलीमा पनि नाम-सर्वनाममा 'कैँ' तथा 'रा' रूपको प्रयोग गरिन्छ । नेपालीमा 'लाई' विभक्तिको प्रयोग सम्प्रदान कारकमा पनि गरेको पाइन्छ भने मैथिलीमा पनि 'कैँ' विभक्तिको प्रयोग सम्प्रदान कारकमा पाइन्छ । दुवै भाषामा 'लाई' र 'कैँ' रूपबाट कर्मकारकको बोध गराइएको पाइन्छ । दुवैमा कुनैबेला विभक्ति चिह्न लुप्त रहेको पनि पाइन्छ; जस्तै :

## नेपाली

राम भात खादै छ ।

हामी भाइलाई पढाउँछौं ।

मैले बुवालाई पैसा दिएँ ।

## मैथिली

राम भात खाइत अछि ।

हमसभ भाइकेँ पढ़बैत छी ।

हम बाबुकेँ पैसा देलहुँ, आदि ।

माथिका दुवै भाषाका नाम-सर्वनाममा 'लाई' तथा 'केँ' रूपको प्रयोग भएको देखिन्छ; जसले कर्मकारकको बोध गराएको पाइन्छ । कर्मकारकमा प्रयोग भएका रूप वा प्रत्यय रूपात्मक दृष्टिले समान देखिन्छन् । जसले दुवै भाषाबीचको समानता भल्किन्छ । नेपालीमा हरेक कारकमा जुनसुकै आदरसँग पनि सर्वनाम जस्ताको तस्तै रहेको र त्यससँग विभक्ति लाग्ने गरेको देखिन्छ, तर मैथिलीको अन्यपुरुष अन्तर्गत निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक सर्वनामले आदर बुझाउने क्रममा कर्ताकारकमा एउटा रूप र त्यसबाहेक कर्मकारकमा अन्य रूप भई त्यससँग विभक्ति जोडिएको रूपको प्रयोग भएको देखिन्छ, जुन नेपालीसँगको व्यतिरेक पक्ष देखिन्छ; जस्तै :

## नेपाली

यिनले/उनले/तिनले

यिनलाई/उनलाई/तिनलाई

उसलाई/त्यसलाई

उनीबाट/उसबाट

## मैथिली

ई/ओ

हिनका (आदर)

ओकरा (अनादर)

हिनकासँ (आदर)/ओकरासँ (अनादर)

यसरी माथिको उदाहरणबाट के देखिन्छ भने सामान्य आदरमा नेपालीमा सबै कारकमा सर्वनामको एउटै रूपसँग विभिन्न विभक्तिको रूपको प्रयोग भएको देखिन्छ भने मैथिलीमा कर्ताकारकमा एउटा रूप र त्यसपछि अन्यकारकमा अन्य रूपकै प्रयोग भएको देखिन्छ, जुन नेपालीसँगको व्यतिरेकी पक्ष देखिन्छ ।

### ४.६.३ करण कारक

नेपाली भाषामा 'ले, बाट, द्वारा' र मैथिलीमा 'सँ,ँ (ँँ)' रूपबाट करणकारकको बोध गराइएको पाइन्छ । नेपालीमा 'ले, बाट, द्वारा' रूप कर्ता कारकमा पनि प्रयोग गरिन्छ तर मैथिलीमा 'सँ,ँ (ँँ)' रूप कर्ता कारकमा प्रयोग गरिँदैन, अपादानमा गरिन्छ । मैथिलीमा चिह्न (ँ) ले विभक्तिको कार्य गर्नु नेपालीसँगको व्यतिरेक र मैथिलीको विशेषता देखिन्छ । उदाहरणका लागि केही वाक्यहरू तल प्रस्तुत गरिएका छन् :-

#### नेपाली

म कलमले लेख्छु ।

रामद्वारा हरि पिटियो ।

रामद्वारा रावण मारियो ।

कुराले काम चल्दैन ।

#### मैथिली

हम कलमसँ लिखैत छी ।

हरि रामसँ पिटल गेल ।

रावण रामसँ मारल गेल ।

बातँ काज नहि चलत, आदि ।

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरूमा 'कलमले (कलमसँ), रामद्वारा (रामसँ), कुराले (बातँ)' ले (साधन) करणकारकको बोध गराएको देखिन्छ । मैथिली वाक्यमा चिह्न (ँ) ले करण विभक्तिको कार्य गरेको देखिन्छ, जसले मैथिलीको विशेषता देखाउनुका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक प्रष्ट्याउँछ ।

### ४.६.४ सम्प्रदान कारक

नेपाली भाषामा 'लाई, लागि, निम्ति' र मैथिलीमा 'कँ, क लेल, क हेतु, क लए' रूप (प्रत्यय) को प्रयोग गरी सम्प्रदान कारकको बोध गराइएको देखिन्छ । नेपालीमा 'लाई' कर्म कारकमा पनि प्रयोग गरिन्छ भने मैथिलीमा पनि 'कँ' विभक्तिको प्रयोग कर्म कारकमा गरिएको देखिन्छ । नेपालीमा 'लाई' बाहेक 'लागि, निम्ति' सम्प्रदान कारकको रूपमा देखिन्छ भने मैथिली भाषामा 'कँ' बाहेक अन्य 'क लेल, क हेतु, क लए' रूप देखिन आउँछ । नेपालीका दुई रूप 'लागि, निम्ति' ले जस्तै मैथिलीमा 'क लेल, क हेतु' रूपले कार्य गर्दछ; जस्तै:

### नेपाली

भरियालाई पानी पियाऊ ।  
ब्राह्मणलाई दक्षिणा देऊ ।  
तपाईंका लागि मैले के गरिनं ।  
पढ्नका निम्ति यो काम गर्दै छु ।

### मैथिली

भरिआकेँ पानि पिआइ दिऔक ।  
ब्राह्मणकेँ दक्षिणा दियौन्ह ।  
अहाँक लेल हम की नहि कएलहुं ।  
पढ़वाक हेतु ई काज करैत छी, आदि ।

माथिका वाक्यहरूमा 'भरियालाई (भरिआकेँ), ब्राह्मणलाई (ब्राह्मणकेँ), तपाईंका लागि (अहाँक लेल), पढ्नका निम्ति (पढ़वाक हेतु)' मा 'केँ-लाई, क लेल-का लागि, क हेतु-का निम्ति' रूपले सम्प्रदान कारकको बोध गराइएको पाइन्छ साथै मैथिली भाषाको 'क लेल र क हेतु' रूपले नेपालीको 'लागि र निम्ति' रूपको कार्य गर्ने गरेको देखिन्छ ।

### ४.६.५ अपादान कारक

नेपालीमा 'बाट, देखि' र मैथिलीमा 'सँ' रूपको प्रयोग गरी अपादानकारकको बोध गराइएको देखिन्छ । नेपालीमा 'बाट' रूपको प्रयोग कर्ता र करणकारकमा पनि भएको देखिन्छ भने मैथिली भाषामा पनि 'सँ' रूपको प्रयोग करणकारकमा हुने गरेको देखिन्छ । मैथिलीमा 'सँ' रूपले नेपालीमा 'बाट, देखि' दुवै रूपले गर्ने कार्य गरेको देखिन्छ; जस्तै :-

### नेपाली

रुखबाट पात खस्यो ।  
प्वालबाट सर्प बाहिर निस्क्यो ।  
हिजोदेखि पानी पर्दै छ ।  
मेघबाट असिना खस्यो ।

### मैथिली

गाछसँ पात खसल ।  
बोहरिसँ साँप बहार भेल ।  
काल्हिसँ पानि परैत अछि ।  
मेघसँ पाथर खसल, आदि ।

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरूमा 'रुखबाट (गाछसँ), प्वालबाट (बोहरिसँ), हिजोदेखि (काल्हिसँ), मेघबाट (मेघसँ)' मा 'बाट-सँ, देखि-सँ' रूपले अपादानकारकको बोध गराइएको पाइन्छ । नेपालीको 'बाट, देखि' रूपको ठाउँमा मैथिलीमा 'सँ' रूपले

कार्य गरेको देखिन्छ, जुन मैथिलीको विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

#### ४.६.६ सम्बन्ध कारक

नेपालीमा ‘को/का /की, रो/रा/री, नो/ना/नी’ र मैथिलीमा के, क (गद्यमा) र केर (पद्यमा) रूपको प्रयोग गरी सम्बन्ध कारकको बोध गराइएको पाइन्छ । नेपालीमा सम्बन्ध कारकका रूप वा ‘को/का/की, रो/रा/री, नो/ना/नी’ रूपको प्रयोग अन्य कारकमा नभए जस्तै मैथिलीमा पनि सम्बन्ध कारकका रूप वा ‘क’ र ‘के’ रूपको प्रयोग अन्यकारकमा भएको पाइँदैन । नेपालीमा पुलिङ्ग एकवचन सम्बन्ध पदमा ‘को, रो, नो’ रूप र स्त्रीलिङ्ग एकवचनमा ‘की, री, नी’ रूप र दुवै (पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग) का बहुवचनमा ‘का, रा, ना’ रूपको प्रयोग हुन्छ भने मैथिलीमा लिङ्ग, वचन छुट्याउने गरी रूपको प्रयोग हुने गरेको पाइँदैनन् अर्थात् लिङ्ग, वचनका रूप प्रयोग नभई दुवै लिङ्गमा समान वा लिङ्गरहित रूपको प्रयोग गरेको पाइन्छ । मैथिलीमा गद्यमा ‘क’ रूपको प्रयोग गरेको पाइन्छ भने पद्यमा ‘केर’ रूपको प्रयोग गरिएको पाइन्छ; जुन मैथिलीको आफ्नै विशेषता हुनुका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेकी पक्ष स्वतः प्रष्टिन्छ ।

नेपालीमा ‘म, हामी, तँ, तिमी’ सार्वनामिक पदमा ‘र’ रूप वा ‘रो’ को प्रयोग गरी ‘मेरो, हाम्रो, तेरो, तिम्रो’ आदिबाट सम्बन्ध स्थापित गराउने गरिन्छ भने मैथिलीमा ‘हम’ मा ‘र’ रूप जोडेर ‘हमर’ बनाइएको पाइन्छ भने ‘हाम्रो’ बनाउन मैथिलीमा बहुवचन रूपमा ‘क’ जोडेको पाइन्छ । त्यसरी नै ‘मेरो’ बनाउन सर्वनाममा ‘र’ जोडेको देखिन्छ; जस्तै:-

| नेपाली               | मैथिली                  |
|----------------------|-------------------------|
| यो रामको पुस्तक हो । | ई रामक पुस्तक थीक ।     |
| यो मेरो कलम हो ।     | ई हमर कलम थीक ।         |
| यो हाम्रो घर हो ।    | ई हमरासभक घर थीक, आदि । |

माथिका वाक्यहरूमा ‘रामको-रामक, मेरो-हमर, हाम्रो-हमरासभक’ मा ‘को, रो’ रूपले नेपालीमा तथा ‘क, र’ रूपले मैथिलीमा सम्बन्ध कारकका रूपमा निजत्व वा स्वामित्वलाई समेत सङ्केत गरेको देखिन्छ । नेपालीमा जस्तै मैथिलीमा पनि सम्बन्ध कारकलाई कारकअन्तर्गत दर्दैनन्, किनभने यसको प्रत्यक्ष सम्बन्ध क्रियासँग रहेको पाइँदैन ।

#### ४.६.७ अधिकरण कारक

नेपाली र मैथिली दुवै भाषामा कालाधिकरण र स्थानाधिकरण पाइन्छ । दुवै भाषामा कालाधिकरण तथा स्थानाधिकरणमा कारक रूप वा प्रत्यय लगाइएको पाइन्छ । नेपालीमा ‘मा, माथि’ र मैथिलीमा ‘मे, पर, माझ, मध्य’ रूप लगाई अधिकरण कारकको बोध गराइएको पाइन्छ । दुवै भाषामा यो पक्ष समान देखिन्छ । नेपालीमा जस्तै मैथिलीमा पनि ‘मे, पर, माझ, मध्य’ रूपको प्रयोग अधिकरणमा मात्रै भएको देखिन्छ । जसबाट दुवै कारकमा समानता देखिन्छ । मैथिलीको ‘मे, पर’, रूपले नेपालीको ‘मा, माथि’ जस्तै कार्य गर्दछ । मैथिलीको ‘माँझ, मध्य’ रूपको प्रयोग नेपालीमा नदेखिनुले दुईको व्यतिरेक देखिन्छ; जस्तै:

| नेपाली                        | मैथिली                             |
|-------------------------------|------------------------------------|
| म आज घरमा बस्छु ।             | हम आइ घरमे रहब ।                   |
| म विद्यालयमा पढ्छु ।          | हम विद्यालयमे पढैत छी ।            |
| टेबुलमाथि घडी छ ।             | टेबुलपर घडी अछि ।                  |
| साउन महिनामा धेरै पानी पर्छ । | साओन महिनामे बहुते पानि परैत अछि । |

माथिका दुवै भाषाका वाक्यहरूमा प्रयुक्त अधिकरण कारकबोधक रूप वा प्रत्यय ‘घरमा-घरमे (मा-मे)’, विद्यालयमा-विद्यालयमे (मा-मे)’, टेबुलमाथि-टेबुलपर (माथि-पर)’ ले अधिकरण कारकको बोध गराएको देखिन्छ, तर मैथिलीमा जस्तो ‘मध्य, माझ’ रूपको प्रयोग नेपालीमा देखिएको पाइँदैन, जसबाट यो मैथिलीको विशेषताका साथै नेपालीसँगको व्यतिरेक प्रष्टिन्छ ।

## ४.७ सारांश

यस परिच्छेदमा नेपाली र मैथिली भाषाका काल, पक्ष, भाव, वाच्य र कारकसम्बन्धी कोटिको अध्ययन गरिएको छ । कालको तुलनात्मक चर्चा गर्ने क्रममा दुवै भाषामा भूत र अभूत (वर्तमान र भविष्यत्) गरी दुई किसिमका काल देखिन्छन् । नेपालीमा क्रियाको भूतकालिक रूपको रचना 'यो, यौ, यौँ, ई, इन्, इस्, ए, एँ' प्रत्ययबाट गरिएको पाइन्छ । लिङ्ग, वचन, पुरुष, आदर आदिका भेदले यी प्रत्ययहरूको विविध रूपको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । मैथिलीमा धातुमा आधार प्रत्यय 'ल' सँग 'ई, हुँ, हिँ, एँ, ह, क, Ø(शुन्य), नि, आह' जोडेर भूतकालिक क्रिया रूपको रचना गरेको पाइन्छ ।

त्यसैगरी नेपालीमा वर्तमानकालिक रूपको रचना 'छु, छौँ, छस्, छौ, छ्यौ, छेस्, छ, छे, छन्, छिन्, नुहुन्छ' जस्ता प्रत्ययबाट गरिएको पाइन्छ साथै लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर आदिका भेदले यी विविध रूपहरूको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । मैथिलीमा एउटा मूल धातु र अर्को सहायक धातु 'अछ' जोडेर वर्तमानकालिक क्रियापद बनाइएको पाइन्छ । यसमा मूल धातु सधैं असमापिकाको रूपमा अर्थात् वर्तमान कृदन्त (इत) को रूपमा रहन्छ साथै त्यसको अगाडि 'अछ' धातु आफ्नो पूर्ण रूपावलीका साथ आएको पाइन्छ ।

नेपालीमा भविष्यत् परिवेश जनाउन क्रियापदले छुट्टै रूपायनिक विशेषता लिंदैनन् तापनि भविष्यत्कालका लागि 'ने' प्रत्ययान्त कृदन्तीय क्रियाका साथ 'छ' का रूपहरूको योगद्वारा बनेका प्रयोगहरू पनि आउँछन् तर यी भविष्यत्का लागि विभेदक हुंदैनन्, पूरक वा वैकल्पिक भने हुन सक्छन्; यस्तो अवस्था वर्तमान प्रयोगबाट भविष्यत्लाई अलग्याउन गरिएको सचेत प्रयासका रूपमा देखापर्छ । मैथिलीमा धातुमा आधार प्रत्यय 'ब, त' सँग 'Ø (शुन्य), ओँ, हिँ, एँ, ह, आह' रूप जोडेर भविष्यत्कालिक क्रियारूपको रचना गरेको पाइन्छ ।

पक्षको तुलनात्मक चर्चा गर्दा नेपालीमा क्रियाको कार्यको असिद्ध र सिद्ध अवस्था जनाउने आधारमा चार प्रकार (अपूर्ण, पूर्ण, अभ्यस्त र अज्ञात) का देखिन्छन् भने मैथिलीमा सामान्य, सन्दिग्ध, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, हेतुमद्, सम्भाव्य गरी सात प्रकारका पक्षहरू देखिन्छन् तर प्रस्तुत शोधपत्रमा अपूर्ण, पूर्ण, अभ्यस्त र अज्ञात अनुसार चिनाउने प्रयास गरिएको छ ।

नेपालीमा कृदन्तीय 'तै/दै (तो/दो)' प्रत्ययका साथमा वर्तमान- कालिक तथा भूतकालिक सहायक क्रियाको योगले वर्तमान र भूतकालका क्रियाका कार्यको अपूर्णता/निरन्तरता व्यक्त भएको पाइन्छ भने मैथिलीभाषाका वाक्यमा वर्तमानकालको अपूर्ण पक्ष अन्तर्गतको क्रियाको मूल धातु 'इत' र सहायक धातु 'अछ' मा 'ई, हिँ/एँ, ह, ए, इ, थि' रूपको योग हुने गरेको तथा भूतकालको अपूर्ण पक्ष अन्तर्गतको क्रियाको धातुमा कृदन्तीय 'इत' प्रत्यय र आधार प्रत्यय 'ल' सँग 'हुँ, हिँ, एँ, ह, क, Ø(शुन्य), नि, आह(अकर्मकमा)' रूपको योग हुने गरेको पाइन्छ, जसको सहायताले क्रियाको कार्यको अपूर्णता/निरन्तरता व्यक्त भएको देखिन्छ ।

त्यसरी नै नेपालीमा कृदन्तीय 'एको/एका/एकी' प्रत्ययका सहायताले वर्तमान र भूतकालका क्रियाका कार्यको पूर्णता व्यक्त भएको पाइन्छ र कृदन्तीय क्रियाका साथमा वर्तमानकालिक 'छ' तथा भूतकालिक 'थि' सहायक क्रियाको योग हुने गरेको पाइन्छ भने मैथिली भाषामा वर्तमानकालको पूर्ण पक्ष अन्तर्गतको कृदन्तीय क्रियाका साथमा आधार प्रत्यय 'छ' मा 'ई, हिँ, एँ, ह, ए, इ, थि' रूपको योग हुने गरेको तथा भूतकालको पूर्ण पक्ष अन्तर्गतको कृदन्तीय क्रियासँग आधार प्रत्यय 'छल' मा 'हुँ, हिँ, एँ, ह, क, नि, आह (अकर्मकमा)' रूपको योग हुने गरेको पाइन्छ, जसको सहायताले कार्यको पूर्णता व्यक्त भएको पाइन्छ । नेपालीमा कृदन्तीय 'एको/एका/एकी' प्रत्ययहरू कर्ताको लिङ्ग, वचन, पुरुष, आदर आदि अनुसार धातुमा प्रयोग भएको देखिन्छ भने मैथिलीमा यसको अभाव देखिन्छ । अभ्यस्त पक्षको निरूपण गर्दा नेपाली भाषामा धातुमा 'थें, थ्यौँ, थिस्, थ्यौ, नुहुन्थ्यो, थ्यो, थी, थे, थिन्' आदि जस्ता प्रत्यय जोडेर अभ्यस्त पक्षको बोध गराएको देखिन्छ भने मैथिलीमा यसको अभाव भएकाले यो पक्ष जनाउने छुट्टै प्रत्यय(रूप) देखिँदैन; अपूर्ण भूतसँग पूरै मेल खाने क्रियारूप देखिन्छ ।

नेपालीमा धातुमा कृदन्तीय 'ए' सँग 'छ' का रूप जोडिएर बनेका क्रियारूपले अज्ञात भूतको बोध गराएको पाइन्छ भने मैथिलीमा अज्ञात पक्ष नहुनाले पूर्ण पक्षको भैं क्रियारूपले अज्ञात पक्षको अर्थलाई बुझाएको देखिन्छ ।

भावको सम्बन्धमा चर्चा गर्दा दुवै भाषामा तीन किसिमका भाव देखिन्छन्; सामान्यार्थ, विध्यर्थ (इच्छार्थ र आज्ञार्थ) र अनिश्चयार्थ (सम्भावनार्थ र सङ्केतार्थ) । नेपाली तथा मैथिली दुवैमा सामान्यार्थ भाव बुझाउने क्रियारूप पाइन्छन् । यो भाव बुझाउने क्रिया करण तथा अकरण दुवैमा देखिन्छन् । नेपालीमा समापिका क्रियाको सुरु, बीच तथा अन्त्यमा 'न' जोडेर तथा मैथिलीमा समापिका क्रियाको सुरुमा मात्र 'नहि' जोडेर नकारात्मक निश्चित अर्थ प्रदान गर्ने अकरण क्रियारूपको निर्माण गरिएको पाइन्छ । नेपालीमा सार्वनामिक प्रश्नसूचकका रूपमा आउने 'के, को, किन, कसले, कसको, कहिले, कहाँ, कुन, कसरी' आदि जस्ता प्रश्नसूचक शब्दहरू प्रयुक्त भएजस्तै मैथिलीमा पनि आफ्नै किसिमका यस्ता प्रश्नसूचकका रूपमा 'कि, केकर, किनकर, के, कखन, कतए' आदि प्रश्नार्थक सार्वनामिक शब्दहरू प्रयुक्त भई वा क्रियापदलाई पनि प्रश्नार्थक बनाई भाव प्रकट गर्ने गरेको पाइन्छ । नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषामा वर्तमान, भूत, भविष्यत् तीनै कालको निश्चितताका साथ भावबोध गरेको देखिन्छ ।

यसैगरी नेपालीमा क्रियाका धातुमा 'ऊँ, औँ, एस्, ए, ओस्, ऊन्' प्रत्यय लागेर इच्छार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ भने मैथिलीमा क्रियाका धातुमा 'ई, हिँ, ह, य, थि' जस्ता पाँचौँ लकार बुझाउने प्रत्यय लागेर इच्छार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ । मैथिलीमा आशीर्वाद, शुभकामना, श्राप आदिमा चौथो लकार अर्थात् आज्ञार्थ रूपावली प्रयोग भएको देखिन्छ, जब कि नेपालीमा इच्छार्थ भावबोधक क्रिया रूपावलीकै प्रयोग भएको देखिन्छ जसबाट यी दुई भाषाबीचको व्यतिरेक देखिन्छ साथै मैथिलीको विशेषता पनि । आज्ञार्थअन्तर्गत नेपाली भाषामा क्रियाका धातुमा 'Ø (शुन्य), अ/नू, नुहोस्, ई' प्रत्यय लागेर आज्ञार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ भने मैथिली भाषामा क्रियाका धातुमा 'ऊ, Ø (शुन्य)/हि, ह, ओ, थु' जस्ता चौथो लकार बुझाउने प्रत्यय

लागेर आज्ञार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ । सुविधा अनुसार मैथिलीमा भविष्यत्कालिक आज्ञामा सातौँ लकार (निम्न श्रेणीमा 'इहिँ/इहे' तथा उच्च श्रेणीमा 'इहह') प्रयोग भएको पाइन्छ । मैथिलीमा खास गरेर निषेधात्मक आज्ञामा चौथो लकारसँगै तेस्रो लकारको पनि व्यवहार भएको पाइन्छ । नेपालीमा द्वितीय पुरुषमा मात्र आज्ञार्थ भाव बुझाउने रूपायक प्रत्ययहरू देखिन्छ भने मैथिलीमा तीनै पुरुष अर्थात् उत्तम, मध्यम, अन्यपुरुषमा आज्ञार्थ भाव बुझाउने रूपायक प्रत्ययहरू देखिन्छन् । मैथिलीमा उत्तम पुरुषको उच्च श्रेणीको कर्तासँग मात्र तथा मध्यम र अन्यपुरुषको निम्न तथा उच्च दुवै श्रेणीको कर्तासँग प्रयोग हुने रूपायक प्रत्यय देखिन्छ । नेपालीमा वचनअनुसार छुट्टै रूपायक प्रत्ययको प्रयोग भएको पनि पाइन्छ तर मैथिलीमा यसको अभाव देखिन्छ ।

अनिश्चयार्थको सम्बन्धमा चर्चा गर्दा सम्भावनार्थ र सङ्केतार्थ भाव प्रकट गर्ने क्रियारूप दुवै भाषामा रहेको पाइन्छ । नेपालीमा क्रियाका धातुमा 'ऊँला, औँला, लास्/लिस्, औला/औली, ला/ली, लान्/लिन्' प्रत्यय लागेर सम्भावनार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ भने मैथिलीमा क्रियाका धातुमा आधार प्रत्यय 'ब, त' सँग 'Ø (शुन्य), हिँ/एँ, ह, आह' प्रत्यय लागेर सम्भावनार्थ भाव बोध भएको पाइन्छ । मैथिलीमा भविष्यत्कालिक तथा सम्भावनार्थ क्रियारूप एउटै प्रयोग भएको पाइन्छ । मैथिलीमा जब क्रियाको निष्पत्ति वक्ताको अनुमानको विषय हुन्छ, तब 'हो' धातुको प्रयोग गरिएको पनि पाइन्छ । मूल धातु यथास्थिति वर्तमान कृदन्त वा भूत कृदन्तका रूपमा रहन्छ भने अनुप्रयुक्त धातुमा तेस्रो वा पाँचौँ लकार हुन्छ । नेपालीमा असमापिका र समापिका क्रियाका संयुक्त कार्यबाट सङ्केतार्थको बोध भएको देखिन्छ भने मैथिलीमा समापिका क्रियाले कार्यको निश्चितता नबताई त्यसको सम्भावना अथवा अर्को कार्यमाथि त्यसको निर्भरता बुझाएको पाइन्छ । नेपालीमा जस्तो मैथिलीमा असमापिकाको स्थिति देखा पर्दैन ।

वाच्यको चर्चा गर्ने सन्दर्भमा नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषामा कर्तृ, कर्म, भाववाच्य गरी तीन किसिमका वाच्य देखिन्छन् ।

नेपाली भाषाका वाक्यहरूमा कर्ता र क्रियापदका बीच मेल भई कर्ताअनुसार क्रियापदको लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदर अनुरूपको सङ्गति रहने गरेको देखिन्छ भने मैथिलीमा वाक्यहरूमा पनि कर्ता र क्रियापदका बीच मेल (वाक्यमा कर्ताको प्रधानता) भएको देखिन्छ। यसमा पनि कर्ताको पुरुष, श्रेणी (सामाजिक स्तर), लिङ्ग, आदि अनुसार क्रिया निर्धारित भएको देखिन्छ। मैथिलीमा निश्चयात्मक तथा अनिश्चयात्मक दुवै भावमा कर्तृवाच्य व्यक्त भएको पाइन्छ। निश्चयात्मक भावअन्तर्गत सामान्य वर्तमानको रूपनिर्माण गर्नका लागि वर्तमानकालिक कृदन्तको अगाडि 'हो' सहायिका क्रियाको वर्तमानकालिक रूप लगाईन्छ तथा सामान्यभूत अथवा सामान्य भविष्यत्कालिक रूप बनाउनका लागि धातुको मौलिक विकारमात्र आवश्यक भएको देखिन्छ। त्यसैगरी अपूर्ण रूपको निर्माण गर्नका लागि वर्तमानकालिक कृदन्त अगाडि 'हो' सहायिका क्रियाको वर्तमानकालिक रूप जोडेर वर्तमानकालिक, 'हो' एवं 'रह' धातुको समापिका रूप जोडेर भूतकालिक तथा 'रह' धातुको सहायिका रूप जोडेर भविष्यत्कालिक रूप बनाइएको पाइन्छ। त्यसरी नै पूर्ण रूप निर्माण गर्नका लागि अकर्मक क्रियाको सामान्य भूतकालिक रूप तथा सकर्मक क्रियाको सार्वकालिक कृदन्त रूपको अगाडि 'हो' क्रियाको वर्तमानकालिक रूप जोडेर वर्तमानकालिक, 'हो' एवम् 'रह' धातुको समापिका रूप जोडेर भूतकालिक तथा 'रह' धातुको भविष्यत् सहायिका रूप जोडेर भविष्यत्कालिक रूप बनाइएको पाइन्छ।

यसरी नै अनिश्चयात्मक भाव अन्तर्गत सामान्य रूप निर्माण गर्नका लागि धातुको वर्तमानकालिक कृदन्तको अगाडि 'हो' सहायिका क्रियाको आशीर्लिङ्ग रूप लगाएर वर्तमानकालिक, आशीर्लिङ्ग रूपको अन्तिम 'ई' लाई 'इतहुँ' मा बदलेर भूतकालिक तथा आशीर्लिङ्गको रूप राखेर भविष्यत्कालिक रूप बनाइएको पाइन्छ। अपूर्ण रूपको निर्माणको लागि धातुको वर्तमानकालिक कृदन्तको अगाडि 'हो' सहायिका क्रियाको आशीर्लिङ्गरूप लगाएर वर्तमानकालिक, 'हो' धातुको निश्चयात्मक सामान्य भविष्यत् रूप अथवा 'रह' धातुको अनिश्चयात्मक सामान्य भूतकालिक रूप लगाएर भूतकालिक तथा 'रह' धातुको भूतकालिक सहायिका क्रियाको रूप लगाएर भविष्यत्कालिक रूप बनाइएको पाइन्छ। यसरी नै पूर्ण रूप निर्माणको लागि अकर्मक

क्रियाको सामान्य भूतकालिक रूप अथवा सकर्मक क्रियाको सार्वकालिक कृदन्तको अगाडि 'हो' धातुको आशिर्लिङ्ग रूप लगाएर वर्तमानकालिक, 'हो' धातुको निश्चयात्मक सामान्य भविष्यत्कालिक रूप अथवा 'रह' धातुको अनिश्चयात्मक सामान्य भूतकालिक सहायिका क्रियाको रूप लगाएर भविष्यत्कालिक रूप बनाइएको पाइन्छ । यसरी मैथिलीमा छुट्टा-छुट्टै भावमा वाच्यार्थबोधक क्रियारूप फरक-फरक तरिकाले बनाउनु मैथिलीको आफ्नो विशेषता देखिन्छ ।

कर्मवाच्यको सन्दर्भमा चर्चा गर्दा नेपालीमा कर्मवाच्यले क्रियाको विषय कर्म हो भन्ने बुझाउँदछ । कर्मवाच्यको उद्देश्य कर्म हुने हुँदा वाक्यमा त्यसकै प्रधानता हुन्छ । यस प्रधानताका कारण क्रिया पनि कर्मकै लिङ्ग, वचन र पुरुष अनुसार रहेको पाइन्छ । यस वाच्यमा कर्म नै कर्ता बनेको र त्यसले उद्देश्यको कार्य गरेको पाइन्छ । कर्मवाच्य अकर्मक क्रियाबाट होइन, सकर्मक क्रियाबाट बनेको पाइन्छ । वाच्यमा कर्ता समावेश गर्नु परेको खण्डमा त्यसलाई करण कारक (ले/बाट/द्वारा) मा राखिएको पाइन्छ । कर्तृवाच्यको कर्ता लोप भएको पनि पाइन्छ र गौण भएर रहेको पनि पाइन्छ । क्रियाको धातुमा पहिला कर्मवाच्य चिह्नक प्रत्यय 'इ' लागेपछि मात्र अन्य प्रत्ययहरू लागेको पाइन्छ र कर्मको स्थानमा स्थापित कर्ता अनुरूप लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदरको सङ्गति रहेको पाइन्छ ।

मैथिली भाषामा पनि वाक्यमा कर्मको प्रधानता पाइन्छ अर्थात् क्रियाको लिङ्ग, वचन र पुरुष कर्म अनुसार नै भएको पाइन्छ । यसमा पनि वाच्यको क्रिया सकर्मक भएको पाइन्छ । वाक्यमा कर्ता समावेश गर्नु परेको खण्डमा त्यसलाई करण कारक (सँ, एँ ) मा राखिएको पाइन्छ । यसमा पनि कर्तृवाच्यको कर्ता लोप भएको पनि पाइन्छ र गौण भएर रहेको पनि पाइन्छ । मैथिलीमा कर्मवाच्यमा निश्चयात्मक वा अनिश्चयात्मक दुवै भावमा धातुको सामान्य भूतकालिक रूपको अगाडि 'जा' सहायक धातुको भिन्न-भिन्न रूप लगाउने गरेको पाइन्छ । कुनै कुनै स्थानमा 'हो' अथवा 'रह' धातुको सहायता पनि लिने गरिएको पाइन्छ ।

भाववाच्यको सन्दर्भमा चर्चा गर्दा नेपालीमा भाववाच्यमा अकर्मक क्रिया रहेको पाइन्छ अर्थात् कर्तृवाच्यको क्रिया अकर्मक हुँदा भाववाच्यमा परिवर्तन भएको पाइन्छ । यस वाच्यमा क्रिया प्रत्येक स्थितिमा एकवचन, पुलिङ्गी, तृतीय पुरुष र अनादरमा रहेको पाइन्छ । यसमा पनि कर्ता अनुपस्थित तथा पुरुषविहीन भएर करण कारकमा आएको पाइन्छ । नेपालीमा क्रियाको अर्थ क्रियामा सीमित रहन्छ, तर मैथिलीमा असरपर्नेवाला (फलभागी) सँग पनि क्रियाको मेल भएको पाइन्छ, जसले नेपालीसँगको व्यतिरेक देखाउँछ ।

कारकको सन्दर्भमा चर्चा गर्दा दुवै भाषामा लगभग कारक व्यवस्था समान भएको पाइन्छ । नेपाली भाषामा 'ले/बाट/द्वारा' र मैथिलीमा 'शुन्य (Ø)' विभक्तिको रूपबाट कर्ता कारकको बोध गराइएको पाइन्छ । नेपालीमा कर्तृवाच्यको अकर्मक क्रियाको कर्तामा 'ले' रूप (प्रत्यय) लागेको पाइँदैन, तर सकर्मक क्रियामा कर्तामा प्रायः अनिवार्य रूपमा 'ले' विभक्ति (प्रत्यय) लागेको पाइन्छ, भने मैथिलीमा कर्ताकारक बुझाउने कुनै चिह्न वा विभक्ति नहुनाले विभक्ति (प्रत्यय) को प्रयोग भएको देखिँदैन । कर्मकारकअन्तर्गत नेपाली भाषामा 'लाई' र मैथिली भाषामा 'कैँ, रा' रूपको प्रयोग गरी कर्मकारकको बोध गराइएको हुन्छ । नेपालीमा नाम-सर्वनाममा 'लाई' रूपको प्रयोग गरिएको पाइन्छ, भने मैथिलीमा पनि नाम-सर्वनाममा 'कैँ' तथा 'रा' रूपको प्रयोग गरिन्छ । नेपालीमा 'लाई' विभक्तिको प्रयोग सम्प्रदान कारकमा पनि गरेको पाइन्छ, भने मैथिलीमा पनि 'कैँ' विभक्तिको प्रयोग सम्प्रदान कारकमा पाइन्छ । दुवै भाषामा 'लाई' र 'कैँ' रूपबाट कर्म कारकको बोध गराइएको पाइन्छ । नेपाली भाषामा 'ले/बाट/द्वारा' र मैथिलीमा 'सँ, ~ (एँ)' रूपबाट करणकारकको बोध गराइएको पाइन्छ । नेपालीमा 'ले/बाट/द्वारा' रूप कर्ता कारकमा पनि प्रयोग गरिएको पाइन्छ, तर मैथिलीमा 'सँ' रूप कर्ता कारकमा प्रयोग गरिएको पाइँदैन; अपादान कारकमा प्रयोग गरिएको पाइन्छ । मैथिलीमा चिह्न (~) ले विभक्तिको कार्य गरेको पाइन्छ । त्यसरी नै नेपाली भाषामा 'लाई/लागि/निम्ति' मैथिली भाषामा 'कैँ, क लेल, क हेतु, क लए' रूप (प्रत्यय) को प्रयोग गरी सम्प्रदान कारकको बोध गराइएको देखिन्छ । नेपालीको 'लाई' तथा मैथिलीको 'कैँ' विभक्तिको प्रयोग कर्म कारकमा पनि गरिएको

पाइन्छ । नेपालीका दुई रूप 'लागि,निम्ति' ले जस्तै मैथिलीमा 'क लेल, क हेतु' रूपले कार्य गरेको देखिन्छ । अपादान कारकअन्तर्गत नेपालीमा 'बाट, देखि' र मैथिलीमा 'सँ' रूपको प्रयोग गरी अपादान कारकको बोध गराइएको देखिन्छ । नेपालीको 'बाट' रूपको प्रयोग कर्ता र करण कारकमा पनि भएको देखिन्छ भने मैथिली भाषाको 'सँ' रूपको प्रयोग करण कारकमा हुने गरेको देखिन्छ । मैथिलीको 'सँ' रूपले नेपालीको 'देखि, बाट' दुवै रूपले गर्ने कार्य गरेको देखिन्छ । नेपालीमा 'को/ का/की, रो/रा/री, नो/ना/नी' र मैथिलीमा 'के,क(गद्यमा) र केर (पद्यमा)' रूपको प्रयोग गरी सम्बन्ध कारकको बोध गराइएको पाइन्छ । नेपालीमा सम्बन्ध कारकको रूपको प्रयोग अन्य कारकमा नभए जस्तै मैथिलीमा पनि सम्बन्ध कारकका रूपको प्रयोग अन्य कारकमा भएको पाइँदैन । नेपालीमा पुलिङ्ग एकवचन सम्बन्ध पदमा 'को, रो, नो'रूप र स्त्रीलिङ्ग एकवचनमा 'की, री, नी' रूप र दुवै (स्त्रीलिङ्ग र पुलिङ्ग) का बहुवचनमा 'का, रा, ना' रूपको प्रयोग भएको पाइन्छ भने मैथिलीमा लिङ्ग, वचन छुट्याउने गरी रूपको प्रयोग हुने गरेको पाइँदैन । मैथिलीमा गद्यमा 'क' रूपको प्रयोग गरेको पाइन्छ भने पद्यमा 'केर' रूपको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । त्यसैगरी नेपालीमा 'मा/माथि' र मैथिलीमा 'मे, पर, माझ, मध्य' रूप लगाई अधिकरण कारकको बोध गराइएको पाइन्छ । नेपालीमा जस्तै मैथिलीमा पनि सप्तमी विभक्तिको प्रयोग अधिकरण कारकमा मात्रै भएको पाइन्छ । मैथिलीको 'मे, पर' रूपले नेपालीको 'मा, माथि' जस्तै कार्य गरेको देखिन्छ ।

# पाँचौँ परिच्छेद

## उपसंहार

### ५.१ उपसंहार

नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिहरूको तुलनात्मक अध्ययन गर्ने उद्देश्यले गरिएको प्रस्तुत शोधकार्यमा क्षेत्रीय र पुस्तकालयीय दुवै विधिको उपयोग गरिएको छ । पाँच परिच्छेदमा विभाजित यस शोधकार्यका प्रत्येक परिच्छेदको सारांश यस प्रकार रहेको छ ।

पहिलो परिच्छेदमा शोधकार्यको परिचय दिइएको छ । यसमा शीर्षक उपस्थापन, प्रयोजन, समस्याकथन, अध्ययनको उद्देश्य, पूर्वकार्यको समीक्षा, शोधकार्यको औचित्य, शोधविधि र शोधपत्रको रूपरेखामाथि प्रकाश पारिएको छ ।

दोस्रो परिच्छेदमा नेपाली र मैथिली भाषामा व्याकरणिक कोटिको अध्ययन परम्पराअन्तर्गत व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत गर्दै स्वदेशी तथा विदेशी विद्वान्द्वारा गरिएको नेपाली तथा मैथिलीको व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी अध्ययनलाई प्रस्तुत गरिएको छ साथै उक्त अध्ययनको सारांश पनि दिइएको छ ।

तेस्रो परिच्छेदमा नेपाली र मैथिली भाषाका व्याकरणिक कोटिसम्बन्धी लिङ्ग, वचन, पुरुष र आदरको वैज्ञानिक पद्धतिअनुसार व्याकरणका कोटिसँग सम्बद्ध पक्षहरूको निरूपण गरी रूपतात्त्विक विश्लेषण गरिएको छ ।

) व्याकरणिक दृष्टिले लिङ्गलाई पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग गरी दुई प्रकारको मानिएको छ र दुवै भाषामा नाम, विशेषण वा मानवीय र मानवेतरका रूपमा लिङ्गभेद देखिन्छ । मैथिलीमा अन्यपुरुषमा बाहेक अरु पुरुषमा लिङ्गभेद नछुट्टिने देखिन्छ । वाक्यात्मक संरचनामा आएका कर्ता र क्रियाले नेपालीमा समान रूपगत अभिलक्षण देखाउन सक्नु तर मैथिलीमा नसक्नुले नेपालीसँगको व्यतिरेक देखिन्छ ।

) वचन व्यवस्थाको निरूपण गर्दा दुवै भाषामा एकवचन र बहुवचन पाइएका छन् । नेपाली भाषामा नाम, सर्वनाम, विशेषण र क्रियामा वचनभेद गरिने प्रक्रिया पाइएको छ भने मैथिलीमा वचनभेद देखिएको छैन; वचनभेद देखाउनका लागि मानवीय एकवचनमा 'लोकनि' तथा अप्राणिवाचकमा 'सभ' जोडिएको देखिन्छ । नेपालीमा वचन भिन्नताका कारण शब्दको रूपमा परिवर्तन आएको देखिन्छ तर मैथिलीमा देखिँदैन जसबाट यी दुई भाषामा व्यतिरेक देखिएको छ ।

) पुरुष व्यवस्थाको निरूपण गर्दा नेपाली र मैथिली दुवै भाषामा तीन किसिमका पुरुष भएको पाइन्छ - प्रथम, द्वितीय र तृतीय पुरुष । पुरुष मूलतः सर्वनामको व्याकरणिक अभिलक्षण भए तापनि यसले नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषामा क्रियापदको रूपलाई समेत प्रभावित पारेको छ ।

) नेपाली तथा मैथिलीमा विभिन्न व्यक्ति वा अवस्था अनुरूप विभिन्न आदरशब्द वा पुरुषको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । आदर मूलतः श्रोता (द्वितीय पुरुष) र अन्य सन्दर्भ (तृतीय पुरुष) मा व्यक्त भएको पाइन्छ । यसका लागि श्रोतासन्दर्भमा आदरार्थी सर्वनामको र अन्य सन्दर्भमा चाहिँ सर्वनामका साथै आदरसूचक नामको प्रयोग हुन सक्ने देखिन्छ । नेपालीमा दरवारी (उच्चतम) आदरार्थी र उच्च आदरार्थीको क्रियामा लिङ्सङ्गति देखिँदैन तर मध्यम र सामान्य -निम्न) आदरार्थीको क्रियामा देखिन्छ भने मैथिलीमा उच्चतम, उच्च, मध्यम, आदरार्थीका क्रियामा लिङ्सङ्गति देखिन्छ तर सामान्य आदरार्थीको क्रियामा लिङ्सङ्गति देखिँदैन, जुन नेपालीसँग व्यतिरेक देखिन्छ । त्यसैगरी मैथिलीमा वक्ताका प्रभावले आदरलाई प्रभावित पारिरहेको देखिन्छ, जुन मैथिलीको विशेषता हो ।

चौथो परिच्छेदमा नेपाली र मैथिली भाषाका काल, पक्ष, भाव, वाच्य र कारकसम्बन्धी कोटिको अध्ययन गरिएको छ ।

) कालको तुलनात्मक चर्चा गर्ने क्रममा दुवै भाषामा भूत र अभूत (वर्तमान र भविष्यत्) गरी दुई किसिमका काल देखिन्छन् । यी दुई कालिक क्रियाहरूमा प्रत्यय रूप लागेको पाइन्छ । मैथिलीमा कर्ताको श्रेणीअनुसार धातुमा जोडिने प्रत्यय र रूप फरक-फरक देखिएका छन् ।

) पक्षको तुलनात्मक चर्चा गर्दा नेपालीमा क्रियाका कार्यको असिद्ध र सिद्ध अवस्था जनाउने आधारमा चार प्रकार (अपूर्ण, पूर्ण, अभ्यस्त र अज्ञात)का देखिन्छन् भने मैथिलीमा पक्षको बारेमा छुट्टै चर्चा गरिएको देखिँदैन । नेपालीकै आधारमा मैथिलीको पक्षको तुलना गर्ने प्रयास गरिएको छ । मैथिलीमा अज्ञात र अभ्यस्त पक्ष बोधक क्रिया रूपावली पाइँदैन ।

) दुवै भाषामा तीन किसिमका भाव देखिन्छन्; सामान्यार्थ, विध्यर्थ (इच्छार्थ र आज्ञार्थ) र अनिश्चयार्थ (सम्भावनार्थ र सङ्केतार्थ) । क्रियाको धातुमा विभिन्न भावबोधक रूपायक प्रत्यय लगाएर विभिन्न भावलाई बुझाएको देखिन्छ । नेपालीमा वचनअनुसार छुट्टै रूपायक प्रत्ययको प्रयोग भएको पाइन्छ तर मैथिलीमा यसको अभाव देखिन्छ ।

) वाच्यको चर्चा गर्ने सन्दर्भमा नेपाली तथा मैथिली दुवै भाषामा कर्तृ, कर्म र भाववाच्य गरी तीन किसिमका वाच्य देखिन्छन् । मैथिलीमा फलभागीसँग पनि भाववाच्यको मेल रहेको देखिन्छ । वाच्य मुख्यतः क्रियासित सम्बन्धित भएर व्यक्त भएको देखिन्छ ।

) नामिक पदमा विभिन्न विभक्ति प्रत्ययका माध्यमबाट वाक्यअन्तर्गतका पदहरूको पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित गरी क्रियामा अन्विती हुनु नै कारक देखिन्छ । नेपाली र मैथिली दुवै भाषामा कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध र अधिकरणको तिर्यक् प्रयोग भएको पाइन्छ । दुवै भाषामा सामान्यतः रूप लगाई कारकको बोध गराइएको पाइन्छ । तसर्थ तिर्यक् कारकभिन्न अर्थका आधारमा वर्गीकरण गरिएका कारकलाई राखी तुलनात्मक चर्चा गरिएको छ ।

पाँचौँ परिच्छेदमा उपसंहार तथा निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ । यसअन्तर्गत शोधपत्रमा रहेका प्रत्येक परिच्छेदको परिचय, विश्लेषण र तिनमा पाइएको समानता र व्यतिरेकको सङ्क्षिप्त विवरण दिइएको छ साथै शोधकार्यको उद्देश्यअनुरूपको निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ ।

## ५.२ निष्कर्ष

शोधकार्यको निष्कर्षलाई निम्नलिखित बुँदामा प्रस्तुत गरिएको छ-

- १) मैथिलीमा अन्यपुरुषमा बाहेक अरु पुरुषमा लिङ्गभेद नछुट्टिने देखिन्छ ।
- २) वाक्यात्मक संरचनामा आएका कर्ता र क्रियाले नेपालीमा समान रूपगत अभिलक्षण देखाउन सकेको छ तर मैथिलीमा छैन ।
- ३) नेपालीमा नाम, सर्वनाम, विशेषण र क्रियमा वचनभेद देखिएको छ तर मैथिलीमा नेपालीमा भैं देखिएको छैन, छुट्टै तरिका अपनाएर वचनभेद देखाइएको छ ।
- ४) नेपालीमा वचन भिन्नताका कारण शब्दको रूपमा परिवर्तन आएको देखिन्छ, तर मैथिलीमा देखिँदैन ।
- ५) मैथिलीमा सामाजिक स्तर र उमेरका हदले आदरलाई प्रभावित गर्दछ, जुन मैथिलीको विशेषता देखिन्छ ।
- ६) नेपालीमा सामान्य आदरार्थीमा लिङ्गसङ्गति देखिए भैं मैथिलीमा देखिँदैन ।
- ७) मैथिलीमा कर्ताको श्रेणीअनुसार धातुमा जोडिने कालबोधक रूपायक प्रत्यय र रूप फरक-फरक देखिएका छन् ।
- ८) मैथिलीमा अज्ञात र अभ्यस्त पक्षबोधक क्रियारूपालीको अभाव पाइन्छ ।
- ९) मैथिलीमा मानवीय र मानवेतरको वचनभेद नेपालीभन्दै फरक देखिन्छ ।
- १०) नेपालीमा वचन अनुसार भावबोधक प्रत्यय (रूप) पाइन्छ तर मैथिलीमा यसको अभाव पाइन्छ ।
- ११) मैथिलीमा फलभागीसँग पनि भाववाच्यको मेल देखिन्छ ।
- १२) कर्ता कारकमा विभक्ति चिन्ह नलाग्नु मैथिलीको विशेषता देखिन्छ ।

## सन्दर्भग्रन्थसूची

- अवस्थी, महादेव र शर्मा, ऋषिराम, नेपाली व्यावहारिक व्याकरण र अभिव्यक्ति, दो.सं., काठमाडौं, एकता बुक्स डिष्ट्रिब्युटर्स, २०५५ ।
- अधिकारी, हेमाङ्गराज, समसामयिक नेपाली व्याकरण, तेस्रो संस्करण, विद्यार्थी पुस्तक भण्डार, २०६२ ।
- अधिकारी, हेमाङ्गराज, नेपाली कारक व्याकरण, ने.रा.प्र.प्र., २०५२ ।
- आचार्य, ब्रतराज, आधारभूत नेपाली व्याकरण तथा रचना, काठमाडौं, साभा प्रकाशन, वि.सं. २०५८ ।
- क्रिस्टल, डेभिड, अ डिक्सनरी अफ लिङ्ग्विस्टिक्स एण्ड फोनेटिक्स, पाँचौ संस्करण क्ल्याकवेल पब्लिकेशन, १९८० ।
- गडेरी, सत्यनारायण, 'नेपाली र मैथिली भाषाका पदसङ्गतिको तुलना' (अप्रकाशित शोधपत्र, नेपाली केन्द्रीय विभाग, त्रि. वि., कीर्तिपुर, वि.सं. २०५४)
- ग्रिएर्सन, जर्ज ए., एन इन्ट्रोडक्सन टु द मैथिली ल्याङ्ग्वेज अफ नर्थ बिहार, पार्ट १, ग्रामर, कलकत्ता, एशिएटिक सोसाइटी अफ बङ्गाल, १८८१ ई. ।
- गौतम, देवीप्रसाद, नेपाली भाषा-परिचय, काठमाडौं, साभा प्रकाशन, वि.सं. २०४९ ।
- चापागाँई, नरेन्द्र, शब्दवाक्य र अभिव्यक्ति, काठमाडौं, रत्न पुस्तक भण्डार, २०५१
- चापागाँई, नरेन्द्र, नेपाली नवीन व्याकरण तथा रचना, छै.सं. विराटनगर, श्याम पुस्तक भण्डार, २०४५ ।
- जोशी, सत्यमोहन (सम्पादक), पर्यायवाची शब्दकोश, काठमाडौं, ने.रा.प्र.प्र. वि.सं. २०२६ ।
- ज्याक एट अल, रिचर्डस, डिक्सनरी अफ एप्लाइड लिङ्ग्विस्टिक्स, क्याम्ब्रिज युनिभर्सिटी प्रेस, १९६८ ।
- भा, पं. श्री गोविन्द, उच्चतर मैथिली व्याकरण, मैथिली अकादमी, पटना ई. १९७९ ।

भा, दिनबन्धु, मैथिली भाषा विद्योतन, मैथिली भाषा परिषद्, दरभंगा, सन् १९४६ ।

भा 'व्यथित', डा. वालगोविन्द, आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना, भारती प्रकाशन  
केन्द्र, दरभंगा, तृतीय संस्करण, ई.१९७६ ।

भा, युगेश्वर, मैथिली व्याकरण आओर रचना, भारती भवन, पटना, प्रथम संस्करण ई  
१९७९ ।

तथ्याङ्क गतिविधि, केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग, २३ :३, २०५८/०५९ ।

पण्डित, हेमराज, चन्द्रिका, साभा प्रकाशन (का) १९६९ ।

पराजुली, कृष्णप्रसाद, राम्रो रचना मीठो नेपाली, काठमाडौं, सहयोगी प्रकाशन २०२३

पोखरेल, माधवप्रसाद नेपाली वाक्य व्याकरण, ने. रा. प्र. प्र.कमलादी काठमाडौं,  
२०५४),।

पोखरेल, माधवप्रसाद, नेपाली वाक्य व्याकरण, ने.रा.प्र.प., कमलादी, काठमाडौं (   
२०५४:२०) ।

पोखरेल, माधवप्रसाद, नेपाली भाषाको कारक, मधुपर्क, पूर्णाङ्क २८९, २०५० ।

पोखरेल, बालकृष्ण, राष्ट्रभाषा, काठमाडौं, साभा प्रकाशन, वि.सं. २०२२ ।

पौड्याल, नन्दनकुमार, नेपाली र थारुभाषाका व्याकरणिक कोटिको तुलनात्मक  
अध्ययन, त्रि. वि. शोधपत्र, २०५२ ।

बन्धू, चूडामणि, भाषाविज्ञान, साभा प्रकाशन, २०४८

भट्टराई, रामप्रसाद, प्रवीणता प्रमाण-पत्र तहमा अध्ययन गर्ने विद्यार्थीहरूको व्याकरणिक  
कोटि सम्बन्धी त्रुटि विश्लेषण २०४२ ( शोधपत्र ) ।

भट्टराई, रोहिणीप्रसाद, बृहद् नेपाली व्याकरण, काठमाडौं, ने.रा.प्र.प, २०३३

मिश्रा, ए., मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण, दरभंगा, विद्यापती प्रेस ।

यादव, वाइ. पि., टाइम, टेन्स एन्ड आस्पेक्ट इन इङ्गलिस् एन्ड मैथिली (अनपब्लिस्ड,  
एम. लिट्ट. डिजर्टेशन, सिप्ल, हैदराबाद), ई.१९८० ।

यादव, रामवतार, अ रिफरेन्स ग्रामर अफ मैथिली, मुटोन डि ग्वेटर, बर्लिन, न्यूयॉर्क,  
१९९६ ई. ।

लाईन्स, जोन, इन्ट्रोडक्सन टु थिओरिटिकल लिङ्ग्विस्टिक्स, क्याम्ब्रिज युनिभर्सिटि  
प्रेस, १९६८ ।

श्रेष्ठ, दयाराम र शर्मा, मोहनराज, नेपाली साहित्यको सङ्क्षिप्त इतिहास, पाँचौं  
संस्करण (का.) साभा प्रकाशन, २०५६ ।

शर्मा, सोमनाथ, मध्यचन्द्रिका, नवम् संस्करण, मनोहर प्रेस जतनवर, वाराणसी,  
२०२१ ।

शर्मा, मोहनराज, शब्दरचना र वर्णविन्यास, नवीन प्रकाशन -काठमाडौं), २०५६ ।

शर्मा, दीप्ति, व्याकरणिक कोटियोका विश्लेषणात्मक अध्ययन, पटना (विहार), हिन्दी  
ग्रन्थ अकादमी, सन् १९७५ ।

शर्मा, जनकलाल, हाम्रो समाज एक परिचय, सा.प्र., २०३९ ।

शर्मा सुकुम, नेपाली व्याकरणको प्रारम्भिक इतिहास, निरन्तर पब्लिकेशन (का.),  
२०५८ ।

सिग्दाल, सोमनाथ, मध्यचन्द्रिका, साभा प्रकाशन, २०४८ ।